Mighty River Saraswati Flows

एक अनकही कहानी

सरस्वती सिंधु घाटी सभ्यता

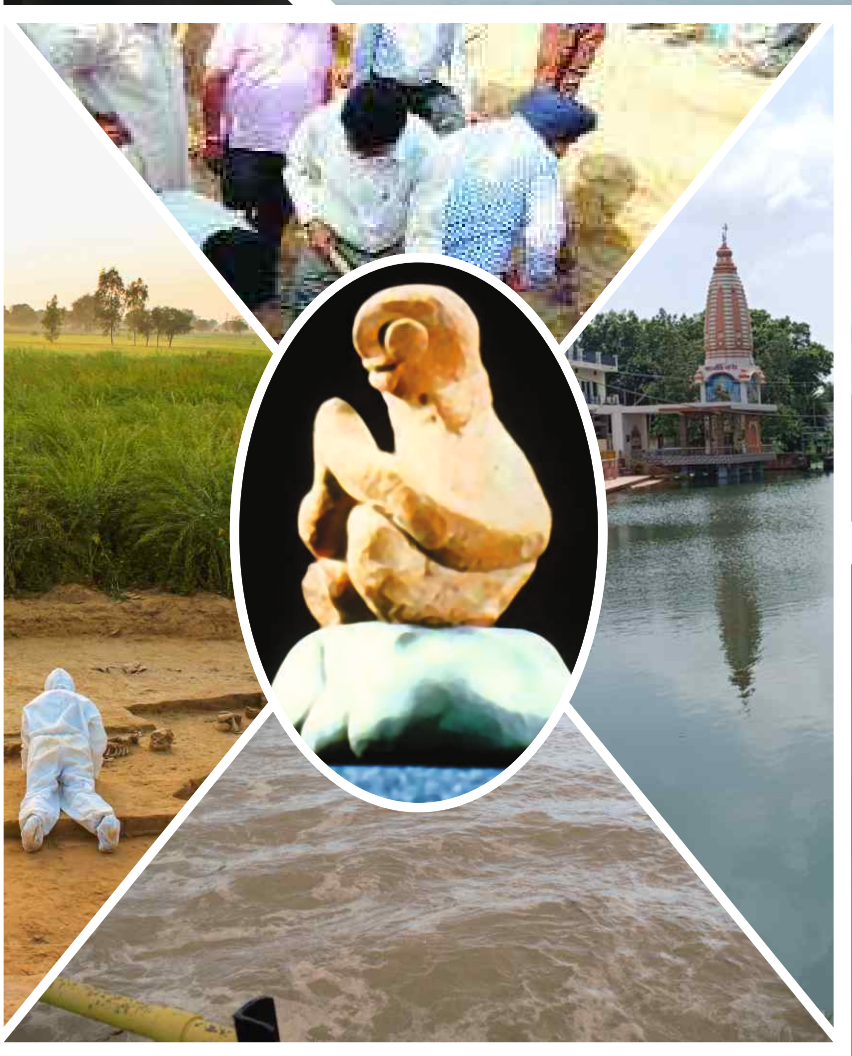

धुमन सिंह किरमच

उपाध्यक्ष,

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड

(हरियाणा सरकार)

‘अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।’

–ऋग्वेद, 2.41.16

(हे सरस्वती! आप माताओं में श्रेष्ठ माता, नदियों में उत्तम
महानदी और देवियों में अग्रगण्य देवी हो।
हे माता! हम अज्ञानी हैं। आप हमें ज्ञान प्रदान करें)

सरस्वती नदी के भागीरथ

Padma Sh. V.S. Wakankar
Archaeologist

Padma Bhushan
Late Sh. Darshan Lal Jain
Socialist

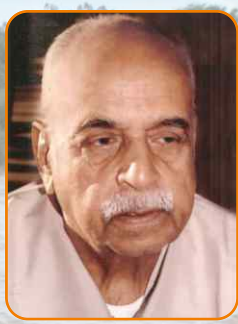

Sh. Manopanth Pingle
Socialist

Dr. B.B. Lal
Archaeologist

Padma Bhushan
Dr. K.S. Valdia
Geologist

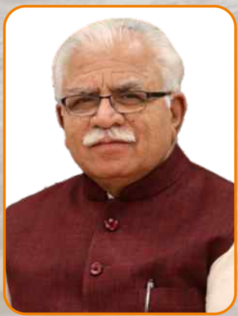

Sh. Manohar Lal Khattar
Centre Minister

Sh. Dhuman Singh Kirmach
Deputy Chairmam,
Sarasvati Board

Sh. Nayab Saini
CM Haryana

नायब सिंह सैनी

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सरस्वती बोर्ड एक काफी टेबल बुक 'सरस्वती सिंधु घाटी संभ्यता' का प्रकाशन करने जा रहा है। हरियाणा की पावन धरती का वर्णन वेदो पुराणो में सहज ही देखने को मिलता है जिसमें सरस्वती सिंधु सभ्यता जो की विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता है का भी वर्णन मिलता है। इसी प्राचीनतम धरोहर एवं उनका संरक्षण करने के संकल्प हेतु सरस्वती बोर्ड का गठन किया गया था। वर्ष 2015 में माननीय पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार श्री मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में सरस्वती नदी धरोहर विकास परियोजना को एक नया आयाम प्राप्त हुआ। सरस्वती बोर्ड के डिप्टी चेयरमैन धुमन सिंह किरमच के नेतृत्व में बहुत अच्छा कार्य कर रहा है।

जिस नदी को लोगों ने खोई हुई नदी मान लिया था उसमें सरस्वती बोर्ड ने पानी चलाकर व लगभग पूरे चैनल को नियमित करके बड़ा कार्य किया जोकि हरियाणा प्रदेश के 6 जिलों यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, कैंथल, जींद, फतेहाबाद एवं सिरसा के किसानों, आमजन व श्रद्धालुओं के लिए बड़ी सौगात है। बोर्ड अपने निरंतर खोज एवं दूरगामी प्रयासो से सरस्वती नदी को धरा पर पुनर्जीवित करने एवं भूजल पुनर्भरण करने के कार्य में अग्रणी भूमिका निभाने में सफल रहा है।

वर्तमान में श्रद्धालुओं की श्रद्धा सरस्वती के प्रति पहले की तुलना में अत्यधिक हुई है। भारत देश की प्राचीनतम सभ्यता सरस्वती नदी के किनारे ही विकसित हुई थी और सरस्वती बोर्ड ने इसी चैनल पर पानी बहाकर जल के पुनर्भरण के साथ–साथ लोगों के मन में सरस्वती के प्रति आस्था को और भी जागृत कर दिया है जो की एक पुण्य का कार्य है। जिसके लिए सरस्वती बोर्ड की पूरी टीम को अपनी ओर से साधुवाद देता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशन के लिए अपनी अनंत शुभकामनाएं देता हूँ।

(नायब सिंह सैनी)

मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार

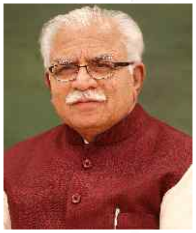

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 11-10-2023

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा बोर्ड की विशेषताओं को आमजन तक पहुंचाने के लिए "सरस्वती सिन्धु सभ्यता" नामक एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हरियाणा की पावन धरा को आदि सृष्टि की जन्म–स्थली और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। यहां पर युगों–युगों से ऋषि–मुनियों का वास रहा है, जिन्होंने सरस्वती नदी के तट पर वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों की रचना की थी। यहीं पर भगवान वाल्मिकी, महर्षि मारकण्डेय, वेद व्यास जैसे ऋषि मुनियों ने तपस्या कर अपनी शिक्षाओं के माध्यम से जनकल्याण का संदेश दिया था जो आज भी प्रासंगिक है।

हमारी सरकार के प्रयासों से ही देश की सबसे पवित्र सरस्वती नदी की जल धारा को धरातल पर लाने का कार्य संभव हो पाया। उपग्रहों से प्राप्त चित्रों ने सरस्वती के उद्‌गम स्थल की पुष्टि की है।

इस पुस्तक के माध्मय से विलुप्त हो चुकी सरस्वती नदी और उसकी विरासत के पुनर्जीवन से पाठकों को परिचित करवाने का एक सुखद प्रयास है।

मैं "सरस्वती सिन्धु सभ्यता" कॉफी टेबल बुक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(मनोहर लाल)

स्व. दर्शन लाल जैन

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

पद्मभूषण माननीय श्री दर्शन लाल जैन जी, अध्यक्ष, सरस्वती नदी शोध संस्थान, जगाधरी, यमुनानगर द्वारा हरियाणा सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री, माननीय मनोहर लाल खट्टर जी के नेतृत्व में सरस्वती नदी के ऊपर अभूतपूर्व शोध कार्य सम्पन्न कराए गए। वैज्ञानिकों ने भी खोज द्वारा यह साबित किया कि सरस्वती का उद्गम स्थल आदि बद्री है। सरस्वती नदी आदि बद्री से कुरुक्षेत्र–पिहोवा, हिसार से होते हुए राजस्थान से रन के कच्छ में जाती है। उन द्वारा अपना पूरा जीवन सरस्वती नदी से सम्बन्धित कार्यों को समर्पित था। दिनांक 08 फरवरी 2021 को माननीय श्री दर्शन लाल जैन जी इस सांसारिक यात्रा को पूर्ण कर श्री प्रभु के चरणों में समा गए।

माननीय श्री दर्शन लाल जैन जी आज भी जनमानस के हृदय में अपने कार्यों, विचारों के लिए हमेशा याद किए जाएँगे तथा सरस्वती बोर्ड उनके द्वारा दिए गए योगदान के लिए सदैव आभारी रहेगा। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

धुमन सिंह किरमच

उपाध्यक्ष,

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड

संदेश

श्रीमती श्रुति चौधरी

मैं हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड को इस शाश्वत सरस्वती नदी पर इस भव्य कॉफी टेबल पुस्तक की कल्पना करने और प्रकाशित करने के लिए हार्दिक बधाई एवं गहन कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रही हूँ। यह केवल एक पुस्तक नहीं है यह भारत की आत्मा का एक दीप्तिमान श्रद्धांजलि है, हमारी सभ्यतागत निरंतरता का उत्सव जो सहस्राब्दियों तक फैली हुई है। सरस्वती, जो कभी सिंधु-सरस्वती सभ्यता की शक्तिशाली जीवन रेखा थी और ऋग्वेद में नदीतमा-नदियों में सर्वश्रेष्ठ के रूप में स्तुत है, इस पुस्तक के पृष्ठों के माध्यम से लुभावने दृश्यों, विद्वत्तापूर्ण गहराई और आध्यात्मिक अनुनाद के साथ पुनर्जीवित हो उठी है। आदि बद्री के हिमाच्छादित शिवालिक से लेकर थार के सुनहरे रेत तक, प्रत्येक चित्र और कथा भारत की स्वदेशी प्रतिभा को शहरी नियोजन, जल प्रबंधन और सांस्कृतिक सामंजस्य में पुनःस्थापित करती है।

यह प्रकाशन हमारे सरकार के 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' दृष्टिकोण के तहत हमारी पवित्र विरासत को पुनःप्राप्त करने, पुनर्स्थापित करने और पुनर्जीवित करने की अटूट प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली प्रमाण है, जबकि अत्याधुनिक विज्ञान का उपयोग किया जा रहा है। सरस्वती का पुनरुद्धार केवल एक इंजीनियरिंग उपलब्धि नहीं है यह एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण है, एक जल वैज्ञानिक पुनरुत्थान है, और विश्व को यह संदेश है कि भारत की प्राचीन बुद्धि आधुनिक स्थिरता की कुंजी रखती है। मैं बोर्ड, इसके दूरदर्शी नेतृत्व और प्रत्येक वैज्ञानिक, पुरातत्वविद् तथा कारीगर की समर्पण भावना की सराहना करता हूँ, जिन्होंने इसे संभव बनाया है। यह पुस्तक लाखों लोगों को सरस्वती के पथ पर चलने शरीर और आत्मा दोनों में प्रेरित करे और संनातन संस्कृति में निहित विकसित भारत के निर्माण के लिए हमारे सामूहिक संकल्प को मजबूत करे।

श्रीमती श्रुति चौधरी, मंत्री
सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग

कुमार सुप्रवीन

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड एक **Magazine/Coffee Table Book** प्रकाशित करने जा रहा है। सरस्वती नदी का पुनरोद्धार चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है – वेदों में सरस्वती, धरातल पर सरस्वती, वैज्ञानिक अनुसंधान में सरस्वती और सरस्वती की कायाकल्प (स्वच्छ जल और सरस्वती जलस्तर का विस्तार)।

आज भी वैज्ञानिक सरस्वती नदी की उत्पत्ति और लुप्त होने की संभावना को तलाश रहे हैं। इस कड़ी में हमारा यह प्रयास है कि सरस्वती नदी के जल–ग्रहण क्षेत्र (Basin) से सहायक नदियों का पूर्ण जल और स्वच्छ जल का इस महान नदी में सतत् बहाव हो। सरस्वती बोर्ड इस महान कार्य में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है सरस्वती नदी की समृद्धि और महत्त्व के प्रति जनमानस को जागरूक करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

पुस्तक के प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं।

कुमार सुप्रवीन
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड

आभार

धुमन सिंह किरमच

सरस्वती नदी धरोहर परियोजना का मूल उद्देश्य इसकी विरासतों के परिरक्षण, पुनरूद्धार एवं सरस्वती नदी से सम्बन्धित अनुसंधान गतिविधियों को प्रोत्साहन देना है। वर्ष 2015 में माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी के नेतृत्व में इस परियोजना को और भी विकास के पंख लगे जब इस परियोजना के कुशल संचालन हेतु **'हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड'** का गठन किया गया।

पुस्तक के प्रकाशन में सरस्वती नदी से सम्बन्धित पौराणिक, आध्यात्मिक एवं इसके प्राचीन साहित्य को उजागर करने का तथा **'सरस्वती नदी एक मिथक है'** इस किंवदंती को मिटाने का पूर्ण प्रयास मेरी इस पुस्तक में किया गया है। अभी तक हमने आदिबद्री से ओटू Head तक 400 कि.मी. में सफलतापूर्वक पानी चलाया है जिसमें आदिबद्री व बिलासपुर के बीच से 12 कि.मी. को छोड़कर उससे आगे कैथल जिला से पंजाब के सागरा गांव तक जहाँ घग्घर सरस्वती में मिलती है और उससे आगे ओटू Head तक करीब 400 कि.मी. में पानी चलाया है जोकि बोर्ड की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

पुस्तक के प्रकाशन में कई विद्वानों/प्रबुद्धजनों का सहयोग प्राप्त हुआ है जिसके लिए मैं सहृदय से सभी का आभारी हूँ। पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन में रह गई त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। पुस्तक के प्रकाशन की सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

धुमन सिंह किरमच

अनुक्रमणिका

सरस्वती के किनारे पैलियो चैनल पर स्थित मन्दिर, तालाब, घाट, बावड़ी, आश्रम व पुरातात्विक स्थल

भाग–1 पुरातात्विक नजरिये से सरस्वती सभ्यताओं का वर्णन

- आदिबद्री
- ग्लेशियर
- संधाय
- कपालमोचन
- मुगलवाली
- छिल्लौर
- रामपुर हेरिया, रामपुर कामबियान और छिल्लौर
- कन्दोली
- संघोर
- भगवानपुरा
- मरचेहड़ी सरस्वती सरोवर
- रामपुरा सरस्वती सरोवर
- टाटका गांव
- बोहली सरस्वती सरोवर
- सरस्वती नदी कुरूक्षेत्र में पटड़ी बनाने का कार्य आरम्भ
- वर्ल्ड बैंक के अधिकारियों का सरस्वती नदी पर निरीक्षण
- सिंचाई आयुक्त, श्री अनुराग अग्रवाल सरस्वती जलाशय पुनर्भरण प्रणाली का दौरा किया
- केन्द्रीय जल आयोग (CWC) की निदेशक श्रीमती आकांशा सरस्वती नदी पर बने सरोवरों का निरीक्षण करते हुए
- पिपली रिवर फ्रंट
- पिपली रिवर फ्रंट पर माता सरस्वती मन्दिर के निर्माण का शुभारम्भ
- अमरगढ़ माजड़ा रिजर्वायर
- कुरुक्षेत्र राजपत्र
- बीबीपुर झील
- स्योंसर का जंगल
- गोघ गांव
- अज़ीमगढ़ गांव

भाग–2 सरस्वती वैज्ञानिकों की नजर में

- ईशरगढ़ बावड़ी
- अष्टकोषी परिक्रमा
- ब्रह्म सरोवर
- सन्निहित सरोवर
- भद्रकाली मन्दिर
- कुलोत्तारण तीर्थ
- पुरातात्विक हर्ष का टीला
- ज्योतिसर
- अरूणाय संगम
- पृथूदक तीर्थ, पिहोवा
- गालव ऋषि मन्दिर, गुलडेहरा
- ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत
- पोलड़ तीर्थ
- पिशोल तीर्थ
- सागरा गांव
- पुरातात्विक स्थल
- विश्वामित्र का टीला
- बालू
- कपिलमुनी तीर्थ कलायत
- बनावली
- भिरडाना
- कुणाल
- मिताथल
- राखीगढ़ी
- कालीबंगा
- मोहनजोदड़ो
- हड़प्पा
- लोथल
- धोलावीरा
- राजस्थान और गुजरात दौरे पर ली गई कुछ छायाचित्र
- हरियाणा प्रदेश प्रभारी व राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ सतीश पुनिया जी को अपने निवास स्थान पर शिष्टाचार भेंट प्रेषित की।
- अलेक्जेंडर कनिंघम, सी. एस. आई.
- राजस्व रिकॉर्ड में सरस्वती नदी
- ओएनजीसी एम.ओ.यू. (जी एस आई)
- बी.के. भद्रा जी
- स्वदेशी व विदेशी विचारकों, लेखकों एवं इसरो की नजर में सरस्वती
- यमुनानगर व पिहोवा के पास बीबीपुर गांव में
- सरस्वती नदी का सुन्दर दृश्य
- मन्दिर
- लाडवा में निर्मित घाटों का मनमोहक दृश्य
- राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक जी.एस.आई. की निदेशक डॉ दीपाली कपूर सरस्वती नदी का निरीक्षण करते हुए
- पिहोवा में सरस्वती रिवर फ्रंट की नींव रखी
- यमुनानगर में सरस्वती मिल्क माजरा रिवर फ्रंट की नींव रखी
- पिहोवा में सरस्वती स्वच्छता अभियान
- गुरु ग्रंथ साहब में सरस्वती नदी का वर्णन
- पाठ्यक्रम में सरस्वती-सिन्धु सभ्यता
- सरस्वती पाठ्यक्रम की रूपरेखा
- सरस्वती सिन्धु घाटी सभ्यता का अध्याय एन.सी.ई.आर.टी. छठी कक्षा में

- वेदों, पुराणों व महाभारत में सरस्वती नदी का वर्णन
- जल प्रहरी सम्मान समारोह
- अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव
- अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती सम्मेलन
- गीता महोत्सव
- सूरजकुंड मेला
- वैदिक सरस्वती नदी ''जलाशय''
  (Sarasvati Conclave)
- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी.एस. आई.) के द्वारा दिया गया सारांश
- सरस्वती : प्राचीन कुरुक्षेत्र संक्षिप्त परिचय
- ''सरस्वती सिन्धु घाटी सभ्यता'' का विमोचन
- त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री, श्री विप्लब देव जी ने सरस्वती नदी क्षेत्र का किया दौरा
- कुरूक्षेत्र में 'एक थी नदी सरस्वती' नामक राष्ट्रीय सम्मेलन
- पिहोवा में प्राची तीर्थ पर स्नान करते श्रद्धालु
- पिपली ब्लॉक के कौलापुर गाँव में सरस्वती नदी के किनारे बना थ्री पौंड सिस्टम
- बोडला रिजर्वायर
- खिड़कीवीरा गांव
- आदिबद्री से माता मंत्रा देवी तक हिमाचल के क्षेत्र में रास्ता बनवाया
- सरस्वती नदी के किनारे अवैध कब्जों बंद करवाया
- लिंडा नाला का पुनरुद्धार
- सरस्वती मन्दिर अजात आश्रम
- बुबका हैड
- राक्षी नदी पर लाड़वा में तीन करोड़ में बनने वाली 2200 फुट ट्रफ का शुभारंभ करवाया
- सरस्वती नदी की शाखा चौतंग
- गुजरात में सिद्धपुर पाटन जिला
- सरस्वती नदी और शाहबाद फीडर के मिलन
- झिंवरेहडी गाँव
- बेन्थन नाला
- पीपली से लेकर ज्योतिसर सरस्वती नदी को दोनों तरफ से पक्का करने का शुभारंभ किया
- थानेसर समानांतर नाला
- प्रदूषण नियंत्रण
- सीवरेज उपचार संयंत्र (एसटीपी)
- साइनेज बोर्डों की स्थापना
- नरकातारी सरस्वती, बाण गंगा व हनुमान जी का मन्दिर
- भगवान श्री कृष्ण की गीता उपदेश स्थली
- पिहोवा में सरस्वती नदी के तट पर स्थापित पृथूदक तीर्थ
- सोथा गांव
- हंस डहर तीर्थ
- सी.एस.एम.आर.एस. टीम द्वारा आदि बद्री में बैराज का परीक्षण किया गया
- सी.ई.आर.एस.आर., कुरूक्षेत्र
- सरस्वती बोर्ड के द्वारा प्राचीन सरस्वती सिंधु सभ्यता के वर्णन हेतु मैप माई इण्डियाँ से एक प्राचीन मैप तैयार करवाया गया।
- लूनी नदी सरस्वती नदी के पैलियों-चैनल पर स्थित
- हर्षवर्धन का साम्राज्य
- जनता के सहयोग से स्वच्छता अभियान निरन्तर जारी
- ब्रहम सरोवर महाआरती शुरू की
- सरस्वती तीर्थ पिहोवा पर प्राचीनकाल से चली आ रही सरस्वती परिक्रमा की शुरूआत की
- यमुनानगर, कुरूक्षेत्र व कैथल में 62 बन्द पडे कुओं को खुलवाया
- वैदिक सरस्वती नदी का पुनर्जीवन
- सरस्वती बोर्ड के प्रयासों से राजस्थान सरकार के द्वारा सरस्वती नदी प्रोजैक्ट के लिए एक समिति का गठन किया गया
- यमुनानगर बिलासपुर से लेकर सिरसा औटू हैड तक 400 कि.मी. में चल रहा सरस्वती नदी का पानी
- लाडवा हल्का के मंगोली गांव में जल संरक्षण कार्यक्रम
- राष्ट्रीय नदी संगम
- राष्ट्रीय नदी परिषद द्वारा दिया गया राष्ट्रीय पुरस्कार
- ब्रह्मसरोवर आरती

प्रस्तावना

सरस्वती बह रही है

'अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।'

(ऋग्वेद, 2.41.16)

(हे सरस्वती! आप माताओं में श्रेष्ठ माता, नदियों में उत्तम महानदी और देवियों में अग्रगण्य देवी हो। हे माता! हम अज्ञानी हैं। आप हमें ज्ञान प्रदान करें)

ऋग्वेद का यह मंत्र सरस्वती नदी के बारे में सम्पूर्ण वर्णन करता है।

विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हमारे चार वेद यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और ऋग्वेद हैं। इन सब में सरस्वती का वर्णन आता है। ऋग्वेद में 72 बार सरस्वती का नाम आता है। तीन ऐसे मंत्र आते हैं जो सरस्वती को देवी बताते हैं। वेदों के अनुसार सरस्वती भारत की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण संसार की पवित्र नदी थी। हमारे धार्मिक ग्रंथों, उपनिषदों, वेदों, पुराणों में व वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर सरस्वती नदी का वर्णन भिन्न-भिन्न प्रकार से किया गया है। इन सभी का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है।

विश्व के प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती नदी यमुना नदी के पूर्व की ओर तथा सतलुज के पश्चिम की ओर बहती थी। महाभारत काल में सरस्वती नदी को देवी की भांति वर्णित किया गया है। ऋषियों- मुनियों ने वेदों की रचना सरस्वती नदी के तट पर ही की थी। इस बात का वर्णन विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। सर्वप्रथम उत्तर भारत के हरियाणा प्रदेश के पौराणिक स्थल श्री आदिबद्री में सरस्वती के उदग्म स्थल होने की पुष्टि की गई और यहां वास्तविक रूप में सरस्वती के उदग्म स्थल के प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त हुए। यह स्थल वर्तमान में श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है।

सरस्वती नदी शोध कार्य में इसरो, ओएनजीसी, सीडब्ल्यूसी, जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, जी.एस.

आई., सी.एस.आर., आरकेलोजी सर्वे ऑफ इंडिया, सी.जी.डब्ल्यू. बोर्ड, रिजिनल रिमोट सेंसिंग, टूरिज्म डिपार्टमेंट हरियाणा, वाटर एंड एयर पॉल्यूशन बोर्ड, हरियाणा डिपार्टमेंट ऑफ इरीगेशन, हरियाणा, जूलोजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, बैंगलोर, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई, ऑयल नेचुरल गैस कमीशन, (ओ.एन.सी.सी.) जूलॉजी कल्चर ऑफ इंडिया, वेस्ट रीजन, जयपुर, राजस्थान, सरस्वती सर्विस सेंटर, चेन्नई, सरस्वती नदी शोध संस्थान, जगाधरी, हरियाणा स्टेट रिमोट सैन्सिंग, चेन्नई, सारीनल रिमोट सैन्सिंग सेंटर, जोधपुर, राजस्थान, स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, अहमदाबाद ने योगदान दिया है।

मैं इस पुस्तक में वर्णन करूंगा कि किन–किन लोगों ने सरस्वती के ऊपर संकलन व शोध किया। इनमें श्री वी. एस. वाकणकर, डॉक्टर मोरोपंत पिंगले, डॉ० सतीश मित्तल, अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति की पूरी टीम व श्री दर्शन लाल जी जैन का विशेष योगदान जिन्होंने सरस्वती नदी शोध संस्थान बनाया इस अभूतपूर्व कार्य को यहा तक लेकर आए। श्रद्धेय मनोहर लाल जी, पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा जिन्होंने दर्शन लाल जैन जी के प्रयासों से सरस्वती नदी के पुनः जल प्रवाह हेतू सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड का गठन कर सरस्वती नदी में जल का निरन्तर प्रवाह करवाया और उपरोक्त वर्णित महानुभावों के प्रयासों से सरस्वती आज हरियाणा में बह रही है जब वर्ष 2014 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार केंद्र और हरियाणा राज्य में पूर्ण बहुमत प्राप्त करके सत्ता में आई तब फिर से सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस दिशा में सकारात्मक सोच एवं दृढ़ इच्छाशक्ति को लेकर हरियाणा के यशस्वी पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी ने वर्ष 2015 में सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए सरस्वती बोर्ड का गठन किया तथा बोर्ड के गठन से लेकर वर्तमान समय तक सरस्वती को एक बार फिर से धरती पर लाने के लिए अनेक प्रयास किए गए। जिसके परिणामस्वरूप आज सरस्वती नदी धरती के पटल पर आदिबद्री के बिलासपुर से लेकर सिरसा औटू हैड़ तक 400 कि.मी. के क्षेत्र में बह रही है। आज वह सपना साकार होते दिख रहा है जिसे कदाचित संभव मानना सरल नहीं था। सरस्वती नदी रूप में न केवल करोड़ों भारतीयों की आस्था एवं श्रद्धा का प्रतीक है अपितु सरस्वती नदी के आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले उन सभी किसानों के लिए वरदान साबित हुई है जिनका नदी के कल–कल बहते पानी से सीधा सरोकार है। जब से सरस्वती नदी में जल प्रवाह प्रारंभ हुआ है तब से नदी के समीप स्थित क्षेत्रों का जलस्तर बढ़ने लगा है। पिछले दो सीजन से यमुनानगर, कुरुक्षेत्र व कैथल के वह क्षेत्र जो सरस्वती नदी के दस किलोमीटर तक के दायरे में आते है, वहां पिछले कई वर्षों की अपेक्षा जलस्तर में बढ़ोतरी हुई हैं जो आम जनमानस के लिए किसी शुभ संकेत से कम नहीं है। इस वक्त सरस्वती नदी में पानी बहने लगा है जिसकी वजह से किसानों के चेहरे खिले हुए हैं। वस्तुतः देखने में आया है कि सढ़ोरा, बिलासपुर, रादौर, लाड़वा, थानेसर, पिहोवा, गुहला, कैथल, जींद, फतेहाबाद और सिरसा के वह क्षेत्र जो कृषि की दृष्टि से डार्क जोन में चले गए थे, अब यह क्षेत्र वर्तमान में सरस्वती नदी के धरातल प्रवाह के चलते धीरे–धीरे डार्क जोन से बाहर आ रहे हैं, जिसका

प्रमाण स्वयं स्थानीय लोगों से बात करके प्राप्त हुआ है।

यदि सरस्वती नदी के दिशा एवं बहाव की बात करें तो आदिबद्री के उदग्म स्थल से लेकर हरियाणा-पंजाब के बॉर्डर कैथल जिला के अंतिम गाँव सागरा से पारा व घग्गर नदियों के साथ मिलकर आगे बहने वाली सरस्वती फतेहाबाद, सिरसा के ओटू हैड तक पहुंचती है। सरस्वती नदी के किनारे आदिबद्री से कैथल जिले तक 128 गाँव व 22 घाट स्थित हैं तथा भगवान शिव व सरस्वती के 75 प्राचीन मंदिर और 26 शमशान घाट भी सरस्वती के तट पर स्थित हैं। घाटों का निर्माण हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड ने करवाया है। सरस्वती नदी के किनारे घाटों, मन्दिरों व शमशान घाटों का पाया जाना अपने आप में सरस्वती नदी के बहने का प्रमाण है।

सरस्वती नदी के उदग्म स्थल श्री आदिबद्री में प्राचीन शिव मंदिर भी है जहां भगवान केदारनाथ जी, भगवान बद्रीविशाल जी, माता मंत्रा देवी विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने आदिबद्री में सरस्वती नदी के तट पर तपस्या की और उनकी तपस्या स्थली का नाम व्यासपुरी से अपभ्रंश होकर बिलासपुर हो गया। श्रृंगी ऋषि ने संघोर गांव में सरस्वती नदी के किनारे तप किया था, जिनकी समाधि आज भी गांव में स्थापित है। पुरातात्विक स्थल भगवानपुरा भी सरस्वती नदी के तट पर ही स्थित है। ब्रह्मसरोवर व सन्निहित सरोवर को भी सरस्वती की धारा से जल दिया जाता था। जिसका साक्ष्य यह है कि सरस्वती की धारा इन सरोवरों के पास से गुजर रही है। ऋषि विश्वामित्र एवं ऋषि वशिष्ठ ने सरस्वती के किनारे तपस्या की थी, जिनकी समाधियां सरस्वती किनारे पिहोवा में स्थापित हैं। शास्त्रों के अनुसार गुल डेरा गाँव में गालव ऋषि ने तपस्या की जिसके नाम से ही गाँव का नाम पड़ा। इसके अलावा कैथल जिला के पोलड़ गाँव में भी बहुत प्राचीन सरस्वती मंदिर स्थित है जहां सरस्वती बोर्ड एक रिवरफ्रंट भी विकसित करने जा रहा है। दरअसल यमुना बिल्कुल हरियाणा और उत्तर प्रदेश के बॉर्डर से होकर निकल जाती है किन्तु सरस्वती नदी लगभग 7-8 जिले को मिलाती हुई निकलती है जो आने वाले समय में इस क्षेत्र के लिए जीवन रेखा साबित होगी। जिस प्रकार से सरस्वती नदी पहले 5 से 6 हजार वर्ष पूर्व इस क्षेत्र के लोगों की जीवन रेखा थी उसी तरह वर्तमान में भी सरस्वती नदी उसी तर्ज पर बहने लगेगी।

प्राचीन सभी सभ्यताएं एवं संस्कृतियां सरस्वती के किनारे पर ही विकसित हुईं। सिंधु सभ्यता वास्तव में सिंधु सभ्यता न होकर सरस्वती सिंधु सभ्यता थी। वस्तुतः इसरो के द्वारा दी गई पहली तस्वीर तथा पैलियो चैनल उत्तराखंड, हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात होते हुए जितने भी चैनल दिए हैं वह उसी स्थान पर हैं जहां से सरस्वती हड़प्पा और प्राचीन काल में बहती रही। इसी कारण आज भी इन्हीं पैलियो चैनल में दिखाया गया है कि सरस्वती नदी आज भी धरती के नीचे बह रही है ।

विश्व की प्राचीन सरस्वती सिंधु सभ्यता का प्रमाण इसी से मिलता है कि जो भी पुरातत्व विभाग के स्थल हैं या आरकियोलॉजिकल एवं सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा घोषित हैं वे ज्यादातर स्थल सरस्वती नदी के किनारे पर हैं जिनमें

आदिबद्री, संघोर, भगवानपुरा, हर्ष का टीला, कुरुक्षेत्र, जोगना खेडा, बालू, कलायत, राखीगढ़ी, कुणाल, भिरड़ाना यह सब हरियाणा में स्थित हैं। सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित कुणाल व राखीगढ़ी 10 हजार वर्ष पुरानी संस्कृति थी जिसका प्रमाण वहां पर मिले पुराने धातु व मिट्टी के बने हुए बर्तन व मूर्तियों से हैं। इसके अलावा राजस्थान में कालीबंगा सरस्वती के किनारे स्थित है। यदि कुछ अन्य पहलुओं पर ध्यान दें तो मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, जो पाकिस्तान में चले गए हैं, इन दोनों शहरों की जीवन रेखा भी सरस्वती नदी ही थी। यह राखीगढ़ी व कुणाल के समकक्ष की पुरानी संस्कृति होगी ऐसा इतिहासकार मानते हैं।

यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी व श्री मनोहर लाल, पूर्व मुख्यमंत्री व मौजूदा मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी की संस्कृति संरक्षण विचारधारा का परिणाम है कि यह पुनीत कार्य संभव हो पाया है। उद्गम स्थल से लेकर गुजरात तक बहुत सी साइट्स ऐसी हैं जिनमें खुदाई का कार्य चल रहा है। यदि हर्ष का टीला कुरुक्षेत्र में पुनः खुदाई का काम शुरू किया जाए तो निरंतर सरस्वती के बारे में बड़ी जानकारियां प्राप्त होंगी क्योंकि हर्ष का टीला और कुरुक्षेत्र में स्थापित शक्ति पीठ माता भद्रकाली मंदिर सरस्वती के बिल्कुल किनारे पर स्थित है। सरस्वती नदी परियोजना को वास्तविक स्वरूप देने के लिए हरियाणा सरकार का प्रयास जारी है इसके लिए हाल ही में हिमाचल सरकार के साथ एक एमओयू (MOU) पर हस्ताक्षर भी किए गए, जिसके तहत सरस्वती की एक शाखा सोम नदी पर एक डैम बनाया जायेगा तथा एक बैराज भी बनाया जा रहा है, यह सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए पूरे विश्व में एक अनूठा उदाहरण है।

सरस्वती नदी का पूरा मार्ग कच्चा होने की वजह से जितना भी पानी हमें मिलता है उसकी वजह से सरस्वती नदी के आसपास के क्षेत्र का जलस्तर बढ़ता है। सरस्वती नदी का न केवल भूतल कच्चा है अपितु दोनों तरफ की दीवारें भी कच्ची हैं जिससे पानी का तुरंत पुनर्भरण हो जाता है।

इसके अलावा सरस्वती के आस-पास बड़े-बड़े सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। जिनमें बिलासपुर के रामपुर हेरिया, रामपुर कोम्बियान् व छिलोर तीनों गाँव की 350 एकड़ जमीन में सरोवर विकसित किया जा रहा है। कुरुक्षेत्र के बोहली, टाटकी, रामपुरा, मरचेहड़ी, संघोर गाँव में सरोवर बनकर तैयार हो गया है। 2023 के बरसाती सीजन में करोड़ों लीटर पानी इस क्षेत्र में रिचार्ज हुआ व बाढ़ से भी लोगों को छुटकारा मिला। इस क्षेत्र के लिए यह नदी वरदान साबित हो रही है। जनता के लिए सरस्वती बहुत बड़ी आस्था का केंद्र है। पहले सरस्वती में घाट व जल आचमन करने की जगह नहीं होती थीं अब सरस्वती बोर्ड हर गाँव में एक घाट का निर्माण करने जा रहा है। कई घाटों का कार्य प्रगति पर है ताकि लोगों को पूजा-पाठ करने में दिक्कत ना आए। सरस्वती नदी केवल एक नदी नहीं है यह देश के करोड़ों लोगों की आस्था का भी प्रतीक है।

आदिबद्री उद्गम स्थल से लेकर घग्गर व पारा नदी के (पंजाब के सागरा गांव में) मिलन तक 200 किलोमीटर की हरियाणा सरकार द्वारा मंजूर की गई सरस्वती की मार्ग शिखा है जिस पर आज भी सरस्वती नदी बहती नजर आती है और उससे आगे घग्गर के साथ मिलकर फतेहाबाद सिरसा औटू हैड तक जिसकी कुल दूरी 400 किलोमीटर है। सरस्वती बोर्ड ने इसमें बिलासपुर के ऊपर के कुछ क्षेत्र को छोड़ कर बाकी कैथल से होते हुए सिरसा औटू हैड़ तक 400 किलोमीटर में पानी चलाया है जो आज भी निरन्तर बह रहा है। बीच-बीच में सरस्वती की कई शाखायें, नदियां व नाले आकर इसमें मिलती हैं जिनमे रूलाहेडी शाखा, चौतंग नदी, दावा नदी, पिंजौरा ड्रेन, दौलतपुर ड्रेन, फतेहपुर ड्रेन, शाहबाद फीडर, खान्ड नाला, बैटन नाला, मारकंडा नदी, टांगरी नदी पारा व घग्गर नदियां शामिल हैं। ये सभी नदिया व नाले भी सरस्वती नदी के पानी का स्त्रोत माने जाते है।

नदियों के बाढ़ से बचाव में सरस्वती नदी मॉडल है सफल हरियाणा पंजाब राजस्थान को अपनाना होगा सरस्वती नदी के फार्मूले से होगा सभी नादियों के बाढ़ के पानी का समाधान सरस्वती बोर्ड के चेयरमैन सीएम नायब सैनी के नेतृत्व में डिप्टी चेयरमैन धूमन सिंह किरमच ने सरस्वती नदी पर बने सरोवरों का पेश किया उनूठा उदाहरण। यही मॉडल अब सोमनदी, चौतग, राक्षी, टांगरी, मारकंडा व घग्गर नदियों पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी जी के नेतृत्व में बड़े-बड़े रिजर्वायर स्थापित किए जाएंगे क्योंकि सरस्वती नदी के किनारे स्थित रिजर्वायर बन रहे किसानो के लिए वरदान, इनकी वजह से किसानों को मिल रहा लाभ और खेती के लिए जो क्षेत्र डार्क जोन में जा रहा था अब वह वापिस ग्रे जोन में आ रहा है। धूमन सिंह ने बताया कि सरस्वती नदी के किनारे बने रिजर्वायरो की तरह अब हरियाणा में सभी नदियों के किनारे बड़े-बड़े रिजर्वायर स्थापित करने होंगे ताकि पानी के बहाव को रोका जाए और बाढ़ के पानी को रोका जाए इसका उदाहरण दिया है सरस्वती बोर्ड ने अभी तक हरियाणा प्रदेश में नदियों के किनारे रिजर्वायर का चलन नहीं था लेकिन यह नजीर पेश की है सरस्वती बोर्ड ने जो अभी तक सरस्वती नदी के किनारे करीब 15 सरोवर स्थापित किए जा चुके है जिसका अब परिणाम सामने आ रहे हैं जिसका नतीजा ये है कि इन रिजर्वायरो की वजह से सरस्वती नदी के किनारे करीब 10 किलोमीटर के क्षेत्र में वॉटर लेवल बढ़ गया है और यमुना नगर, कुरुक्षेत्र, कैथल फतेहाबाद व सिरसा तक के इलाके में जल स्तर बढ़ने से किसानों को काफी राहत मिली है। वैदिक काल और उसके बाद हड़प्पा काल में नदियों के किनारे बड़े-बड़े सरोवर स्थापित करने की प्रथा हमेशा से रही है सरस्वती नदी खुद भी सरस्वती यानी के सरस सरोवर का ही स्वरूप है। हरियाणा में आर्कियोलॉजिकल साइट सरस्वती नदी के किनारे हैं जिसमें मुख्यता भगवानपूरा, थानेसर में स्थानेश्वर, कुणाल व राखीगढ़ी इन सभी के बाहर बड़े-बड़े सरोवर स्थापित किए गए थे तथा गुजरात के धोलावीरा हड़प्पा मे जब खुदाई की गई तो इनमें भी बड़े-बड़े सरोवर स्थापित किये हुए पाए गए हैं। इनका उद्देश्य है बरसात के दिनों में पानी को रोकना और पानी को बरसात के बाद इस्तेमाल करना होता था जो अब सरस्वती बोर्ड ने हरियाणा में सरस्वती नदी के किनारे करके दिखाया है। हरियाणा सरस्वती बोर्ड हरियाणा

के मुख्यमंत्री नायब सैनी जी के नेतृत्व में सरस्वती बोर्ड सरस्वती नदी के किनारे जहाँ भी जितनी जगह मिली तो उन पर सरस्वती सरोवर स्थापित किए जा रहे हैं और अभी तक 15 सरोवर बना भी दिये है जिनमें यमुनानगर जिला के बिलासपुर ब्लॉक में छिल्लौर, रामपुर हेरिया, रामपुर काम्बियान में 350 एकड़ में सरोवर बढ़ाने का कार्य चल रहा है उसी के आगे सरस्वती बोर्ड ने रुहलाहेड़ी नदी के पास 5 व मुगलावली में 4 एकड़, संघोर गांवों में 15 एकड़, कंदोली गांवों में 12 एकड़, रामपुरा में 7 एकड़, मरचेहड़ी में 7 एकड़, भगवानपुरा में 5 एकड़, टाटका में 3 एकड़, बोहली में 12 एकड़, 2 एकड़ में अमरगढ़ मझाड़ा गांवों में व अब लगभग 1 हजार एकड़ में बीबीपुर झील में, 70 एकड़ में सियोन्सर जंगल पिहोवा में सरस्वती बोर्ड सरस्वती रिजर्वायर बनाने पर काम कर रहा है। जिसका सीधा फायदा किसानो को होगा और बाढ़ से निजात मिलेगी। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य बरसात के पानी को अपने क्षेत्र में रोकना और उसके बाद बरसात के बाद इस पानी से किसानों को सिंचाई करना और बाद में सरस्वती नदी में इस्तेमाल करना। जितने उपरोक्त सरोवर सरस्वती बोर्ड ने बनाए है उनकी वजह से यमुनगर, कुरुक्षेत्र व कैथल आसपास क्षेत्र के दस किलोमीटर के क्षेत्र में वॉटर लेवल बढ़ गया है जिससे किसान खुश है। सरस्वती बोर्ड आगे भी इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है और मुख्यमंत्री नायब सैनी जी ने इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के आदेश दिए हैं हाल ही में वल्ड़ बैंक के अधिकारियों ने भी सरस्वती नदी के साथ बोहली सरोवर का भ्रमण किया तो पाया कि बहुत ज्यादा पानी रिचार्ज इस क्षेत्र में हो रहा है और इस प्रोजेक्ट को पूरा समर्थन मिला।

यह लेखन कार्य पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी व कला संस्कृति मंत्री श्री कंवल पाल गुर्जर जी के सहयोग से सम्भव हुआ है। इस कार्य में भरपूर सहयोग देने के लिए मैं विजयेंद्र सिंह, आई. ए. एस., डॉ० बी.के. भद्रा, वैज्ञानिक, इसरो, डॉ० ए.के. गुप्ता, वैज्ञानिक, इसरो, प्रो. ए. आर. चौधरी, निदेशक **CERSR** कुरुक्षेत्र, डॉ० प्रीतम सिंह सहायक निदेशक डॉ० भीम राव अम्बेडकर स्टडी सैंटर कुरुक्षेत्र, डॉ० रामेन्द्र सिंह, निदेशक विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र, डॉ० बनानी भट्टाचार्य, उपनिदेशक पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, हरियाणा, श्री रामपाल, प्रधानाचार्य, डॉ० दिनेश यादव, प्रवक्ता इतिहास, प्रोफेसर तनु मलिक, एन.सी.ई.आर.टी., अरविन्द कौशिक, एस.ई., डॉ. वीरेन्द्र सिंह चौहान, उपाध्यक्ष, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, नीरज जैन, मुकेश जैन, सदस्य भूमि आयोग, नितिन भट्ट, एक्स.ई.एन., मनीष बब्बर, एक्स.ई.एन., सुरजीत सिंह, फाइनेंस ऑफिसर, डॉ० राजेश कुमार प्रवक्ता इतिहास व हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड से डॉ० दीपा नथालिया जी, घनश्याम गौतम जी, कैलाश चन्द्र भट्ट एवं राजेश कुमार टाईपिस्ट का हृदय से आभारी हूँ।

लेखक

धुमन सिंह किरमच

उपाध्यक्ष,

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड, पंचकूला

मोबाईल : 9416111033

ई-मेल : dhumankirmach@gmail.com

भाग – 1

H E President of India Bharat Ratna Dr. A.P.J. Abdul Kalam's Endorsement in Visitor's Book during his visit to 'SARASVATI EXHIBITION' at Ch. Devi Lal Herbal Park, Chuharpur (Distt. Yamuna Nagar) on 19-04-2003 arranged by Sarasvati Nadi Shodh Sansthan (Haryana), Jagadhri

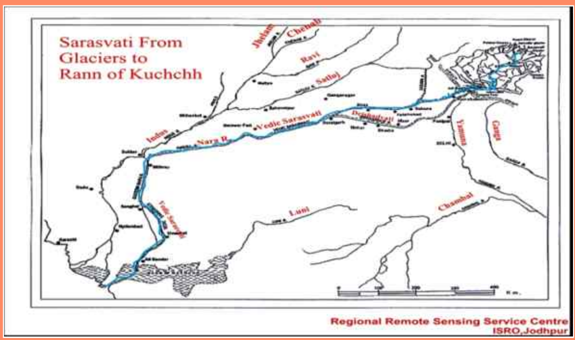

Sarasvati from Glaciers to Rann of Kutch

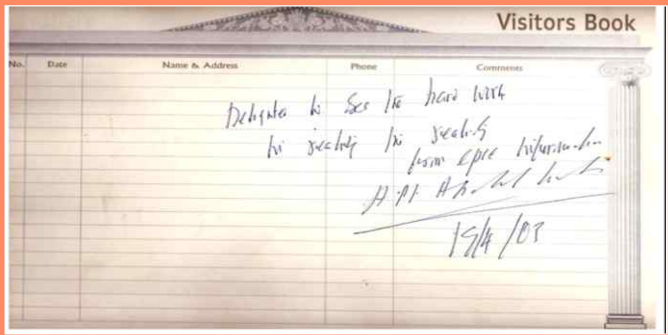

"Delighted to see the hard work in realising the reality from epic information"

Sarasvati Sarovar at Adi Badri (Yamuna Nagar)

Sarasvati Udgam Sathal at Adi Badri (Yamuna Nagar)

'अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ।।

—ऋग्वेद, 2.41.16

आदि बद्री उद्गम स्थल :

आदि बद्री उद्गम स्थल जहाँ से आज भी सरस्वती का जल शिवालिक की पहाड़ियों से अपने आप बहता है। यह जल नीचे सरोवर में जाकर तथा फिर नीचे सोम्ब नदी में मिलकर, सरोवर तथा सोम्ब नदी दोनों **(कुण्ड एवं सोम्ब नदी क्षेत्र)** को पवित्र करता है। हर रोज यहाँ सैंकड़ों तीर्थ यात्री आते हैं और सरस्वती मां के दर्शन करते हैं। स्थल का निर्माण श्रद्धेय पद्म श्री दर्शन लाल जैन जी व पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी के प्रयासों से किया गया है।

आदि बद्री (सरस्वती उद्गम स्थल):

यह स्थान पौराणिक व वैदिक महत्त्व रखने वाली सरस्वती नदी का उद्गम स्थल है। भारतीय पुरातत्व विभाग तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो), ओएनजीसी, सीडब्ल्यूसी, जियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, जीएसआई, सी एस एम आर, आरकेलोजी विभाग हरियाणा सभी एजेंसीज आदिबद्री को ही सरस्वती का उद्गम स्थल मानते हैं जो सरस्वती के पैलियो चैनल पर स्थित है। इस क्षेत्र के आस-पास खुदाई में मिले हड़प्पाकालीन अवशेष तथा दूरसंवेदी उपग्रहों द्वारा ली गई तस्वीरें आदिबद्री में स्थित एक संग्रहालय में रखी गई हैं। पुरातत्वविद् के अनुसार, 'आदि बद्री से प्रारंभ होकर सरस्वती नदी राजस्थान से होते हुए गुजरात के कच्छ के रण में गिरती थी।'

पुरातत्वविद् व इतिहासकार मानते हैं कि हड़प्पा व इससे भी प्राचीन सभ्यता सरस्वती और सिन्धु नदियों के तटों पर ही स्थित थी। तभी इस सभ्यता का नाम सरस्वती सिंधु सभ्यता माना जाता है।

आदि बद्री में आदिकाल से ही भगवान केदारनाथ जी, भगवान बद्रीविशाल जी व माता मंत्रा देवी के मंदिर विराजमान हैं। शास्त्रों की मानें तो भगवान केदारनाथ जी व भगवान बद्री विशाल जी उत्तराखंड में जाने से पहले आदि बद्री आए थे और यह केंद्र आज बहुत बड़ा आस्था का केंद्र है।

आदिबद्री में स्थित बाबा केदारनाथ जी

बद्री विशाल जी का प्राचीन मन्दिर

यह स्थल सरस्वती नदी की एक शाखा सोम नदी के ऊपर विराजमान है। यहां पर आदिकाल से ही भगवान बद्री विशाल जी व भगवान केदारनाथ जी मिले हैं। यहां पर स्थित शिवलिंग की आयु करीब 4000 से 5000 वर्ष पुरानी मानी जाती है। जब पुरातत्वविद इस क्षेत्र की खुदाई कर रहे थे, तब यह प्राचीन शिवलिंग मिला था।

माता मन्त्रा देवी

यहाँ पर माता मंत्रा देवी का मंदिर वर्षों से स्थापित है। शास्त्रों के अनुसार माना जाता है कि त्रेता और द्वापर युग में भी बाबा यहां विशाल रूप में रहते थे। बाद में वह उत्तराखंड चले गए और यही मान्यता आम लोगों की धारणा भी है कि बाबा बद्री विशाल जी व बाबा केदारनाथ जी उत्तराखंड में जाने से पहले इस स्थान पर आए थे।

इसरो द्वारा चित्रित सरस्वती मार्ग व पेलियों चैनल का नक्सा

इसरो के उपग्रह से सरस्वती नदी के पैलियो–चैनल को खोज कर दिखाया गया है जो कि सरस्वती नदी की उसी धारा पर है जहाँ पर सरस्वती नदी आज भी उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में कायम है। इसी क्षेत्र से सरस्वती नदी बहती रही है यह प्रमाण इसरो, ओ.एन.जी.सी. पुरातत्व विभाग व कई अन्य राष्ट्रीय एजेंसियां व वेद, पुराण, उपनिषद् तथा धरातल व धरातल के नीचे बहती हुई सरस्वती नदी सामने है। जो नीली रेखा इस चित्र में दिखाई दे रही है इसी ट्रैक पर विभिन्न पुरातात्विक स्थल दिखाई देते हैं जिनमें आदि बद्री, संधाय, भगवानपुरा, बोहली, कुरुक्षेत्र, भगवान श्री कृष्ण की गीता उपदेश स्थली ज्योतिसर, भौरसैयदा, अरुणाय संगम, पृथुदक तीर्थ सरस्वती तीर्थ पिहोवा, पोलड़, पिसोल घाट, कुणाल, बनावली, राखीगढ़ी, भिरड़ाना, राजस्थान में कालीबंगा, पाकिस्तान में मोहनजोदड़ो व हड़प्पा, फिर हिंदुस्तान में गुजरात के लोथल, धोलावीरा व अन्य ऐतिहासिक स्थल इसी चैनल पर प्राचीनतम सभ्यता का जीता जागता उदाहरण है यानी हड़प्पाकालीन व इससे पहले काल के मुख्य स्थल इसी चैनल पर स्थित हैं। इसी सरस्वती नदी के बहाव क्षेत्र के कारण ही उपरोक्त सभ्यताए फली फूली और तभी से इन सभ्यतओं को सरस्वती सिन्धु सभ्यता कहा गया।

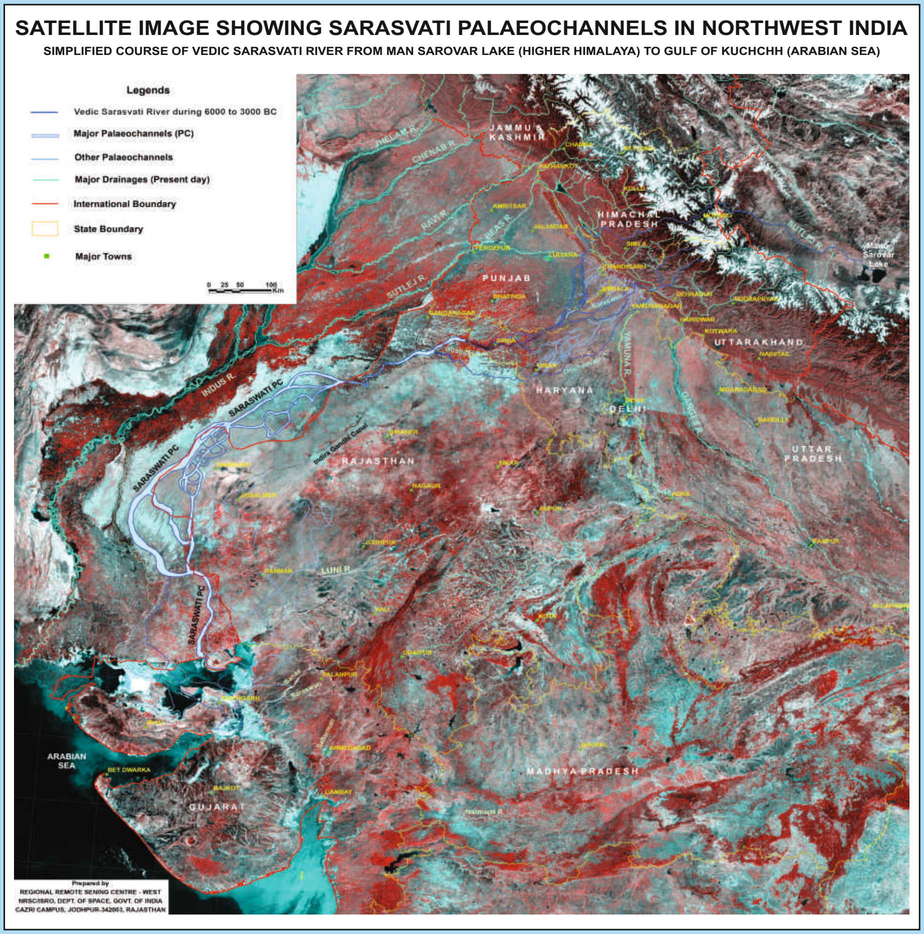

SATELLITE IMAGE SHOWING SARASVATI PALAEOCHANNELS IN NORTHWEST INDIA
SIMPLIFIED COURSE OF VEDIC SARASVATI RIVER FROM MAN SAROVAR LAKE (HIGHER HIMALAYA) TO GULF OF KUCHCHH (ARABIAN SEA)

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड ने पूर्व माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी के नेतृत्व में सरस्वती महोत्सव का आयोजन 2017 से आरम्भ किया जोकि आदिबद्री सरस्वती उद्गम स्थल से मंत्रोचारण से सम्पन्न हुआ और आज भी बोर्ड प्रत्येक वर्ष यह महोत्सव बसन्त पंचमी के अवसर पर मनाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव का उद्घाटन 18 जनवरी 2018 को यमुनानगर के आदिबद्री सरस्वती उद्गम स्थल में विशिष्ट अतिथि पूर्व माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा, श्री मनोहर लाल जी, माननीय मंत्री श्री नितिन गडकरी, जल संसाधन, गंगा जीर्णोद्धार, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री, भारत सरकार, श्री कंवर पाल, अध्यक्ष, हरियाणा विधानसभा, श्री राजीव बिन्दल, अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश, विधान सभा, श्री नायब सिंह सैनी, श्रम एवं रोजगार मंत्री, हरियाणा, श्री इन्द्रेश कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय कार्यकारिणी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अध्यक्षता में आदिबद्री में स्थापित सरस्वती कुंड में हवन व मंगलाचार से हुआ तथा सरस्वती सरोवर में उन्होंने 432 नदियों का जल प्रवाह किया।

सरस्वती उद्गम स्थल पर केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी, केन्द्रीय मंत्री श्री रतन लाल कटारिया जी व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री सुभाष बराला जी पूजा अर्चना करते हुए।

“पुरातत्व विभाग द्वारा आज तक जितने भी सरस्वती नदी के किनारे स्थलों का उत्खनन किया है वह सरस्वती सिंधु सभ्यता के होने का प्रमाण कहते हैं। आदिबद्री में स्थापित म्यूजियम, संध्या का प्राचीन किला, भगवानपुर की खुदाई, जोगना खेड़ा की खुदाई, बनावली, कुणाल, राखीगढ़ी, कालीबंगा, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, धोलावीरा, लोथल आदि इस तरह से जितने भी पुरातात्विक स्थल हैं यह सभी सरस्वती के किनारे पर स्थापित हैं। हरियाणा के उपरोक्त स्थलों का वर्णन पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, हरियाणा की उपनिदेशक डॉ. बनानी भट्टाचार्य के मार्गदर्शन में किया गया है।”

आदिबद्री में सरस्वती उद्गम स्थल पर स्थापित सरस्वती सरोवर वहाँ की सुन्दरता व पवित्रता का वर्णन करता है यहाँ पर दूर-दूर से लोग जल आचमन व पवित्र सरस्वती जल में डुबकी लगाने के लिए आते हैं यहाँ पर हर साल सरस्वती महोत्सव मनाया जाता है तथा हवन कुण्डों के द्वारा सरस्वती की पूजा बसन्त पंचमी के अवसर पर की जाती है। इससे पहले आदि शंकराचार्य जी, श्री नितिन गडकरी जी, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी व 2021 में त्रिनिदाद टोबैगो के उच्चायुक्त डॉ. रोज्जर गोपाल, श्री नायब सिंह सैनी, सांसद व अन्य विशिष्ट अतिथि भी शामिल हुए थे।

बन्दरपूंछ ग्लेशियर

हिमालय के हिमनद सरस्वती, गंगा–यमुना का उद्गम स्थल माना जाता है। बन्दरपूंछ ग्लेशियर भी इसी हिमनद का हिस्सा है। हिमालय के हिमनद से तात्पर्य उन हिमनदों से है जो हिमालय पर्वत श्रेणी पर पाए जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों के बाद हिमालय पर सबसे ज्यादा बर्फ पाई जाती है और हिमालय के हिमनद लगभग 40,000 वर्ग कि०मी० क्षेत्र पर फैले हैं और इनकी संख्या लगभग 10,000 है। इनमें से ज्यादातर हिमनद सर्क हिमनद हैं। इसरो के द्वारा दिए गए पैलियो चैनल यह दर्शाते हैं कि सरस्वती नदी हिमालय के बन्दरपूंछ ग्लेशियर से होते हुए निकलती थी लेकिन भूगर्भ विभाग अनुसार हजारों साल पहले भूगर्भीय टेक्टोनिक घटनाओं के कारण सरस्वती का थल का क्षेत्र ऊपर उठ गया तथा यमुना और गंगा का थल क्षेत्र नीचे रह गया और सरस्वती का जल यमुना और कई नदियों व गंगा की ओर एक धारा के रूप में चला गया, ऐसा वर्णन वैज्ञानिकों ने भी अपने–अपने लेखन में सबूत दिया है।

डॉ. दीपा नथालिया
अनुसंधान अधिकारी

देश के महान सन्तो व विभुतियों के द्वारा आदि बद्री के दर्शन व जल आचगन के साथ पूजा अर्चना की।

पूज्य शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज सरस्वती सरोवर पर स्नानोत्तर 'ध्यान-मग्न' मुद्रा में।

सरस्वती उद्गम स्थल पर माननीय अशोक सिंघल जी पूजन करते हुए

सरस्वती सरोवर पंचनद जल स्थापना महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानानन्द जी द्वारा

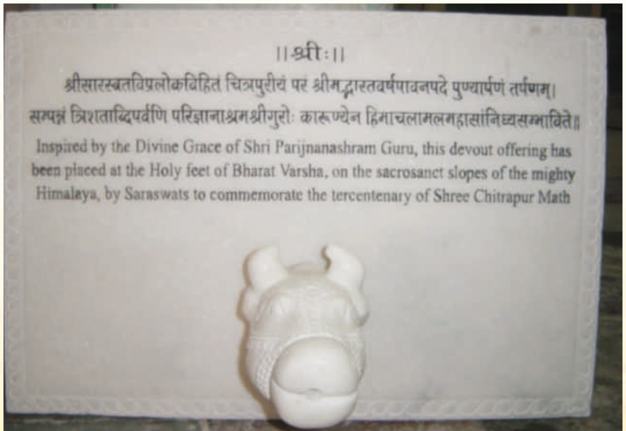

सरस्वती उद्गम स्थल आदि बद्री (हरियाणा) पर गोमुख

महामहिम राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
सरस्वती प्रदर्शनी में विभिन्न विद्वानों के साथ

आदि बद्री में उत्खनन करने वाले सदस्य व अन्य वैज्ञानिक

वैज्ञानिकों का एक दल आदि बद्री की पहाड़ियों पर

सरस्वती के जल से कटा हुआ पर्वत, नदी व मन्दिर

भोर सहिदा में इस रेत से सरस्वती के बहने का प्रमाण मिला। पहली बार इस रेत के सैम्पल 2007 में माननीय दर्शन लाल जैन जी व क्यूरेटर राजेश पुरोहित द्वारा लिए गए थे।

सरस्वती नदी खुदाई का दृश्य, भोर सहिदा (कुरुक्षेत्र)

सरस्वती नदी में परत दर परत खुदाई का दृश्य, भोर सहिदा (कुरुक्षेत्र)

बलराम मन्दिर, धौलरा गांव (यमुना नगर)

श्री कृष्ण जी के बड़े भाई बलराम जी जिन्होंने महाभारत के युद्ध में भाग न लेकर सरस्वती नदी की यात्रा की जो द्वारका से लेकर आदि बद्री तक थी, उनका मन्दिर आज भी सरस्वती नदी के नजदीक रादौर ब्लॉक के धौलरा गांव में स्थित है।

आदिबद्री में स्थित गुरुकुल पाठशाला

श्री आदिबद्री ऋषिकुलम विद्यापीठ का संचालन प्राचीन समय से चलाया जाता है श्री आदिबद्री के महंत श्री पुरुषोत्तम आश्रम जी ने सन् 1887 में गुरु शिष्य परंपरा परिपाटी को आगे बढ़ाने हेतु गुरुकुल पाठशाला का विस्तार किया जो आज भी निरंतर चल रहा है। सन् 2014 में माननीय विधानसभा अध्यक्ष श्री कंवरपाल गुर्जर जी ने गुरुकुल की शिक्षा को आगे बढ़ाने हेतु कार्य किए। सन् 2019 में श्री कंवरपाल गुर्जर जी शिक्षा मंत्री बने और ऋषिकुल में पधारे व कहा कि वैदिक ज्ञान के साथ आधुनिक ज्ञान को भी ऋषिकुल में पढ़ाया जाए। उन्होंने वैदिक सनातन ज्ञान सभी जाति व वर्गों को देने की प्रेरणा दी। निजी सहयोग से ऋषिकुल के विद्यार्थियों को पुस्तकों के साथ कम्प्यूटर भी प्रदान किए। आज 34 विद्यार्थी निःशुल्क आवासीय शिक्षा ग्रहण करते हैं यहाँ हरियाणा, हिमाचल, बिहार, उत्तर प्रदेश, नेपाल के बालक शिक्षा ग्रहण करते हैं। सरस्वती बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री धुमन सिंह किरमिच जी के मार्गदर्शन में ऋषिकुल सरस्वती नदी के महत्त्व का जनमानस में प्रचार-प्रसार कर रहा है, नित्य सरस्वती माता की आरती होती है। यह आपके मार्गदर्शन से ही सम्भव हो पा रहा है। इस गुरुकुल के संचालक आचार्य विनय स्वरूप जी द्वारा प्रस्तुत जानकारी।

सरस्वती डैम निर्माण हेतु हिमाचल सरकार के साथ MoU

सरस्वती नदी व हिमाचल से होते हुए बहने वाली सरस्वती की शाखा सोम नदी को लेकर हिमाचल व हरियाणा सरकार के बीच माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल व हिमाचल मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर के मध्य एक समझौता हुआ, जिसमें प्रधान सचिव हरियाणा व प्रधान सचिव हिमाचल माननीय श्री कंवर पाल जी, माननीय मंत्री, हरियाणा सरकार व श्री ज्ञानचन्द जी, स्पीकर विधानसभा, हरियाणा व आई.ए.एस. श्री विजयेंद्र कुमार जी का विशेष योगदान रहा। दोनों सरकारों की प्रेरणा से एक एम.ओ.यू. तैयार किया गया, जिसमें सरस्वती नदी के जीर्णोद्धार व धरोहर विकास परियोजना के तहत निम्न कार्य प्रस्तावित है :–

सोमनदी पर हिमाचल के क्षेत्र में एक डैम व आदि बद्री में एक बैराज निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा एक जलाशय भी बनाया जाएगा जिसके लिए गांव रामपुर हेरिया, रामपुर कोमबियान और छिल्लौर गांव की लगभग 356 एकड़ पंचायती भूमि को रेखांकित कर लिया गया है। यह परियोजना 2026 से पहले सम्पूर्ण करने की योजना पर सरस्वती बोर्ड़ व दोनों सरकारे मिलकर काम कर रही है।

सौजन्य
अरविन्द कौशिक, अधिक्षक अभियन्ता
हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड

पुरातात्विक विभाग
हरियाणा की निदेशक
डॉ. बनानी भट्टाचार्य
व पुरातत्व विभाग द्वारा
सरस्वती नदी के
किनारे स्थित
''सरस्वती सिन्धु सभ्यता''
के सभी पुरातात्विक
स्थलों के बारे में
द्वारा दी गई जानकारी के
अनुसार आगे विस्तार से
वर्णन किया गया है।
यह वर्णन आदिबद्री
से लेकर हरियाणा,
राजस्थान व गजुरात तक
के सभी पुरातात्विक व
स्थलों का सार है।

संधाय

खुदाई के दौरान मिले प्राचीनकाल के सिक्के का चित्र

सरस्वती नदी के किनारे स्थित बिलासपुर के गांव संधाय में राजा संध के टीले के नजदीक प्राचीन सिक्के, मिट्टी के बर्तन मिले है। ये सैकड़ों साल पुराने है जिससे भारतीय संस्कृति के बारे में अहम जानकारी मिल सकती है। गांव संधाय निवासी एक किसान को यहाँ सिक्के व अन्य बहुत सारा सामान मिला था। बाद में उन्होंने यह सामान व सिक्के बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री धुमन सिंह किरमच व पुरातत्व विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ को यह पता करने के लिए सौंप दिए कि यह कौन से समय के हैं।

आरम्भ से ही गांव संधाय के पास से ही सरस्वती नदी गुजरती थी। जिस टीले के पास यह सिक्के व अन्य सामान मिला है, उसकी खुदाई की प्रक्रिया जल्दी ही प्रारम्भ कराने का प्रयास बोर्ड द्वारा किया जाएगा। पुरातत्त्व विभाग की निदेशक डॉ. बनानी भट्टाचार्य ने भी इस स्थल का दौरा किया।

पवित्र कपाल मोचन तीर्थ

कपाल मोचन, यमुनानगर जिले के बिलासपुर रोड पर, जगाधरी शहर से 17 किमी उत्तर–पूर्व में स्थित है। हिंदुओं और सिखों दोनों के लिए तीर्थ यात्रा का एक प्राचीन स्थान है। इसे गोपाल मोचन और सोमसर मोचन भी कहा जाता है। इस तीर्थ पर हरियाणा, पंजाब व हिमाचल के श्रद्धालु लाखों की संख्या में आते है इस तीर्थ में स्नान करने से व्यक्ति हर पाप से मुक्त हो जाता है। यह तीर्थ यमुना नगर जिले के निकट बिलासपुर के पास स्थित है, जो बिलासपुर ''व्यास पुरी'' के अपभ्रंश रूप से जाना जाता है। यहाँ वेद व्यास ऋषि का आश्रम था जहां उन्होंने सरस्वती नदी के तट पर महाभारत ग्रंथ लिखा था और यह आदि बद्री के पास स्थित है जहाँ सरस्वती नदी हिमालय को छोड़कर मैदानों में प्रवेश करती है।

सरस्वती नदी के किनारे स्थित कपालमोचन के प्रसिद्ध घाट पर मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी व पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी व शिक्षा मंत्री कंवर पाल जी, विधायक घनश्याम जी अन्य अतिथिगण के साथ जल आचमन करते हुए।

मुगलवाली

यमुनानगर जिले में महर्षि वेद व्यास जी की तपस्थली व्यासपुरी से 14 किलोमीटर दूर व आदिबद्री से 5 किलोमीटर आगे सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित है। मुगलवाली गांव में सरस्वती नदी की पवित्र जलधारा 06-05-2015 को अपने आप फूट पड़ी, जहां आज भी श्रद्धालु जाते हैं। बोर्ड द्वारा वहां पर एक घाट का निर्माण करवाया जाना है। ओ.एन.जी.सी. के द्वारा वहां पर एक 500 फीट गहरा ट्यूबवैल खुदवाया गया है और अब बोर्ड ने वहाँ पर एक सरस्वती सरोवर 4 एकड़ में बनाया गया जिसमें करीब 9 करोड़ लि. पानी रिचार्ज होगा।

सरस्वती नदी की ट्रिब्युटरी रूलाहेड़ी के साथ छिल्लौर गांव में करीब 5 एकड़ में सरस्वती सरोवर (रिजर्वायर) बनाया जिसकी रिचार्जिंग **Capacity** 45737 लि. है।

रामपुर हेरिया, रामपुर कामबियान और छिल्लौर तीन गांव के 350 एकड़ में सरस्वती सरोवर पर खुदाई का कार्य आरम्भ किया गया जो तेजी से चल रहा है। बरसात के मौसम में 100 करोड़ लि. से ज्यादा पानी रिचार्ज होने की संभावना है।

कन्दोली गाँव में सरस्वती बोर्ड को करीब 15 एकड़ जमीन सरस्वती नदी के किनारे मिली जिसकी निशानदेही करवाकर सरोवर बनवाने का काम आरम्भ किया।

लाडवा हल्का के बाबैन ब्लॉक में कन्दोली गांव में सरस्वती नदी के किनारे सरस्वती बोर्ड के द्वारा निशानदेही करवाई गई जिसमें 113 कनाल 10 मरले जगह सरस्वती नदी के नाम मिली अब सरस्वती बोर्ड यहाँ पर एक सरोवर / रिजर्वायर बनाने जा रहा है।

निशानदेही करते हुए बोर्ड के अधिकारी

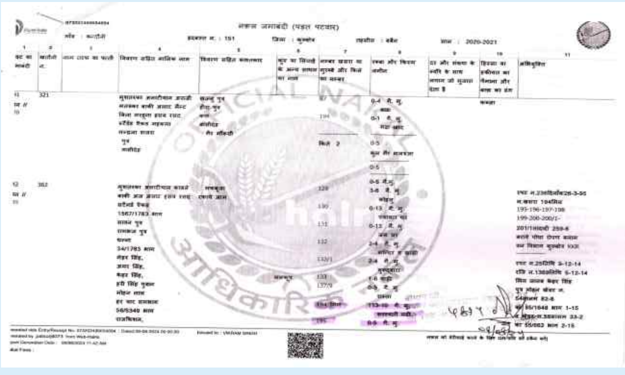
नकल जमाबंदी (पड़त पटवार)

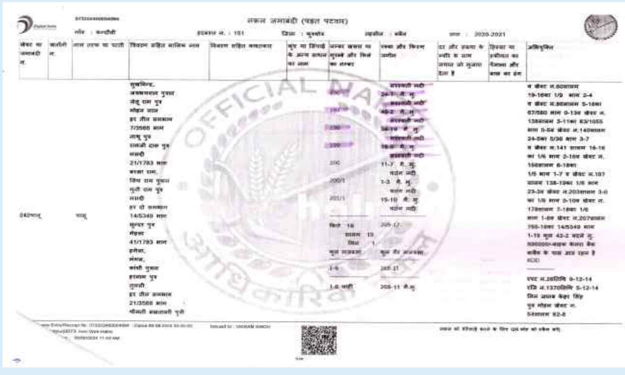
नकल जमाबंदी (पड़त पटवार)

गांव संघोर में सरस्वती सरोवर 10 एकड में बनाया और 20 करोड़ लि. से ज्यादा पानी रिचार्ज हुआ

रिजरवायर में प्रत्यक्ष रूप से रिचार्ज होता पानी

सरस्वती किनारे स्थित व पैलियो चैनलों पर स्थित मन्दिर, घाट, बावड़ी व आश्रम (संघोर)

संघोर गांव में श्रृंगी ऋषि की यह स्थल सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित है। इन ग्रन्थों के अनुसार श्रृंगी ऋषि ने यहाँ पर सरस्वती नदी के किनारे तपस्या की थी। यहाँ पर एक प्राचीन शिव मन्दिर भी स्थित हैं। सरस्वती बोर्ड ने यहाँ पर एक सरोवर व घाट का निर्माण व मन्दिर में भी कुछ कार्य करवाए हैं

Shringi Rishichar, Village Sanghor

Sanghor Ghat

विभिन्न ग्रन्थों अनुसार यह समाधि संघोर गांव में श्रृंगी ऋषि की है,
जिन्होंने सरस्वती नदी के किनारे इसी स्थान पर बैठ कर तपस्या की थी।

भगवानपुरा, कुरुक्षेत्र

भगवानपुरा पुरातात्विक सभ्यता स्थल सरस्वती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ एक 5 एकड़ के करीब सरस्वती सरोवर बनाया गया है जो पानी को रिचार्ज व खेतों को बाढ़ से बचाएगा इसकी **Capacity** 7 करोड़ लि. पानी रिचार्जिंग की है।

भगवानपुरा में खुदाई का दृश्य व वहाँ पर बनाया गया नया सरस्वती सरोवर

Bhagwanpura Ghat

मरचेहड़ी सरस्वती सरोवर की मुख्य विशेषताएं

Area of Pond	123445 Sft or 56 Acre
Average depth of pond	12ft
Average Depth of water	7ft
Water storage capacity of pond	244.52 lakh liters per annum
In 2023 pond filled 3 times with average depth more than 12 ft (489.04 lakh litre)	
It was a deposit work of Haryana Sarasvati Heritage Development Board executed before monsoon season 2023 and cost of str was Rs 7.8 lakh	

Outlet at Marchehri Sarasvati Sarovar

After Filled Marchehri Sarasvati Sarovar

Inlet Structure at Sarasvati River, Marchehri

Before Filled Marchehri Sarasvati Sarovar

रामपुरा सरस्वती सरोवर की मुख्य विशेषताएं

Area of Pond	About 7 Acre
Average depth of pond	18ft
Average Depth of water	14ft
Water storage capacity of pond	408.49 lakh litres
In 2023 pond filled 3 times with average depth more than 14 ft (816.98 lakh litre)	
It was a deposit work of Haryana Sarasvati Heritage Development Board executed before monsoon season 2023 and cost of structure was Rs 7.1lakh	

बेंगलुरु से इसरो के वैज्ञानिक डॉ. ए के गुप्ता व उनकी टीम ने किया बोहली व मरचैहेडी गाँव के जलाशयों का निरीक्षण, सरस्वती बोर्ड के कार्यो को सराहा और कहा की इससे बहुत पानी की रिचार्जिग हुई।

गांव टाटका में सरस्वती सरोवर 2.5 एकड में बनाया और 3 करोड़ लि. से ज्यादा पानी रिचार्ज हुआ

बोहली सरस्वती सरोवर की मुख्य विशेषताएं

Area of Pond	**194277.6sft (10 acre)**
Average depth of pond	**18ft**
Average Depth of water	**15ft**
Water storage capacity of pond	**439.84 lakh litre per annum**
In 2023 pond filled 3 times with average depth more than 13 ft (more than 879.68 lakhs litre)	
It was a deposit work of Haryana Sarasvati Heritage Development Board executed before monsoon season 2023 and cost of structure was Rs 9.5lakh	

सरस्वती नदी के दोनों तरफ के किनारों को ऊँचा चांदना से लेकर पिपली तक करीब 65 कि.मी. में मजबूत किया जा रहा है जिससे नदी के दोनों तरफ पटड़ी बनाने व नदी को मजबूत किया जाए।

At RD 123000 bridge villager bhargat

15:54 25 06 25
23MM F/1.9 1/14815 ISO50

वर्ल्ड बैंक की टीम ने सरस्वती नदी व रिवर रिचार्जिंग सिस्टम का किया दौरा

आज वर्ल्ड बैंक के लिड वॉटर रिसोर्स मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट डॉ जूप स्टाउटजिस्टिक और डॉक्टर बोगचन बेलनी स्पेशलिस्ट प्रिंसिपल इरीगेशन और ड्रेनेज सिस्टम और भूजल विभाग के अधिकारियों ने सरस्वती रिचार्जिंग सिस्टम को गांव बोहली व ईशरगढ़ में देखा और डिप्टी चेयरमैन धूमन सिंह किरमच ने बताया कि इस सरस्वती नदी के ऊपर हमने 11 रिजर्ववायर स्थापित किए हैं जिनकी वजह से अब इस क्षेत्र का वॉटर लेवल बढ़ा है पिछले 3 साल से सरस्वती नदी में पानी चलने से किसान खुश हैं और सरस्वती नदी इस क्षेत्र के लिए वरदान साबित हो रही है उनके साथ इरीगेशन के अधिकारी भी शामिल थे उन्होंने हरियाणा की इरीगेशन सिस्टम व मुख्यमंत्री नायब सैनी जी की इरिगेशन के अच्छे प्रबंधन के लिए सराहना की।

धूमन सिंह ने बताया कि सरस्वती बोर्ड सरस्वती नदी को रिजर्व नेट करने के लिए लगा है इस बोर्ड का गठन पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी ने किया था और अब मुख्यमंत्री नायब सैनी जी बोर्ड के कामों को आगे बढ़ा रहे हैं हमारा उद्देश्य सरस्वती नदी में बारह महीने पानी चलाने का है जो अभी करीब छह से सात महीने पानी चलता है और सरस्वती बोर्ड आदिबद्री में एक डैम बैराज व थ्री फिफ्टी एकड़ में एक रिजर्ववायर बनाकर सरस्वती नदी में 12 महीने पानी चलाने के लिए प्रयासरत है और वह सपना दूर नहीं है जब जल्द ही 12 महीने सरस्वती नदी में पानी चलेगा। उन्होंने बताया कि सरस्वती नदी हमारी संस्कृति व हमारी सिविलाइजेशन सरस्वती सिंधु घाटी सभ्यता पनपी है सरस्वती नदी और सिंधु नदी के बीच में ही हमारी सिविलाइजेशन पनपी जिस क्षेत्र में हम रह रहे हैं और अब सरस्वती का कार्य उत्तराखंड के बन्दर पूँछ ग्लेशियर से लेकर हिमाचल हरियाणा राजस्थान व गुजरात के रण ऑफ कच्छ तक चिह्नित कर लिया गया है जिसमें हरियाणा में 400 किलोमीटर में पानी अभी चल रहा है जो बिलासपुर से लेकर सिरसा ओटू हेड तक सरस्वती चौतांग नदी, लिंडा नाला, टांगरी नदी, मारकंडा नदी व घग्घर नदी व अन्य नालों का पानी लेकर भी आगे सिरसा तक जाती है जिसका अगला पड़ाव राजस्थान में आता है। वर्ल्ड बैंक के दोनों अधिकारियों ने सरकार के सरस्वती नदी प्रोजेक्ट को नदी के किनारे स्थापित रिचार्ज को सराहा। उनके साथ वीरेंद्र लांबा चीफ एचड्रोलॉजिस्ट, अजीत सिंह, एक्सई नवतेज सिंह।

Irrigation Commissioner, Sh. Anurag Aggarwal visit Sarasvati Reservoir Recharging System at Bohli and praise the work of Sarasvati Board

Centre Water Commission की निदेशक श्रीमती आकांशा जी (आई.ए.एस.) व मीडिया इन्चार्ज दलबीर सिंह की टीम ने सरस्वती नदी पर बने विभिन्न सरोवरों का निरीक्षण किया और सरस्वती बोर्ड के रिचार्ज सरोवरों की सराहना की।

मरचेहड़ी सरोवर

बोहली सरोवर

रामपुरा सरोवर

पिपली रिवर फ्रंट

पिपली रिवर फ्रंट पर माता सरस्वती मन्दिर के निर्माण का शुभारम्भ

Amargarh Majada Reservoir

कुरुक्षेत्र गजट में सरस्वती नदी का वर्णन

DESCRIPTION OF SARASWATI RIVER AND ITS HERITAGES IN
(KURUKSHETRA GAZETTE)

For long, scholars were puzzled over the clear branch between the Harappans and the Aryans but the Bhagwanpura excavations (on the right bank of the **River Saraswati** in the district) have established for the first time the link between the two cultures. This is of considerable importance for the understanding of the historical growth of the district from the middle of the second millennium B.C. The late-Harappan pottery discovered at Bhagwanpura is similar to that found at Mirzapur and Daulatpur. The people knew the art of building solid mud-platforms to protect their inhabitation from the ravages of floods in the **River Saraswati,** which their pottery gives a fairly good idea of household objects, dishes, bowls, jars and basins, terracotta toys, beads and bangles. The fusion of the Late-Harrapans and the Painted Grey ware cultures is also reflected in the continuity of the art tradition in pottery types, painted designs, art of terracotta figurines and burials. Absence of iron and Black and Red ware might possibly indicate that the Painted Grey ware using people who inhabited this area were of earlier wave of migrants than those met with at Hastinapura. Further, the Bhagwanpura excavations also throw light on three phases of the building activity of the Painted Grey ware people. The earliest phase revealed semi-circular thatched huts and oval shaped structures of high burnt mud walls.

The stupa mentioned in the above account may be located towards the Hauj and Ghat near the **Saraswati** bed where still a few mounds are seen thickly covered with large broken bricks of reddish or yellowish-red colour. In absence of excavation, it is not possible to say anything more on it. **Cunningham** also stated. "It is probably that the smaller mound may be the remains of the stupa from which the larger pieces of the bricks have been carried away,

and the larger mound may be the ruins of an extensive monastery.

Raja-Karna-Ka-Qilla has brought to light some very important findings- a clay seal depicting a beautiful Indian bull and an inscription of five letters, probably in Kharosthi script and Indo-Bactrian large silver coin of Harmaios, Agra coin bearing the legend Agodaka Agacha Janapadasa (coin of the Agratya or Agra Janapeda) issued from Agrodaka (Agroha). It seems that Kurukshetra was included in the empire of the Kushans whose rule in Northern India extends as far as Mathura and Varanasi. The Theh Polar (Kaithal district) an ancient site on the Southern bank of the **River Saraswati** has yielded some coins of the Kushana Vasuideva and two debased copper coins bearing the Kushana types of Ring at an altar. The Kushana sway over the area is also attested by the recent discovery of a board of about 5000 copper coins from Sonipat, which relate to the time of Kanishka I, Havishka, Vasudeva, the Kushan chief and also the Yaudheyas.

The next Pratihara Ruler Nagabhata II defeated Charampala and established its seat of power at Kanauj. From the Skandapurana and the Jaina Prabhavakacharita, it is gathered that Nagabhata's empire included Brahmavatra (the region between **Saraswati** and Drisadvati) and part of Eastern Punjab respectively.

The district continued to be a part of the Pratihara empire is known from two inscriptions of the time of Mihira Bhoja and Mahendrapala respectively found from the district.

बीबीपुर झील को दोबारा से बडा चौडा किया जा रहा है जिसकी निशानदेही का कार्य जारी है और जल्दी ही भूमि अधिग्रहण का कार्य शुरू हो जाएगा।

बीबीपुर झील में सरस्वती नदी की शाखा का वह क्षेत्र जो करीब 5 कि.मी. है, को रिवाईव करने का काम जारी किसानों ने अपनी मर्जी से कब्जा छोड़ने की पहल की ओर किसानों ने माना की इसके खुदने से किसानों को रिचार्जिंग में बहुत बड़ा फायदा होगा।

सरस्वती (स्योंसर) जंगल

पृथक तीर्थ से आगे सरस्वती नदी के किनारे 11000 एकड़ में फैला हुआ एक जंगल सरस्वती वन के नाम से प्रसिद्ध है। जो कभी सरस्वती की धारा से हरा भरा रहता था। आज भी इस जंगल में विभिन्न तरह के पशु-पक्षी पाए जाते हैं व सरस्वती के जल से अपना आचमन चमन भी करते हैं। इस क्षेत्र में सरस्वती बोर्ड द्वारा सरस्वती सरोवर स्थापित कर के जीव-जंतुओं को पानी देने की योजना पर काम कर रहा है तथा एक वाइल्डलाइफ सेंचुरी के तौर पर इस जंगल को तैयार किया जाए, इस दिशा में भी काम किया जा रहा है।

देखने में आता है कि आदिबद्री के पास कलेसर जंगल, पिहोवा का सरस्वती जंगल तथा रण ऑफ कच्छ के पास गिर जंगल जितने भी छोटे-बड़े जंगल देश व प्रदेश में पाए जाते हैं वह सारे के सारे सरस्वती के किनारे पर हैं।

सरस्वती वाईल्ड लाईफ सैंचुरी, स्योंसर जंगल में 70 acres में सरस्वती सरोवर का निर्माण व जंगल सफारी पर कार्य जारी है। जिसका शुभारम्भ माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी ने वन महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में किया।

सरस्वती (स्योंसर) जंगल प्रोजैक्ट में सतोडा क्रीक के जीर्णोद्धार किया जाएगा जिसके लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी के प्रयासो से 5 करोड़ का बजट पास हो गया है। जिसके माध्यम से पिहोवा तीर्थ का स्वच्छ जल स्योंसर जंगल में पशु-पक्षियों के लिए लाया जाएगा तथा सरस्वती की शाखा सतोडा क्रीक में भी पानी का प्रवाह किया जाएगा जिससे जंगल में रिचार्जिंग व पशु-पक्षियों के लिए बड़े-बड़े रिजर्वायर बनाए जा रहे हैं। यहाँ पर टूरिज्म एक्टीविटी व जंगल सफारी शुरु करने का काम भी जारी है।

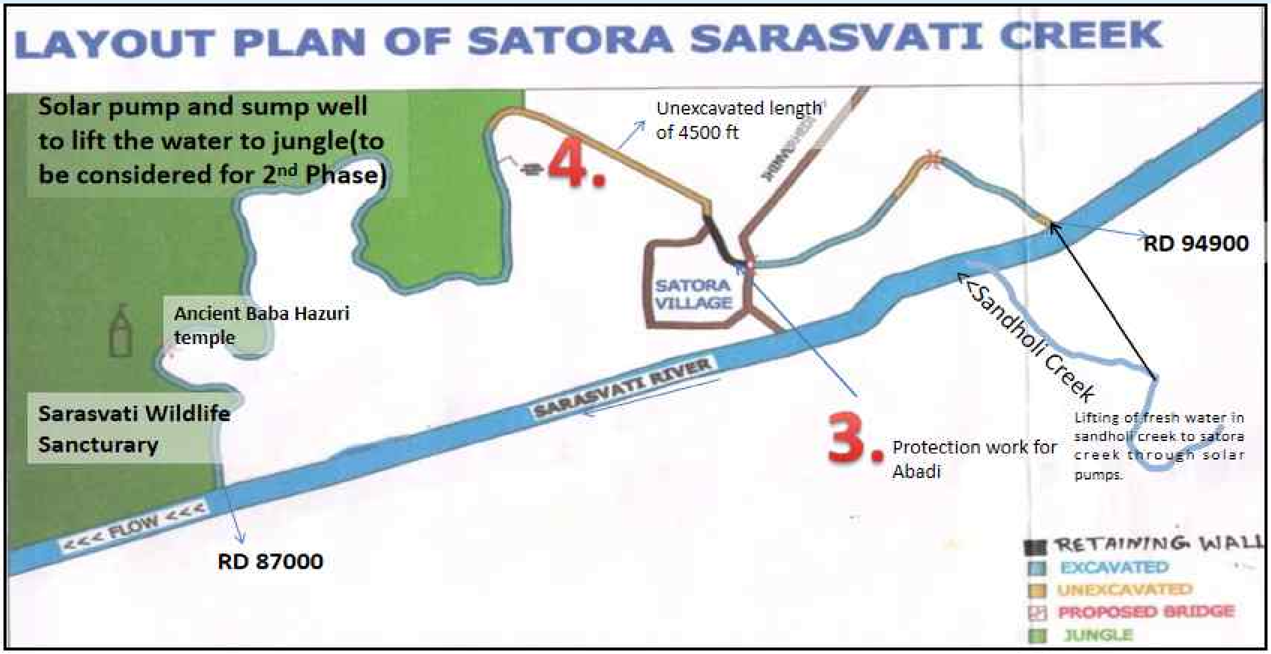

Brief Detail of Agenda of Satora Creek

Project-Overview:
Satora Creek, a paleo-channel of the ancient Sarasvati River, extends approximately 20,500 feet, originating from the Sarasvati River at RD 94900/L and outfall back at RD 87000/L. The project aims to develop this water body for conservation, groundwater recharge, and ecological restoration.

Key Objectives:

- Enhance water retention and support wildlife habitats.
- Facilitate groundwater recharge and mitigate flood risks.
- Promote environmental sustainability and biodiversity.
- Conserve freshwater by linking of creeks

Project Components:

- Solar Pumping System: Installation of solar pumps to lift fresh water from Sandholi Creek.
- Inlet Structure: Regulating water flow into the creek.
- Protective Measures: Safeguarding inhabited areas along the creek.
- Creek Excavation: Increasing water retention capacity.

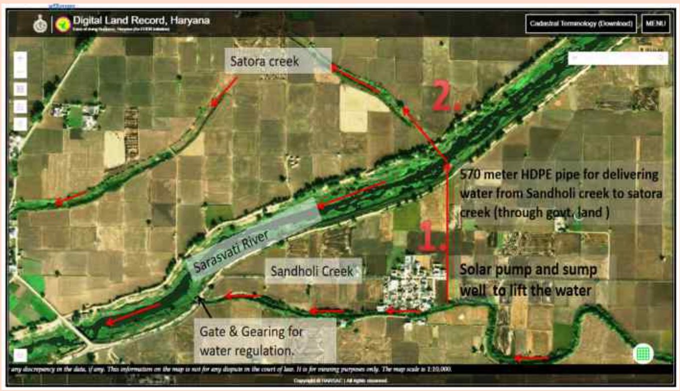

कैथल जिला के पौलड सरस्वती नदी पुल से लेकर गोघ गांव के पुल तक करीब 14 कि.मी. के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा रिजरवायर बनाया जा रहा है जिससे इस क्षेत्र का डार्क जोन दूर होगा क्योकि इस क्षेत्र में सरस्वती नदी की चौड़ाई बहुत ज्यादा और यह प्रोजेक्ट पूरा होने से इस क्षेत्र का भू-जल स्तर बढ़ेगा।

Brief Detail of Agenda of Reservoir Polar to Gogh (14 Km.)

Project-Overview:

This project focuses on efficient water conservation through rainwater harvesting & groundwater recharge. By utilizing sustainable methods like flood control, reuse, and storage, it aims to mitigate water scarcity and support agriculture. Led by our honourable PM Sh. Narendra Modi ji & CM Sh. Nayab Singh Saini ji, the Jal Sanchay Initiative strengthens India's water management efforts.

Key Objectives:

- Facilitate groundwater recharge and mitigate flood risks.
- Conserve freshwater by making check dams in river.
- 800 Acre feet water-body will be developed to conserve the water
- Promote environmental sustainability and biodiversity.

Project Components:

- Construction of the head regulator at RD 14.10 km on the Sarasvati River to optimize its use as a water-body for recharge during lean periods.

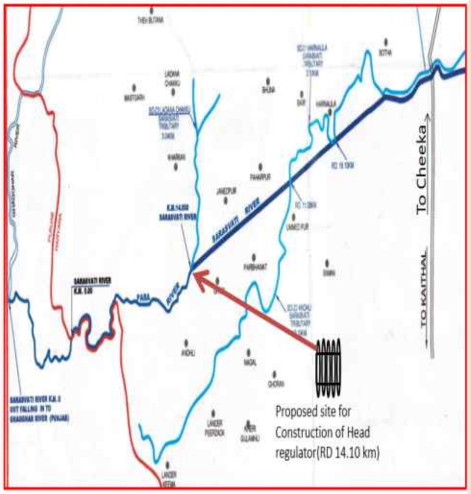

यह प्रोजैक्ट बरसात के मौसम में घग्गर नदी के फालतू पानी को सौलर सिस्टम के माध्यम से हांसी बुटाना नहर में डालने का प्लान है जिससे करीब 109 कि.मी. में वॉटर बॉडी बनाई जाएगी। यह नहर सरस्वती नदी को नौच गांव में क्रॉस करती है इस प्रोजैक्ट से करीब 55 गांव के क्षेत्र में रिचार्जिंग होगी।

Brief Detail of Agenda of Azimgarh

Objective: The project aims to reuse the Bhakra Main Line-Hansi Branch-Butana Branch Multipurpose Link Channel (BML-HB-BB-MPLC) as a water storage body to capture surplus water from floods and various crossing channelsthrough their escapes. This will enhance water conservation, support irrigation, recharge groundwater, and without new land acquisition.

Key Highlights:

Project Scope: Conversion of Channel of the 109.21 km into a water body.

Water Source: Surplus water from Ghaggar River , Escape channels of Sarasvati Distributary & Sirsa Branch and 95 inlets on BML-HB-BB-MPLC.

Storage Capacity: 4,084 acre-feet through controlled percolation for groundwater recharge.

Infrastructure:

- **Pump House:** 5 pumps (100 cusec capacity), powered by solar energy & grid electricity (net-zero consumption) on 16 acres available govt. land in vicinity at RD 37000 of BML-HB-BB-MPLC.
- Solar Power Plant: 315 KWH capacity installed on 16-acre government land at RD 36100.
- Micro-Irrigation Potential: All Along the entire channel.

Impact:

- Addresses groundwater depletion in dark zones (Kurukshetra, Kaithal, Karnal, Jind).
- Prevents flood damage, ensures water conservation, and supports sustainable agriculture.

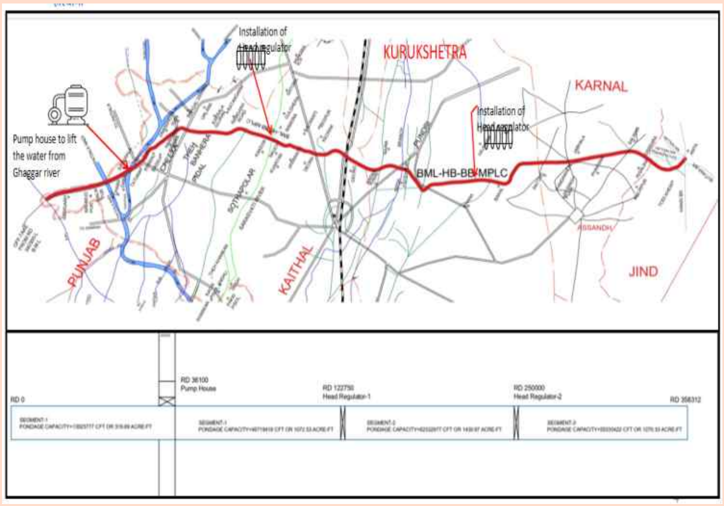

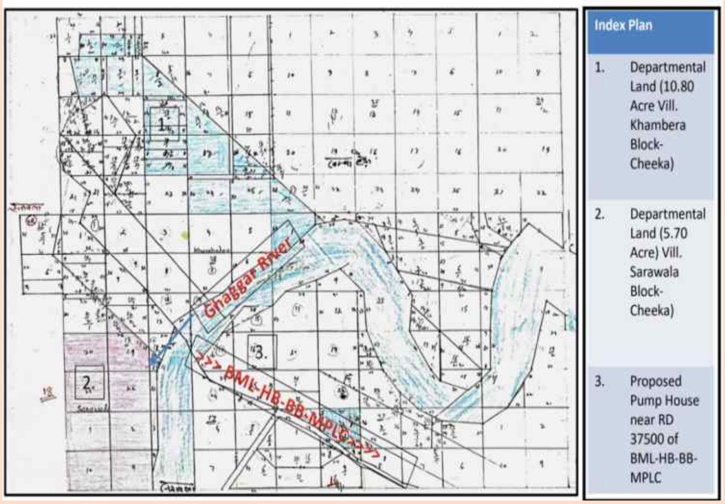

Azimgarh Reservoir Purposed

भाग – 2

सरस्वती नदी के किनारे स्थित प्राचीन मन्दिर, पवित्र तीर्थ, नव-निर्माण घाट, आरकेलोजिकल साईटस, सरस्वती नदी के बारे में सभी ग्रंथों में जानकारी व सरस्वती बोर्ड की अन्य गतिविधियां प्रेषित हैं।

ईशरगढ़ बावड़ी

सरस्वती नदी के किनारे स्थित इस बावड़ी को लक्की शाह बंजारा द्वारा 1600 ई॰ में बनवाया गया था। माना जाता है कि जितनी भी बावड़ियाँ सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर बनी है उनका कारण इनमें सरस्वती के मीठे पानी का पाया जाना है।

रन्तुक यक्ष, पिपली

रन्तुक यक्ष तीर्थ राष्ट्रीय राजमार्ग कुरुक्षेत्र के साथ पिपली नामक स्थान पर सरस्वती के किनारे स्थित है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र की 48 कोस पावन भूमि सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य स्थित है। इस भूमि के चार कोनों में चार यक्ष स्थित हैं। यही यक्ष कुरुक्षेत्र भूमि के रक्षक कहलाते थे। महाभारत में इन यक्षों को तरन्तुक, अरन्तुक, रामहृद तथा मचक्रुक नामों से पुकारा गया है जिनके बीच की भूमि कुरुक्षेत्र, समन्तपंचक तथा ब्रह्मा की उत्तर वेदी कहलाती है।

तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं
रामहृदानां च मचक्रुकस्य च ।
एतत् कुरुक्षेत्रसमन्तपंचकं
पितामहरयोत्तरवेदिरुच्यते ।।
(महाभारत का पर्व 83/208)

सरस्वती बोर्ड यहाँ पर एक रीवर फ्रन्ट विकसित करने जा रहा है और यह तीर्थ सरस्वती की अष्टकोसी यात्रा का अन्तिम पडाव है।

निम्न वर्णित सभी तीर्थ सरस्वती नदी की अष्टकोषी परिक्रमा के तीर्थ थे जिनसे होकर परिक्रमा पूर्ण होती थी जिसका सभी ग्रन्थों में वर्णन है।

वृद्ध कन्या

इसी स्थान पर पूर्व काल में एक ब्रह्म कन्या ने वृद्ध अवस्था तक जप तप कर शरीर त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया था। आज भी यहाँ कृष्ण चैत्र चौदस के दिन यहाँ मेला और भण्डारा लगता है। तीर्थ में स्नान कर दान आदि देकर यात्रा के अगले पड़ाव की ओर बढ़ते हैं।

वृद्ध कन्या से सरस्वती के किनारे पूर्व दिशा में प्रजापति ब्रह्मा जी ने 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के उत्तर पूर्व कोण में प्रथम पक्ष को नियुक्त किया था।

दधीचि तीर्थ

इस तीर्थ पर सरस्वती पूर्व (सूर्य) वाहिनी हो जाती है। यहाँ दधीचि ऋषि का आश्रम और कुण्ड था। सरस्वती जी निरन्तर बाह्य और गुप्त रूप से इस कुण्ड में प्रवाहित होती रहती है। इस स्थान पर पंच रत्नों स्वर्ण वस्त्राभूषणों से दान की बड़ी महिमा बताई जाती है।

दधीची कुण्ड से सरस्वती के किनारे पूर्व दिशा में वृद्ध कन्या तीर्थ आता है।

कुबेर तीर्थ

पूर्वकाल में कुबीर ने इस स्थान पर तप कर यक्षों का राज धन का स्वामित्व और पुष्पक विमान की प्राप्ति की थी। चैतन्य महाप्रभु जी ने भी इस स्थान पर माता सरस्वती की आराधना और कुबेर जी की अर्चना की थी। आज भी यहाँ महाप्रभु जी एक बैठक विद्यमान है जिसमें निरन्तर पूजा अर्चना की जा रही है। इस स्थान पर कुबेर जी से धन प्राप्ति की मनोकामना और अन्य सभी सुखों से परिपूर्ण जीवन की कामना की जाती है।

स्थाणेश्वर तीर्थ

इस तीर्थ की स्थापना स्वयं भगवान शंकर जी ने ही अपने विग्रह रूप में की है। सरोवर के मध्य में एक कूप रुद्रकूप के नाम से विद्यमान है। इसी कूप का अमृत जल सरोवर को पवित्रतम ही नहीं बनाता अपितु सरस्वती गुप्त रूप से सरोवर के जल में

सम्मिश्रण होकर इसे अक्षय फलदायक बनाती है। समुद्र से लेकर सरोवर के सब तीर्थ प्रतिदिन भगवान सूर्य के आकाश के मध्य में आ जाने पर स्थाणु तीर्थ में आ जाते हैं। कुरुक्षेत्र की यात्रा भगवान स्थाणेश्वर देवालय के दर्शन और सरोवर स्नान बिना सफल नहीं मानी जाती। इस स्थान पर सम्पत्ति सहित ब्राह्मण भोजन और नाना प्रकार का दान किया जाता है जिस से मनोकामना पूर्ण होती है।

स्थाणेश्वर महादेव से सरस्वती किनारे पूर्व की ओर चलकर कुबेर भण्डार तीर्थ स्थान आता है।

नाभ कमल तीर्थ

इसी स्थान पर प्रलय के बाद भगवान विष्णु की नाभि से कमल में ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई और 48 कोस भूमि को अपनी उत्तर वेदी बना ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। नाभकमल तीर्थ से ही राजा कुरु ने अष्टांग धर्म की खेती प्रारम्भ की थी इसीलिए इसको कुरु तीर्थ भी कहा जाता है। चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तिथि को ब्रह्मा के इस उत्पत्ति स्थल पर स्नान ध्यान करना चाहिये और यात्रा की सफलता के लिए ब्रह्मा जी से प्रार्थना करनी चाहिए।

ओजस तीर्थ

ओजस तीर्थ शिव जी और पार्वती माता के पुत्र कार्तिकेय जी से सम्बन्धित है। शंकर भगवान ने अपने पुत्र कार्तिकेय को वरदान दिया था कि उनका शरीर बिना चर्म के ही स्वस्थ रहेगा और जो प्राणी आप की मूर्ति पर सिंदूर अर्पण करेगा वह स्वास्थ्य और मन इच्छा फल प्राप्त करेगा। चैत्र कृष्ण चतुर्दशी के दिन प्रतिवर्ष कार्तिकेय अपनी गदा घुमाकर अष्टकोसी पृथ्वी की रक्षा करते हैं। इस तीर्थ पर स्नान करके नारियल व पैसे आदि के दान की महिमा है। इस तीर्थ पर महिलायें नहीं जातीं, केवल पुरुष ही कार्तिक जी के स्थान पर पूजा अर्चना करते हैं। वर्तमान में यहाँ तीर्थ विद्यमान नहीं है। सरस्वती के घाट पर ही श्रद्धालु पूजा अर्चना करते हैं।

पवित्र ओजस तीर्थ से चलकर सरस्वती जी के किनारे किनारे चलते हुए कुरुक्षेत्र के स्वामी स्थानेश्वर महादेव जी के अति पुण्यमय तीर्थ स्थल और देव मन्दिर में पहुंचना चाहिये।

पावन तीर्थ

चौतांग और वैतरणी नदी पार इस तीर्थ पर दीप प्रज्ज्वलित किये जाते हैं और यात्रीगण अपने सर्व कुटुम्ब और जान पहचान वाले व्यक्तियों के नाम लेकर पैसा या अन्य मुद्रा दान करते हैं। ऐसी दंत कथा है कि यदि पृथ्वी लोक में रह कर चन्द्रभागा वैतरणी नदी को ही श्रद्धापूर्वक भगवद् भजन करके पार कर लिया जाये तो मृत्यु उपरांत वैतरणी नदी पार करते समय प्राणी को कोई कष्ट नहीं होता है। वर्तमान में यहाँ तीर्थ विद्यमान नहीं है।

चन्द्रभागा वैतरणी नदी को पार करके विश्राम घाट आता है इस स्थान पर यात्रीगण अपनी संख्या की गिनती करवाते हैं। संख्या गिनती करते समय कुछ मुद्रा अवश्य दी जाती है क्योंकि खाली हाथ गणना करवाना ठीक नहीं होता है। विश्राम घाट के पश्चात् औघड़िया नामक बड़ा प्रसिद्ध चमत्कारी स्थान आता है।

औघड़िया तीर्थ

यहां पर साधू संतों ने औघड़ रह कर बड़ी बड़ी सिद्धियाँ प्राप्त की थीं पात्री गण इस स्थान को नमस्कार करके प्रस्थान करते हैं। औघड़िया तीर्थ स्थान से चलकर बाण गंगा दयालपुर ग्राम आता है।

बाणगंगा तीर्थ

बाण गंगा तीर्थ में गंगा जी का गुप्तवास कहा जाता है। अर्जुन ने महाभारत युद्ध के समय अक्षयस्थ के दिव्य घोड़ों के विश्राम और जलपान कराने के लिए भूमि में तीर मारकर गंगा जी प्रकट की थी और इस जल का दिव्य घोड़ों ने पान किया था। घोड़ों के जलपान और विश्राम के समय तीरों की वर्षा कर चछुंओर परकोर बना दिया था। इस स्थान पर कुंड में स्नान कर यात्री कुछ विश्राम और जलपान करते हैं। बाण गंगा दयालपुर ग्राम से आगे चलकर उपगया नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान आता है।

उपगया तीर्थ

इस स्थान से चन्द्रभागा वैतरणी नदी टयोठा ग्राम की ओर गई है। उपगया में पितृ ऋण से मुक्ति के लिये पिण्ड दान जलाजली देने का विधान है। इस स्थान पर पितरों के मोक्ष हेतु पिण्ड दान किया जाता है। वस्त्र, आभूषण दान और यज्ञ हवन करने से अक्षय

लोक की प्राप्ति होती है। इस स्थान पर सामयक चावलों से और घृत मिलित यज्ञ कर यदि ब्राह्मण भोजन कराया जाये तो पितृ तृप्त होकर मनोकामनायें पूर्ण करते हैं।

उपगया तीर्थ की विधिपूर्वक यात्रा करके मृतुंज्या पुर (मिर्जापुर) ग्राम से हो कर नरकउतारी बाण गंगा जाते हैं।

नरकउतारी बाण गंगा (अनरक) तीर्थ

इस पावन तीर्थ पर पहुंच कर कुण्ड में स्नान ध्यान करना चाहिये। यहां की यात्रा से महान नारकीय जीव भी पाप मुक्त हो सकता है। अर्जुन ने भीष्म जी की विपासा बुझाने के लिये भूमि में तीर मारकर गंगा जी को प्रकट किया था और गंगा नन्दन भीष्म जी ने पवित्र जलपान किया था जो उत्तरायण आने तक माघ शुक्ल अष्टमी तक इसी स्थान पर बाणों की शरशैय्या पर पड़े रहे और उत्तरायण लगने पर मोक्ष गति प्राप्त की थी। भीष्म ने इस स्थान को महान पुण्यदायक–मोक्षप्रदायक– जन्म जन्मायों के पापों और घोर नरकों से उद्धारक स्थान बनाने की याचना भगवान श्री कृष्ण से की थी। इस स्थान पर जलदान, अन्नदान, भोजन दान, पिण्ड दान और अन्य कई प्रकार के दान किये जाते हैं जिस से मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। मनुष्य पाप विमुक्त होकर अक्षय फल को प्राप्त कर लेता है।

नरकातारी भीष्म कुण्ड बाण गंगा की विधिवत सेवन पश्चात यात्री गणों को ओजस तीर्थ पहुंच कर स्नान ध्यान कर नाभी कमल तीर्थ पर पहुंचना चाहिये। यहां पर बह्मा जी से अपनी यात्रा की सफलता पूर्वक समाप्ति के लिये आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिये। सध्या वंदन आरती करके अपने अपने घरों को प्रस्थान करना चाहिये। यात्रा की समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन और श्रद्धा अनुसार दान दक्षिणा समर्पित करनी चाहिये।

चिट्टा मन्दिर

वर्तमान मे यह तीर्थ चिट्टा मन्दिर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पहुँचने के लिए पिपली–पिहोवा मार्ग से एक उपमार्ग है। सरस्वती के तट पर स्थित इस तीर्थ के निकट से अनेक पुरातात्त्विक अवशेष मिले हैं। जिनमें दूसरी सहस्राब्दि ई० पूर्व के धूसर चित्रित मृदभाण्डों से लेकर आद्य ऐतिहासिक काल से मध्य काल तक की संस्कृतियों के अवशेष सम्मिलित हैं। इन पुरातात्त्विक प्रमाणों से भी इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध होती है।

वर्षो से बंद अष्टकोशी परिक्रमा का शुभारंभ करवाया तथा युगों युगों की प्रथा को सरस्वती बोर्ड के प्रयासो से आम जन को जागरूक कर इस यात्रा में जोड़ा जिसने गीता मनीसी स्वामी ज्ञानानाद जी, महंत विशाल मणि, साधु संत, के.डी.बी. व कुरुक्षेत्र की सभी संस्थाओं ने भाग लिया और एक ही दिन में 35 किलोमीटर की यात्रा संपूर्ण की।

ब्रह्म सरोवर :

कुरुक्षेत्र के मध्य में स्थापित ब्रह्म सरोवर, भगवान शिव को समर्पित है। ऐसा माना जाता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी भूमि से ब्रह्मांड की रचना की थी। इस पवित्र स्थान के पास ही बिरला गीता मंदिर और बाबा नाथ की 'हवेली' है। सर्दियों में सरोवर में जान आ जाती है जब पक्षी दूर–दूर से इस पानी में डुबकी लगाने के लिए पलायन करते हैं। नवंबर के अंत और दिसंबर की शुरुआत में गीता जयंती के अवसर पर 'दीप दान' और 'आरती' के दौरान यह खूबसूरत सरोवर चमकता है।

डॉ. ए. आर. चौधरी के अनुसार 2000 से 3000 वर्ष पूर्व भी सन्निहित सरोवर व ब्रह्म सरोवर में जल का प्रवाह सरस्वती के द्वारा होता रहा होगा।

सन्निहित सरोवर

भगवान विष्णु का स्थायी निवास माना जाता है, सन्निहित सरोवर कुरुक्षेत्र से पिहोवा रोड पर 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस सरोवर में ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन तीर्थों की पूरी शृंखला यहां इकट्ठी होती है और किंवदंतियों के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति सूर्य ग्रहण के समय श्राद्ध करता है और इस तालाब में स्नान करता है, तो उसे 1000 अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है। सूर्य ग्रहण के समय तीर्थ यात्री इस पवित्र स्थान पर एकत्रित होते हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस जगह के आगंतुक अपने पूर्वजों के बारे में पुरोहितों या स्थानीय रूप से पांडों के रूप में जान सकते हैं, जो सदियों से देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले तीर्थयात्रियों के रिकॉर्ड संभाल रहे हैं। इस तीर्थ स्थल पर पित्रों का पिन्ड दान भी किया जाता हैं।

माँ भद्रकाली शक्तिपीठ, कुरुक्षेत्र

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।

सरस्वति नमौ नित्यं भद्रकाल्यै नमो नम: ।
वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च ॥

यह पवित्र स्थल भी सरस्वती नदी के किनारे स्थित है जिसका महाभारत काल में भी वर्णन आता है। भद्रकाली मंदिर कुरुक्षेत्र जिले के थानेसर शहर में झाँसा रोड पर स्थित है। भद्रकाली शक्ति का एक रूप है। इसे भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि सती की एक पायल कुएं में गिरी थी। यहां संगमरमर के टखने से सती की पौराणिक घटना का स्मरण किया जा रहा है। यह भी माना जाता है कि पांडवों ने भगवान कृष्ण के साथ मां दुर्गा की पूजा की थी और महाभारत युद्ध में जीत के बाद, वे फिर से यहां देवी मां की पूजा करने आए थे। उन्होंने उसकी सेवा में अपने घोड़ों की भी पेशकश की। उस दिन से, भक्त अपनी मनोकामना पूरी होने के बाद देवता को टेराकोटा और धातु के घोड़े चढ़ाते हैं। यह भी माना जाता है कि इस मंदिर में श्रीकृष्ण और बलराम का 'मुंडन' (बाल निकालना) समारोह किया गया था।

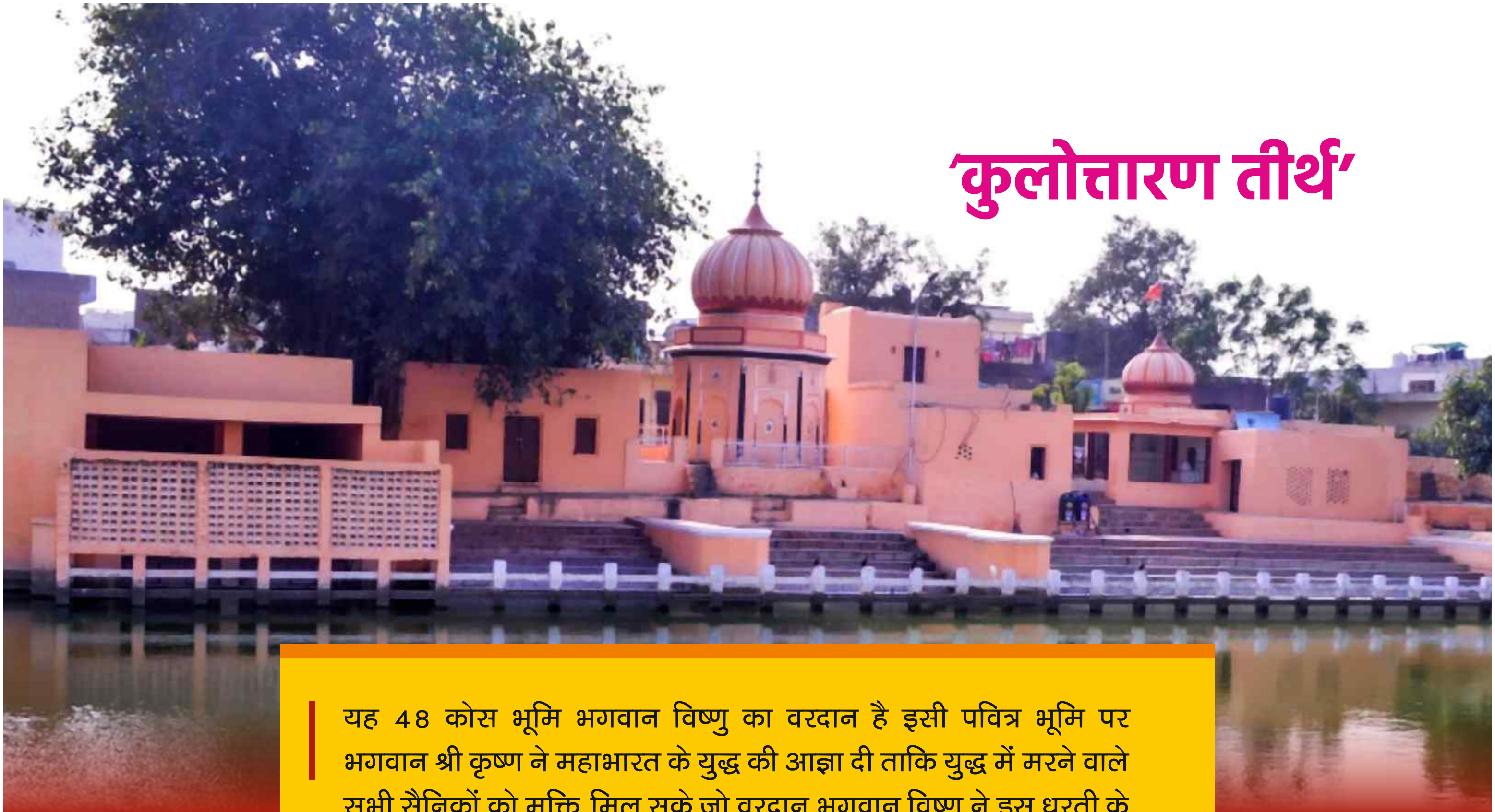

‘कुलोत्तारण तीर्थ’

यह 48 कोस भूमि भगवान विष्णु का वरदान है इसी पवित्र भूमि पर भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध की आज्ञा दी ताकि युद्ध में मरने वाले सभी सैनिकों को मुक्ति मिल सके जो वरदान भगवान विष्णु ने इस धरती के राजा कुरु को दिया था और इन युद्ध में मारे गए सैनिकों के मोक्ष के लिए भगवान विष्णु ने स्वयं कुलतारण तीर्थ का निर्माण करवाया जिसका वर्णन वामन पुराण में है,

ततो गच्छेत विप्रेन्द्रास्तीर्थ कल्मषनाशनम्।
कुलोत्तारणनामानं विष्णुना कल्पितं पुरा।।   वा पु 74

श्रेष्ठ ब्राह्मण! कोटितीर्थ के बाद पाप का नाश करने वाले **‘कुलोत्तारण तीर्थ’** में जाना चाहिये, जिसे प्राचीन काल में विष्णु ने वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाले मनुष्य को तारने के लिये बनाया था। जो कुरुक्षेत्र से 7 किलोमीटर पूर्व दिशा में गांव किरमच में स्थित है और यह तीर्थ कुलों का उद्धार करने वाला है।

पुरातात्विक स्थल राजा हर्षवर्धन का किला

राजा हर्षवर्धन का थानेसर से क्या जुड़ाव था

सरस्वती नदी से 100 मीटर दूर स्थित यह जिले का प्राचीन पुरातात्विक स्थल है। पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं के अनुसार इस अध्याय में बताया गया है कि चौथी शताब्दी से लेकर छठवी शताब्दी तक संपूर्ण भारत पर राज करने वाले गुप्त शासन का अंत हुआ। उसके बाद कोई सम्राट ऐसा नहीं आया जो पूरे साम्राज्य को सम्भाल सकता। फिर उत्तरी भारत में सम्राट हर्ष का उदय होता है। वह जन्म से ही बहुत प्रभावशाली थे और मात्र 16 साल की उम्र में ही उन्हें राजा बना दिया गया था क्योंकि उसके बड़े भाई की हत्या राजा शशांक ने कर दी थी। हर्षवर्धन ने विशाल सेना तैयार की और शशांक को हराकर पूरे उत्तर भारत मगध, कश्मीर, गुजरात, सिंध पर जीत हासिल की। जल्द ही हर्ष का साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में गुजरात पूर्व के आसाम और नर्मदा नदी तक फैल गया। सातवीं सदी में थानेश्वर उत्तर भारत की सत्ता का केन्द्र बना रहा क्योंकि हर्षवर्धन ने थानेसर व कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया हुआ था। कुछ समय के लिए थानेसर और कुछ समय के लिए कन्नौज से पूरा साम्राज्य चलता था बाद के दिनों में उन्होंने कन्नौज को ज्यादा महत्त्व दिया। सम्राट हर्ष कवि बाणभट्ट ने थानेसर के बारे में अपनी रचना में लिखा है कि प्राचीन नगर स्थान ईश्वर के नाम से जाना जाता है। थानेसर में स्थित श्री स्थानेश्वर जी महादेव मंदिर के पास ही हर्ष का टीला आज भी मौजूद है और इसका नाम स्थानेश्वर महादेव के नाम से ही पड़ा। तभी से हर्ष ने इस नगर को थानेसर का नाम दिया था और कुरुक्षेत्र में पर्यटन की दृष्टि से आज भी आकर्षण का केंद्र हर्ष का टीला है। यहाँ पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई में एक महल नुमा किला मिला है जिसकी रचना प्राचीन है ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट यहीं से अपना साम्राज्य चलाते थे। यह करीब 1 किलोमीटर लंबा व 700 मीटर चौड़ा है जिसकी खुदाई से प्रतीत होता है कि यह बहुत ही प्राचीन किला रहा होगा।

सरस्वती नदी की ओर स्थापित प्राचीन घाट

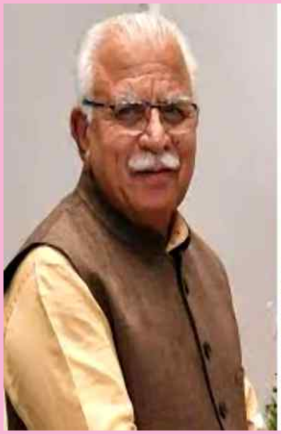

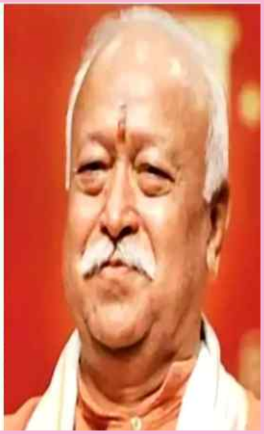

ज्योतिसर

यह स्थल सरस्वती नदी के 50 मीटर दूरी पर स्थित है। सभी वेदों व पुराणों के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन को गीता का उपदेश सरस्वती नदी के किनारे इसी स्थल पर ही दिया था।

हाल ही में माननीय परम पूजनीय श्री मोहन भागवत जी व माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी ने ज्योतिसर में भगवान श्री कृष्ण के विराट स्वरूप का लोकार्पण किया। यह तीर्थ स्थल भी सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। अब सरस्वती बोर्ड श्रद्धालुओं के लिए एक घाट का निर्माण करवा रहा है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी ने कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में महाभारत अनुभव केंद्र का दौरा किया और साथ में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज जी, पूर्व मंत्री सुभाष सुधा जी और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी साथ हैं।

अरूणाय संगम तीर्थ

पिहोवा में अरूणाय मन्दिर के पास धनी रामपुरा गांव में बहुत ही पुरातात्विक 12 सीढ़ियाँ मिली हैं जोकि अरूणा, वरूणा सरस्वती संगम के घाट की सीढ़ियाँ बताई गई हैं। यह तीर्थ प्राचीन संगम के लिए जाना जाता है और इसका रकबा आज भी धनी रामपुरा गांव के मोजा में 8 कनाल 7 मरले संगम तीर्थ के नाम से दर्ज है। शास्त्रों के अनुसार माना यह जाता है कि यह पवित्र संगम भगवान श्री महादेव जी ने करवाया था तभी अरूणाय में स्थापित भगवान शिवलिंग का नाम संगमेश्वर है और यह पवित्र स्थान सरस्वती के किनारे स्थित है।

श्री ए.आर.चौधरी व श्री धुमन सिंह किरमच
सरस्वती नदी के प्राचीन स्थल संगम घाट का दौरा करते हुए

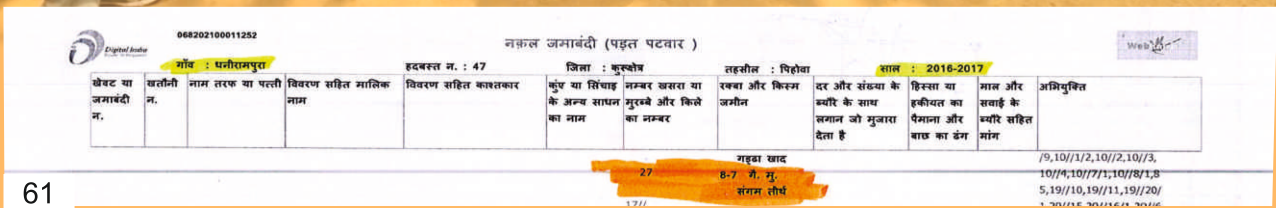

068202100011252

नक़ल जमाबंदी (पड़त पटवार)

गॉव : धनीरामपुरा   हदबस्त न. : 47   जिला : कुरुक्षेत्र   तहसील : पिहोवा   साल : 2016-2017

खेवट या जमाबंदी न.	खतौनी न.	नाम तरफ या पत्ती	विवरण सहित मालिक नाम	विवरण सहित काश्तकार	कुंए या सिंचाइ के अन्य साधन का नाम	नम्बर खसरा या मुरब्बे और किले का नम्बर	रकबा और किस्म जमीन	दर और संख्या के ब्यौरे के साथ लगान जो मुजारा देता है	हिस्सा या हकीयत का पैमाना और बाछ का ढंग	माल और सवाई के ब्यौरे सहित मांग	अभियुक्ति
						27	गड्ढा खाद 8-7 गै. मु. संगम तीर्थ				/9,10//1/2,10//2,10//3, 10//4,10//7/1,10//8/1,8 5,19//10,19//11,19//20/
					17//						

पृथूदक तीर्थ, पिहोवा

पृथूदक नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर पिहोवा में सरस्वती नदी के किनारे स्थित है। महाभारत में इस तीर्थ को कुरुक्षेत्र के तीर्थों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तीर्थ कहा गया है।

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात् सरस्वती।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम् **महाभारत, वन पर्व (83:145)**

इस तीर्थ के महत्त्व का वर्णन महाभारत के अतिरिक्त भागवत पुराण, भविष्य पुराण, वामन पुराण, वायु पुराण आदि में भी मिलता है। इस तीर्थ का नामकरण महाराज पृथु के नाम पर हुआ है, जिन्होंने इस स्थान पर अपने पितरों हेतु उदक (जल) द्वारा तर्पण किया था। वामन पुराण के अनुसार भगवान शंकर ने भी प्राचीन काल में पृथूदक में विधिपूर्वक स्नान किया था।

शंकरोऽपि महातेजा विसृज्य गिरिकन्यकां।
पृथूदकं जगामाथ स्नानं चक्रे विधानतः।। **(वामन पुराण)**

वामन पुराण की ही एक कथा के अनुसार गंगाद्वार पर रुषंगु का निवास स्थान था। अपने अन्तकाल को समीप आया देख उसने अपने पुत्रों से स्वयं को पृथूदक ले जाने का आग्रह किया। उसके इस आशय को जान उसके पुत्र उसे पृथूदक तीर्थ में ले गए। रुषंगु ने यहां स्नान किया तथा इस तीर्थ के महत्त्व को बताते हुए कहा कि सरस्वती के उत्तरी तट पर स्थित पृथूदक तीर्थ में जो व्यक्ति जप करता हुआ अपने शरीर का त्याग करता है वह निःसन्देह शाश्वत पद का अधिकारी होता है।

सरस्वती नदी के तट पर स्थित इस तीर्थ के साहित्यगत विवरण को इस क्षेत्र से मिलने वाले पुरातात्त्विक अवशेष पुष्ट करते हैं तथा पृथूदक क्षेत्र से मिली विभिन्न ऐतिहासिक कालों की मूर्तियों से भी इस तथ्य की अपरोक्ष पुष्टि होती है।

सरस्वती महोत्सव 2024 में पिहोवा सरस्वती तीर्थ की परिक्रमा माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी व श्री धुमन सिंह किरमच, उपाध्यक्ष के नेतृत्व में की गई जो आज भी निरंतर जारी है और इस घाट पर हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के श्रद्धालु स्नान व पूर्वजों के तर्पण हेतु आते हैं।

श्री रामधारी शर्मा

गुलडेहरा गालव ऋषि मन्दिर, पिहोवा

सरस्वती नदी के किनारे स्थित गुलडेहरा में गालव ऋषि अपनी उपस्थिति से देवराज इन्द्र तथा धर्मराज युधिष्ठिर की सभा की शोभा बढ़ाते थे। ऐसा उल्लेख महाभारत के सभापर्व में है। इन्हीं गालव ऋषि ने इस स्थान पर एक लम्बे समय तक घोर तपस्या की तब से ही ऋषि के नाम से यह तीर्थ भी गालव तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

इस तीर्थ में एक सरोवर एवं दो छोटे मन्दिर हैं। सरोवर, मन्दिर परिसर के उत्तर में स्थित है। वर्तमान में ये मन्दिर एवं घाट अत्यन्त जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं। यहां स्थित मन्दिर का शिखर अष्टभुजाकार एवं गुम्बदाकार है। यहां पर सरस्वती बोर्ड एक सुन्दर घाट निर्मित करने जा रहा है।

ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत

ब्रह्मावर्त नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर प्रभावत ग्राम के पश्चिम में स्थित है।

कुरुक्षेत्र भूमि की 48 कोस की परिधि में स्थित ब्रह्मतीर्थों (ब्रह्मसर, ब्रह्मयोनि, ब्रह्मोदुम्बर, ब्रह्मावर्त) में इस तीर्थ का एक प्रमुख स्थान है। महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही इस तीर्थ का महत्त्व वर्णित है। महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार है।

ततोगच्छेत् राजेन्द्र ब्रह्मवर्तं नरोत्तमः।
ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।।

(महाभारत, वन पर्व 83/53-54)

अर्थात् हे राजन्! तत्पश्चात् ब्रह्मावर्त नामक तीर्थ में जाना चाहिए जहाँ स्नान करने पर मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ का सेवन करने वाले मनुष्य को ब्रह्मज्ञानी होने का फल वर्णित है:

ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मज्ञानसमन्वितः।
भवेत नात्र संदेहः प्राणान् मुंचति स्वेच्छया।।

(वामन पुराण 35/36)

अर्थात् ब्रह्मावर्त नामक तीर्थ में स्नान करने पर व्यक्ति निःसन्देह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है एवं वह अपनी इच्छा के अनुसार अपने प्राणों का परित्याग करता है।

अग्नि पुराण में भी तीर्थ महात्म्य नामक अध्याय में जहाँ कुरुक्षेत्र के तीर्थों का वर्णन है वहाँ इस तीर्थ का नाम स्पष्टतया वर्णित है।

गंगासरस्वतीसंगमं ब्रह्मावर्तमघार्दनम्।

(अग्नि पुराण 109/17)

नारद पुराण में भी ऐसा वर्णन है कि ब्रह्मावर्त तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार इस तीर्थ के महात्म्य के सम्बन्ध में वामन पुराण, नारद पुराण, मत्स्य एवं पद्म पुराण के मतों में पर्याप्त साम्य है।

सरस्वती नदी के किनारे स्थित यह तीर्थ कुरुक्षेत्र भूमि की 48 कोस की सीमा पर स्थित है।

पोलड़ तीर्थ

सरस्वती नदी के दक्षिणी तट पर स्थित सीवान गांव से लगभग 4 किमी और कैथल से 10 किमी दूर, महाभारत युद्ध के दौरान नष्ट हुए एक प्राचीन गांव की जगह को चिह्नित करने के लिए पोलड़ गांव का वर्णन आता है, जहां पर आज भी सरस्वती का प्राचीन मन्दिर स्थापित है। सरस्वती बोर्ड द्वारा यहां पर एक घाट व एक रिवर फ्रंट बनाने पर कार्य चल रहा है।

पोलड़

सरस्वती मन्दिर

कैथल जिला के पिशोल गांव में सरस्वती नदी के किनारे बना सुन्दर घाट

पंजाब की तरफ से आने वाली पारा नदी का दृश्य जो कि कैथल जिले में पोलड़ गांव के पास सरस्वती नदी में मिलती है।

सरस्वती एवं घग्घर नदी का संगम स्थान पंजाब प्रान्त का सागरा गांव

पारा नदी से कुछ दूर चलकर घग्गर नदी सरस्वती नदी में आकर सागरा गाँव से पंजाब व हरियाणा बॉर्डर के पास आपस में मिलकर आगे कैथल से होते हुए जीन्द की सीमा को लगते फतेहाबाद, सिरसा औटू हैड से होते हुए राजस्थान और गुजरात में रण के कच्छ तक पहुँचती है।

आदि बद्री से हरियाणा के अन्तिम छोर राजस्थान, गुजरात, रण ऑफ कच्छ तक व ऐतिहासिक धार्मिक सरस्वती नदी के किनारे से प्राप्त पुरातात्विक प्रमाण

सरस्वती नदी के पैलियो चैनल आदिबद्री में स्थित पुरातात्विक स्थल

आदिबद्री पुरातत्त्व स्थल (उत्तरी अक्षांश 30° 27' पूर्वी देशान्तर 77° 27') ग्राम काठगढ़, जिला यमुनानगर में जिला मुख्यालय से 40 कि.मी. उत्तर दिशा में स्थित है। शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी की प्राकृतिक मनोरम छटा में स्थित इस पुरातत्त्व स्थल की पृष्ठभूमि में आदि बद्री नारायण मन्दिर, श्री केदार नाथ मन्दिर व मंत्रा देवी मन्दिर स्थित हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा वर्ष 2002–2003 में, यहां तीन स्थानों पर उत्खनन कार्य किया गया जिसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

ABR-I : इस टीले को स्थानीय रूप से सिंहबाड़ा नाम से जाना जाता है। उत्खनन द्वारा यहाँ पर दो सांस्कृतिक चरणों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनमें क्रमशः ईंटों व पत्थरों का प्रयोग किया गया था। यहाँ से प्राप्त पात्र–परम्परा में कटोरे, बेसिन, जार, घड़े, हाँडी, ढक्कन आदि प्रमुख हैं।

IronTools recovered from ABR-III

ABR-II : इस टीले को स्थानीय लोग 'ईंटों वाली' के नाम से जानते हैं। इस टीले की ऊँचाई लगभग 60 मीटर है। उत्खनन द्वारा यहाँ पर पाँचवीं – छठी सदी ईस्वी के एक विशाल स्तूप के प्रमाण मिले हैं। यहाँ से प्राप्त पात्र–परम्परा में कटोरे, छोटे पात्र जार व टोंटीदार पात्र प्रमुख हैं।

ABR-III : यह स्थल सरस्वती – सोम्ब नदी के संगम के बाँये तट पर स्थित है। उत्खनन द्वारा यहाँ पर एक स्तूप एवं संघाराम (बौद्ध विहार) के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है

स्तूप : पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि प्रारम्भिक अवस्था में मिट्टी के एक स्तूप का निर्माण किया

गया था जिसके मध्य में स्थित धातु गर्भ में मानवीय दांत, अस्थि अवशेष तथा कुछ जर्जर मृणपात्र संजोए गये थे। इसके अतिरिक्त काँच के मनकों वाली माला भी रखी गई थी जिसके मनके प्राप्त हुए हैं। द्वितीय चरण में मृण्मय स्तूप को पहले क्रमशः पत्थरों व मिट्टी के रद्दों से ढका गया था तदोपरांत ईंटों के 22 रद्दों से स्तूप की सबसे बाहरी परत तैयार की गई थी। स्तूप का ढाँचा वृत्ताकार है। जिसमें केन्द्र से परिधि को 24 तीलियों द्वारा जोड़ा गया है। पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर इस स्तूप का निर्माण एवं व्यवहार कालक्रम तीसरी सदी ईस्वी से छठी सदी ईस्वी के मध्य है।

संघाराम (बौद्ध विहार) – यह संघाराम एक आयताकार है जिसकी दीवारों का माप पूर्व–पश्चिम 48.50 मीटर व उत्तर दक्षिण 26.65 मीटर है। इस संरचना में पूर्व दिशा में तीन प्रवेश द्वार व पश्चिम में एक प्रवेशद्वार के अवशेष मिले हैं। संघाराम के अन्दर पूर्व, पश्चिम व दक्षिण दिशा में बौद्ध भिक्षुओं के विश्राम के लिये छोटे कमरों के अवशेष मिले हैं। इन्हीं में से पश्चिम दिशा में स्थित एक कमरे में एक तहखाने (crypt) के प्रमाण मिले हैं संभवतः जिसका प्रयोग बौद्ध भिक्षुओं द्वारा ध्यान – उपासना के लिये किया जाता होगा।

इस संघाराम के मध्य एक बड़े आंगन के प्रमाण मिले हैं। इस आँगन के उत्तर की ओर एक कर्मकाण्डीय स्थल के अवशेष मिले हैं। इस स्थल की पिछली दीवार में पाँच आले बने हुए थे जिनमें सम्भवतः पूजा के लिये मूर्तियां स्थापित की गयी थीं। इनमें से एक आले के सामने जमीन पर एक हवन कुण्ड मिला है। यहाँ से प्राप्त पुरानिधियों में मृणमूर्तियाँ, लोहे की कीलें, भाले का अग्रभाग, ताँबे के छल्ले और मछली मारने के हुक प्रमुख हैं निर्माण सामग्री एवं वास्तु शैली के आधार पर संघाराम (मोनेस्ट्री) का तिथि निर्धारण दसवीं–बारहवीं सदी के मध्य ठहरता है।

यह उपरोक्त जानकारी पुरातत्व विभाग व सरस्वती बोर्ड की टीम द्वारा एकत्रित की गई।

विश्वामित्र का टीला, पिहोवा, कुरुक्षेत्र
8–9वीं सदी ईस्वी

सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित पिहोवा शहर का नाम इसके पौराणिक नाम पृथूदका से लिया गया है, दंतकथा है कि राजा पृथु इस शहर के संस्थापक थे। पिहोवा में गुर्जर–प्रतिहार काल के दो अभिलेख मिले हैं। इस स्थान के एक शिलालेख में तीन विष्णु मंदिरों के निर्माण का उल्लेख है। 882 ईस्वी में राजा भोजदेव का पिहोवा में गरीबनाथ मठ में अभी भी एक शिलालेख है। इसमें विष्णु मंदिरों के रखरखाव के उद्देश्य से प्रत्येक व्यापारी से स्वैच्छिक कर संग्रह के संबंध का रिकॉर्ड मिलता है।

विश्वामित्र का टीला स्थल से एक विष्णु मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए हैं। पुरातत्व और संग्रहालय विभाग, हरियाणा के श्री डी.एस. मलिक के निर्देशन में साइट का वैज्ञानिक रूप से उत्खनन किया गया था। स्थल के वैज्ञानिक उत्खनन से रामायण और महाभारत के दृश्यों को दर्शाते हुए सुंदर पत्थर की मूर्तियां मिलीं जो हरियाणा में इस तरह की पहली खोज है। पकी हुई ईंटों से बने एक प्राचीन मंदिर के चबूतरे के अवशेष भी मिले हैं। यह क्षेत्र प्रतिहार काल का एकमात्र ज्ञात ईंट का मंदिर है।

ऐसा माना जाता है कि ऋषि विश्वामित्र ने सरस्वती नदी के किनारे इसी स्थान पर घोर तपस्या की।

प्राचीन टीला बालू, कैथल

2300-1700 ईसा पूर्व

कैथल जिला के कलायत में श्री कपिलमुनि तीर्थ पर विराजमान प्राचीन शिव मन्दिर

यह प्राचीन टीला सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित कैथल जिले के बालू गांव से लगभग 2 किमी उत्तर में स्थित है। कैथल जींद राजमार्ग पर एक गांव देबन के पास नहर मार्ग से टीले तक पहुँचा जा सकता है। प्रो. सूरज भान और श्री जिम शाफर ने 1977 में बालू के प्राचीन स्थल की खोज की थी। 1979 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए गए उत्खनन कार्य से तीन संस्कृतियों पूर्व-हड़प्पा, हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा के अनुक्रम का पता चला। उत्खनन से हड़प्पा सांस्कृतिक अनुक्रमों के लगभग 4.50 मीटर मोटे निक्षेप का पता चला। हड़प्पा के बाद की बस्ती को हड़प्पा बस्ती के परित्याग के लंबे समय बाद देखा गया था। साइट पर व्यापक भू-क्षरण दिखाई दे रहा था। हड़प्पा के बाद की संस्कृति की पहचान बारा के बर्तन, मिट्टी या मिट्टी की ईंट की संरचनाओं, भट्ठियों, मोतियों, चूड़ियों और तांबे की वस्तुओं आदि से होती है। सन् 1979 उत्खनन के दौरान हड़प्पा के बाद के स्तरों में नौ भट्ठे या भट्ठियाँ मिली थीं। इस स्थल पर एक बार स्वयं जलधारा फूटी थी। सरस्वती बोर्ड के **CSERS** के निदेशक डॉ. ए.आर. चौधरी जी ने सरस्वती नदी के पैलियो-चैनल की धारा माना है।

बनावली

अवधि I : पूर्व हड़प्पा

फतेहाबाद जिला का गांव बनावली स्थल प्राचीन सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित है, जिसका उल्लेख पुरातत्ववेदा डॉ॰ बनानी भट्टाचार्य जी द्वारा भी किया गया है। उत्खनन से तीन तह में संस्कृति अनुक्रम प्राप्त हुआ है : पूर्व हड़प्पा (प्रारंभिक–हड़प्पा), हड़प्पा और बारा (हड़प्पा के बाद)। इस स्थल की खुदाई डॉ. आर. एस. बिष्ट भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा की गई। पूर्व–हड़प्पा (2600–2400BC) इकट्ठा सुनियोजित घरों के अस्तित्व और ढली हुई ईंटों से बनी एक किलेबंदी की दीवार द्वारा दर्शाया गया है। इस अवधि के मिट्टी के बर्तनों में, पूर्व–हड़प्पा चित्रित रूपांकन सरल और विरल हो गए और सफेद वर्णक का उपयोग उत्तरोत्तर कम लोकप्रिय हो गया। हड़प्पा के चीनी मिट्टी के बर्तनों की तुलना में मिट्टी के बर्तनों की बारीक किस्म में बेसिन, ट्रफ, जार और कटोरे शामिल हैं। अन्य खोजों में अर्ध कीमती पत्थरों के मोती, टेराकोटा, स्टीटाइट और मिट्टी की चूड़ियाँ, खोल, फाइनेस और तांबे शामिल हैं। हड़प्पा संस्कृति (2400–1900BC) रेडियल पैटर्न में रखी गई एक सुनियोजित किलेबंद टाउनशिप की उपस्थिति से चिह्मित है। जानवरों और फूलों के डिजाइन से सजाए गए परिष्कृत लाल बर्तन में डिश–ऑन–स्टैंड, 'एस'–आकार का जार, छिद्रित जार, फूलदान, खाना पकाने वाली हांडी, बीकर, बेसिन और प्याला आदि शामिल हैं। टेराकोटा हल मॉडल महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह हड़प्पा संस्कृति में अब तक का पूरा नमूना मिला है। अन्य उल्लेखनीय खोजों में अर्ध–कीमती पत्थरों के मोती और चूड़ियाँ, टेराकोटा और खोल, चर्ट ब्लेड, हाथीदांत और हड्डी के तौल और जुआरी, सोने में मोती और पन्नी, टेराकोटा जानवरों की मूर्तियाँ, खुदा हुआ स्टीटाइट सील और टेराकोटा सीलिंग, कॉपर फिश–हुक हैं व जले हुए जौ के दाने आदि हैं। बारा कल्चर (1900–1700BC) को सबसे प्रतिष्ठित मिट्टी के बर्तनों द्वारा दर्शाया गया है जो मजबूत और भारी बर्तन हैं, जो महीन मिट्टी से बने होते हैं व सावधानी से पके हुए होते हैं और तैलीय चमक की गहरी टोंड पर्ची से तैयार होते हैं। छोटी खोज बहुत कम हैं और टेराकोटा नोड्यूल और केक को छोड़कर सभी सांस्कृतिक हड़प्पा वस्तुओं को बाहर कर देते हैं।

स्थल का दौरा करते हुए डॉ. बनानी भट्टाचार्य व उपाध्यक्ष श्री धुमन सिंह किरमच व अन्य ग्रामवासी

भिरड़ाना

अवधि आईए :
हकरा माल संस्कृति

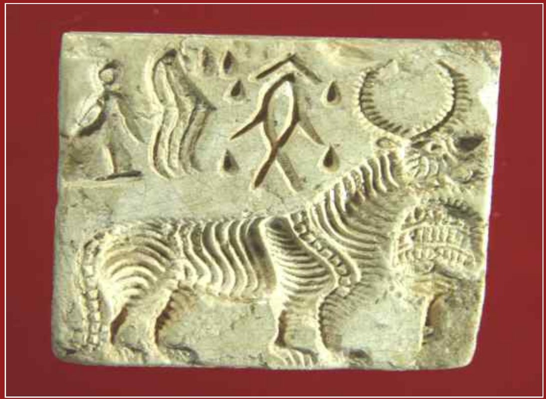

डॉ. बनानी भट्टाचार्य एवं श्री धुमन सिंह किरमच पुरातात्विक स्थल से नमूने लेते हुए

प्राचीन स्थल, भिरड़ाना, फतेहाबाद
7570–6200 ईसा पूर्व

पुरातात्विक विभागा व डॉ. बनानी भट्टाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार भिरड़ाना या बिरहाना प्राचीन सरस्वती नदी के तट पर, भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे पुराना हड़प्पा सभ्यता स्थल है, जो 7570–6200 ईसा पूर्व का है। उत्खनन से तीन सांस्कृतिक अनुक्रम प्राप्त हुए है जिसे पूर्व–हड़प्पा, प्रारंभिक हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा काल के रूप में जाना जाता है।

इस स्थल पर पहली बार खुदाई में हाकरा वेयर कल्चर देखा गया था। विभिन्न उत्खनन और आवास परतों से प्राप्त परावशेषों में तांबे की वस्तुएं जैसे छेनी, सैल्ट्स, एरो हेड्स, स्पीयर हेड्स शामिल हैं। स्टीटाइट, फैयेंस, टेराकोटा, अर्ध–कीमती पत्थरों और खोल के मोतीय तांबे और टेराकोटा की चूड़ियाँ, विभिन्न टेराकोटा वस्तुओं का भी पता लगाया गया था।

सांस्कृतिक संयोजन में मिट्टी के बर्तनों के विभिन्न प्रकार व आकार और लाल बर्तन, चॉकलेट–स्लिप्ड वेयर, ग्रे वेयर, बफ–वेयर, मड–एप्लिक वेयर आदि शामिल हैं। उत्खनन से गेहूं और जौ के जले हुए दाने भी पाए गए हैं। एक महिला नृत्य करने वाली लड़की को एक बर्तन पर भित्तिचित्र के रूप में उकेरा गया है जो साइट से अद्वितीय खोजों में से एक है।

कुणाल हरियाणा

अवधि I : प्रारंभिक हड़प्पा (3500–2500 ईसा पूर्व)

प्राचीन स्थल, कुणाल, फतेहाबाद
5700–6000 ईसा पूर्व

सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित इस पुरास्थल की खोज वर्ष 1981 में की गई थी। यह पूर्व हड़प्पा स्थल, 8000 वर्ष पुराना है। वर्ष 1986 में यहाँ उत्खनन शुरू किया गया था। कुछ अंतराल वर्षों के बाद, 2018–19 तक यहाँ उत्खनन किया गया था। वर्तमान के उत्खनन में लगातार तीन चरण प्राप्त हुए हैं। गड्ढे के आकार से लेकर वर्गाकार और आयताकार मिट्टी के ईंट के घरों तक, जो भारत में पूर्व हड़प्पा संस्कृति के सबसे पुराने अवशेष माने जाते हैं, प्राप्त हुए। विभिन्न उत्खनन और आवास परतों से प्राप्त पुरावशेषों में तांबे की वस्तुएं जैसे छेनी, सेल्ट्स, घरो हेड्स, स्पीयर हेड्स शामिल हैं। स्टीटाइट, फैयेंस, टेराकोटा, अर्ध–कीमती पत्थरों और खोल के मोती; तांबे और टेराकोटा की चूड़ियाँ; विभिन्न टेराकोटा वस्तुओं का भी पता लगाया गया था। सांस्कृतिक संयोजन में मिट्टी के बर्तनों के विभिन्न प्रकार व आकार और लाल बर्तन, चॉकलेट–स्लिप्ड वेयर, ग्रे वेयर, बफ–वेयर, मड–एप्लिक वेयर आदि शामिल हैं। साथ ही तांबे की भट्टी, स्टीटाइट मनके बनाने की कार्यशाला और भट्ठा भी मिला है। पुरास्थल से प्राप्त हार के सोने के मोती, एक बाजूबंद और कुछ चूड़ियों के टुकड़े और अर्ध कीमती पत्थरों के मोतियों सहित राजसी वस्तुओं का एक संग्रह हरियाणा के क्षेत्र में अपनी तरह का पहला है। पुरास्थल से चांदी की उल्लेखनीय वस्तुएं भी मिली हैं।

मिताथल

सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित मिताथल, एक हड़प्पा स्थल है। यह भिवानी जिले की भिवानी तहसील में स्थित है। यह जिला मुख्यालय भिवानी से 12 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। एक प्रारंभिक चरण की पहचान की गई जो कि चौतांग और यमुना नदियों के बीच एक चैनल के पास जलोढ़ मैदान और कलियाना और तोशाम के पहाड़ी इलाकों से 25 से 30 किलोमीटर (16 से 19 मील) दूर है, जो क्रमशः क्वार्टजाइट और मेटा-ज्वालामुखी चट्टानों में समृद्ध हैं। कालीबंगन से संबंधित एक पूर्व-परिपक्व हड़प्पा चरण की पहचान की। इसके अलावा साइट पर एक प्रारंभिक चरण की पहचान की हड़प्पा, जिसे 'पूर्व रक्षा', या 'कोट दीजी चरण' के रूप में वर्णित किया गया है। इसे हरियाणा में 'स्वर्गीय सिसवाल संस्कृति' के नाम से भी जाना जाता है।

(1800 ईसा पूर्व - 1400 ईसा पूर्व)

राखीगढ़ी हरियाणा

3200–2700 ईसा पूर्व प्रारंभिक हड़प्पा 2700–1800 ईसा पूर्व परिपक्व हड़प्पा 1997 और 2000 पुरातत्वविद् अमरेंद्र नाथ (पूर्व–रचनात्मक, प्रारंभिक हड़प्पा, और परिपक्व हड़प्पा)। माउंड आरजीआर –6 ने निम्नलिखित दो डेटिंग के साथ सोठी चरण के रूप में नामित एक पूर्व–रचनात्मक चरण का खुलासा किया: 6420 +/- 110 और 6230+/-320 वर्ष वर्तमान से पहले, 4470 +/- 110 ईसा पूर्व और 4280+/-320 ईसा पूर्व में परिवर्तित

हरियाणा सरस्वती बोर्ड के द्वारा हरियाणा में स्थित प्रसिद्ध हड़प्पाकालीन स्थल राखीगढ़ी को विश्व धरोहर में शामिल करने के लिए यूनेस्को को पत्र की कॉपी लिखा गया है।

माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी व श्री देवेन्द्र बबली, मंत्री पुरातत्व विभाग, स्थल का दौरा करते हुए

राखीगढ़ी का प्राचीन स्थल हिसार जिले में नारनौंद तहसील में स्थित है। हिसार, हरियाणा हिसार शहर से उत्तर–पश्चिम की ओर 57 किमी और चंडीगढ़ से 206 किमी की दूरी पर स्थित है। राखीखास और राखीशाहपुर के गांवों को सामूहिक रूप से प्राचीन स्थल राखीगढ़ी के रूप में जाना जाता है। मौजूदा मान्यता के अनुसार, यह स्थल सरस्वती नदी के पश्चिम किनारे पर स्थित था, और यह पुरा–चैनल की बारहमासी नदी से जुड़ा हो सकता है जैसे सरस्वती नदी की शाखा यहाँ से बहती रही हो। इससे पहले, RGR-I से RGR-VII नाम के सात टीले की पहचान की गई थी, हालांकि हाल के सर्वेक्षणों में दो और टीले यानी RGR-VII और RGR-IX के अस्तित्व का सुझाव दिया गया है जो राखीगढ़ी से 1.5 से 2 किमी दूर दो अलग–अलग दिशाओं में हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा लगातार तीन फील्ड सीजन यानी 1997 से 2000 के लिए साइट की खुदाई की गई थी। डेक्कन कॉलेज, पुणे ने मुख्य रूप से टीले नंबर 7, 4 और 2 पर फील्ड सीजन 2013–2016 के दौरान खुदाई की।

वर्ष 2021 में भी इस स्थल की खुदाई की गई थी जिसमें यह थयूरी और पुख्ता हुई कि आर्यन यही के रहने वाले थे।

वर्ष 1996 के दौरान एएसआई द्वारा टीले संख्या 1, 2, 3, और 5 को संरक्षण में लिया गया था। टीलों की संख्या 6 (पूर्व हड़प्पा टीला) और टीला संख्या 7 (दफन टीला) का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्रक्रियाधीन है। लगभग 12000 की संयुक्त आबादी वाले राखीशाहपुर और राखीखास के जुड़वां गांव साइट पर बसे हुए हैं।

विभिन्न टीलों का विवरण इस प्रकार है–

RGR-I पूर्व–पश्चिम में फैला हुआ मैदान आसपास के मैदानों से 6 मीटर ऊंचा है। यह अंडाकार टीला राखीशाहपुर और राखीखास गांवों के उत्तरी छोर पर स्थित है। इस टीले पर खुदाई से लगभग तीन हजार के साथ एक लैपिडरी वर्कशॉप के साक्ष्य मिले। परिपक्व हड़प्पा काल के अधूरे मनके भी प्राप्त हुए हैं

RGR-II स्पष्ट रूप से एक गढ़ी (टीला) प्रतीत होता है जो लगभग 14 मीटर ऊंचा है और आकार में समलम्बाकार है। यह RGR-I के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। उत्खनन से परिपक्व हड़प्पा काल की एक बाड़े की दीवार के साथ–साथ टीले के दक्षिण–पश्चिमी ढलान की ओर एक प्रवेश द्वार और गार्ड कोशिकाओं के साक्ष्य का पता चला।

जनवरी 2023 में समाचार पत्र दैनिक जागरण द्वारा चल रही खुदाई का चित्र प्रकाशित किया गया।

RGR-III : RGR-2 के पूर्व में स्थित है। यह आकार में अंडाकार है और आसपास के मैदानों से 12 मीटर की ऊंचाई तक उठता है।

RGR-IV : इस टीले से उत्तर-दक्षिण में चबूतरे और सड़कों के रूप में परिपक्व हड़प्पा काल के संरचनात्मक साक्ष्य देखे गए। घरों का निर्माण मिट्टी-ईंटों से किया गया था और पकी हुई ईंटें नालियों, कुओं आदि तक ही सीमित थीं। हड्डी और हाथीदांत शिल्प गतिविधियों के साक्ष्य के रूप में इस टीले से परिपक्व हड़प्पा काल के तैयार और अधूरे अस्थि बिंदु, कंघी, सुई, उत्कीर्णन आदि मिले हैं।

RGR-VI : RGR-1 के पूर्व में स्थित टीले की ऊंचाई लगभग 5 मीटर है। इस टीले की खुदाई से प्रारंभिक हड़प्पा काल के साक्ष्य धूप में सुखाई गई ईंटों से बने घर के परिसर के रूप में सामने आए।

RGR-VII : लगभग 200 मीटर की दूरी पर स्थित एक दफन स्थल। आरजीआर-1 के उत्तर की सूचना श्री अमरेन्द्र द्वारा दी गई थी। वर्ष 1999-2000 में इस टीले की खुदाई के दौरान परिपक्व हड़प्पा काल के एक कब्रिस्तान के प्रमाण मिले हैं। इस टीले से उत्तर-दक्षिण

अभिविन्यास के साथ, कब्र के सामान के साथ ग्यारह कब्रों के अस्थि-पिजंर की सूचना मिली थी। अधिकांश कब्रों में विशिष्ट बर्तन थे और उनमें से कुछ में व्यक्तिगत गहने थे। बाद में डेक्कन कॉलेज, पुणे द्वारा वर्ष 2013-16 के दौरान की गई खुदाई के दौरान, 53 कब्रें उजागर हुईं। उत्खनन से मुख्य रूप से हड़प्पावासियों के अन्तिम संस्कारों के रीति-रिवाजों का पता चला।

RGR-VIII और RGR-IX : दोनों टीले RGR-8 और RGR-9 : दोनों टीले 25 हेक्टेयर को मापते हैं और क्रमशः मुख्य स्थल के पूर्व और पश्चिम में स्थित हैं। ये संरक्षित टीले से विपरीत दिशाओं में 2 किमी से अधिक दूर हैं।

डीएनए ही नहीं, हमारी शक्ल भी मिलती है राखीगढ़ी में मिले मानव कंकालों से

हम जैसे दिखते थे हड़प्पन 'जन'

कैसे दिया शक्ल को आकार

राखीगढ़ी में तत्काल 2023 में खुदाई के काम की जानकारी

भारत का 8000 वर्ष पुराना नमस्कार

आठ हजार वर्ष पुरानी सभ्यता को अपने में समेटे राखीगढ़ी से प्राप्त नमस्कार मुद्रा वाली यह दुर्लभ मूर्ति विश्व को अपना वह परिचय नहीं दे सकी है, जिसके योग्य वह है। आज जब विश्व हैंड शेक को त्याग नमस्कार कर रहा है, अभिवादन का यह प्राचीनतम प्रमाण अहम हो जाता है। यह मूर्ति इस बात को भी सिद्ध कर देती है कि आर्य विदेशी नहीं थे।

हरियाणा के हिसार स्थित राखीगढ़ी कस्बे में टीलों के नीचे छह से आठ हजार वर्ष पुरानी सभ्यता के अवशेष मिले हैं। यहां अब तक मिले विविध साक्ष्यों में सबसे महत्त्वपूर्ण है नमस्कार करते हुए योगी की मूर्ति। महत्त्वपूर्ण इसलिए कि सभ्यता के विकासक्रम में अभिवादन का यह साक्ष्य प्राचीनतम और दुर्लभ है। दूसरा, भारतीय योग परंपरा में वर्णित एक प्रमुख योगासन पद्मासन की मुद्रा में बैठे हुए योगी को इस प्रतिमा में अपनी दोनों हथेलियों को नमस्कार मुद्रा में जोड़े हुए दर्शाया गया है। इससे पश्चिम के विद्वानों का वह दावा औंधे मुंह गिर जाता है, जो आर्यों को विदेशी मूल का बताता आया है। यद्यपि, सभ्यता और इतिहास के इस महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक प्रमाण को भारत विश्व के सम्मुख उस प्रकार नहीं रख सका, जिसकी आवश्यकता है। इस ओर हमारा ध्यान रविवार को तब गया, जब यहां पुरातत्व संबंधित एक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा था। इसके बाद हमने पुरातत्वविदों और इतिहासकारों से विवरण जुटाया।

राजस्थान
कालीबंगा

पुरातात्विक विभाग हरियाणा की निदेशक डॉ. बनानी भट्टाचार्य जी के अनुसार कालीबंगा शहर जो 29-47°N 74-13°E पर घग्गर नदी (घग्गर–हकरा नदी) के बाएं या दक्षिणी किनारे पर स्थित है। तहसील पीलीबंगा में, हनुमानगढ़ जिले में सूरतगढ़ और हनुमानगढ़ के बीच, राजस्थान, भारत 205 किमी. बीकानेर से इसे दृषद्वती और सरस्वती नदियों के संगम पर भूमि के त्रिकोण में स्थापित होने के रूप में भी पहचाना जाता है। सबसे पहले लुइगी टेसीटोरी ने इस स्थल की पहचान की थी। कालीबंगा की उत्खनन रिपोर्ट पूरी तरह से 2003 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा खुदाई के पूरा होने के 34 साल बाद प्रकाशित हुई थी। रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला कि कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता की एक प्रमुख प्रांतीय राजधानी थी। कालीबंगा अपनी अनूठी अग्नि वेदियों और ''दुनिया के सबसे पुराने प्रमाणित जुताई वाले खेत'' द्वारा प्रतिष्ठित है। यह लगभग 2900 ईसा पूर्व कालीबंगा का क्षेत्र विकसित हुआ जिसे एक नियोजित शहर माना जा सकता है कालीबंगा में यह

प्रारंभिक हड़प्पा चरण सोठी–सिसवाल संस्कृति से संबंधित है। हड़प्पा पूर्व संस्कृति के निशान केवल पश्चिमी टीले के निचले स्तरों पर पाए गए हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार, सिंधु घाटी संस्कृति प्रोटो–हड़प्पा युग (3500 ईसा पूर्व – 2500 ईसा पूर्व) से हड़प्पा युग (2500 ईसा पूर्व – 1750 ईसा पूर्व) तक मौजूद थी। इस पहले के चरण को कालीबंगा–I (KLB-I) या अवधि-I का नाम दिया गया है। मिट्टी के बर्तनों की समानता कालीबंगा-I को सोठी–सिसवाल संस्कृति से जोड़ती है क्योंकि इस मिट्टी के बर्तनों को बाद में उत्तर पश्चिमी भारत के सोठी गांव में खोजा गया था। कालीबंगा का कोट दीजी संस्कृति (सोठी–सिसवाल से संबंधित) से भी संबंध है। कालीबंगा में पाए जाने वाले प्रारंभिक हड़प्पा चरण के मिट्टी के बर्तनों को भारतीय उपमहाद्वीप में चीनी मिट्टी के अध्ययन के लिए एक डेटम लाइन बनाने के लिए वर्गीत किया गया है, जिसे कालीबंगा के छह कपड़े के रूप में जाना जाता है। कपड़े ए, बी, और डी को रेडवेयर के रूप में वर्गीकृत किया गया है,

फैब्रिक सी मिट्टी के बर्तनों को बैंगनी और काला और काले और लाल बर्तन के उपप्रकार के रूप में वर्गीकृत किया गया है। कालीबंगा के छह कपड़े इस प्रारंभिक हड़प्पा चरण के मिट्टी के बर्तनों पर विशिष्ट चिह्न का उल्लेख करते हैं, जिसमें ए, बी, सी, डी, ई और एफ लेबल वाले छह कपड़े होते हैं, जिन्हें बाद में सोठी–सिसवाल संस्कृति से संबंधित सोठी के नजदीकी स्थल पर भी पहचाना गया था। प्रारंभिक हड़प्पा चरण का एक उपप्रकार है।

कालीबंगा एई के छह कपड़े इस प्रकार हैं, फैब्रिक ए, बी और डी को एक साथ जोड़ा जा सकता है। उन्हें लाल रंग से रंगा गया है। कुम्हार के पहिये के उपयोग के बावजूद कपड़ा–ए–लापरवाही से भरा हुआ है। इसमें हल्के–काले रंग में डिजाइन होते हैं, जिन्हें अक्सर सफेद रेखाओं से सजाया जाता है। रेखाएँ, अर्धवृत्त, जालियाँ, कीट, फूल, पत्ते, पेड़ और वर्ग पसंदीदा रूपांकन थे। फैब्रिक बी फिनिशिंग में उल्लेखनीय सुधार दिखाता है, लेकिन निचले आधे हिस्से को जानबूझकर खुरदरा किया गया था। लाल रंग की पृष्ठभूमि पर फूलों, जानवरों को काले रंग से रंगा गया था। फैब्रिक डी में कुछ में झुकी हुई रेखाओं या अर्धवृत्तों के डिजाइन थे, जबकि अधिकांश बर्तन सादे थे। लेकिन फैब्रिक–सी के बर्तन मोटे और मजबूत थे।

फैब्रिक सी को काले रंग में डिजाइन के साथ, बैंगनी रंग और महीन पॉलिश द्वारा प्रतिष्ठित किया गया था; यह परिष्करण में सबसे अच्छा प्रोटो–हड़प्पा मिट्टी के बर्तन हैं। फैब्रिक E हल्के रंग का था और फैब्रिक F ग्रे रंग का था।

मोहनजोदड़ो

सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर विकसित सभ्यता है।

मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध में बसा दुनिया का सबसे पुराना माना जाने वाला शहर है। यह प्राचीन भारतीय संस्कृति का सबसे पुराना प्रतीक है। यह सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है, जो सिंधु नदी के छोर पर बसा हुआ है। तत्कालीन समय में बना मोहनजोदड़ो अपनी नगर योजना, वास्तुकला और जल निकासी व्यवस्था में आज के किसी भी विकसित शहर से कम नहीं है और इसे याद करने का यह एक बड़ा कारण है।

1922 में राखलदास बैनर्जी ने इस शहर की खोज की थी, जिसमें लगभग 40 वर्ष का समय लग गया था, इस शहर की खोज के बाद लोगों के बीच मोहनजोदड़ो के बारे में जानने की इच्छा और भी बढ़ गयी थी।

मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि मोहनजोदड़ो लगभग 5,500 साल पुराना शहर है। मगर 'नेचर मैगजीन' में प्रकाशित रिपोर्ट की मानें तो यह शहर लगभग 8000 साल पुराना है। यूनेस्को ने 1980 में मोहनजोदड़ो को दुनिया की प्राचीन धरोहर की सूची में शामिल किया था।

शहर का विकास

मोहनजोदड़ो एक सिन्धी शब्द है जिसका अर्थ 'मुर्दों का पहाड़' होता है, लेकिन इस शहर के सही नाम का प्रमाण अब तक नहीं मिल पाया है। हालांकि, इतिहासकारों के मुताबिक इस शहर का असली नाम कुक्कुतार्मा **Kukkutarma** है। मोहनजोदड़ो सभ्यता का विकास लगभग 2600 ई. में हुआ था।

ऐसा माना जाता है कि मोहनजोदड़ो प्राचीन मिस्र व मेसोपोटामिया की समकालीन सभ्यता थी। यह अन्य शहरों के साथ संचार का प्राथमिक साधन था। इस कारण यहां अन्य

शहरों से लोग आसानी से आते–जाते थे। यह शहर कृषि क्षेत्र में अधिक प्रचलित था। मोहनजोदड़ो के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं है, लेकिन अब तक हुए शोध से इसकी वास्तविकता का अनुमान लगाया गया है।

शहर का निर्माण

ऐसा माना जाता है कि मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का मुख्य केंद्र था। उस समय में मोहनजोदड़ो एक विकसित और खुशहाल शहर था। इस शहर की निर्माण योजना, वास्तुकला और जल निकासी योजना से यह शहर तत्कालीन समय के शहरों से ज्यादा विकासशील माना जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता के पास रहने वाले निवासियों के लिए यह शहर बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। इतिहासकारों के मुताबिक इस शहर में खेती से प्राप्त सामानों को रखने का प्रायोजित स्थान था। सामानों को पानी से बचाने का भी पूरा प्रबंध था। यहां बने घरों में पक्की ईंटों से बने स्नानघर और शौचालय भी मौजूद थे।

मोहनजोदड़ो में पानी के निकासी के लिए बनी

नालियों और स्नानघरों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तत्कालीन समय के लोग वास्तुकला में माहिर थे। विशेषज्ञों की राय में मोहनजोदड़ो बाकी शहरों की तुलना में बेहतर था।

शहर की सड़कें और वास्तुकला

मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के तट पर सबसे पुराना योजनाबद्ध शहर है। हालांकि इस युग की वास्तुकला की मिसाल इसके आधुनिक निर्माण कार्य से देखा जा सकता है। शहर की सड़कें बिल्कुल सही और सटीक तरीके से बनाई गई हैं।

कला संस्कृति

कई शोधकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि मोहनजोदड़ो के

निवासी कला और संस्कृति में काफी आधुनिक थे। मोहनजोदड़ो अपनी कला के लिए काफी लोकप्रिय था। मोहनजोदड़ो के समय में टेराकोटा से बने विभिन्न कलात्मक पैटर्न भी पाए गए हैं।

वहां के लोग आभूषण के उपयोग के लिए प्रचलित थे। हार, झुमके, अंगूठी, कंगन जैसे आभूषण का इस्तेमाल महिलाएं करती थी।

इतना ही नहीं मोहनजोदड़ो के निवासी नाच-गाने में भी काफी मशहूर थे। इन सब चीजों के साथ-साथ वह साफ सफाई का भी ध्यान रखते थे। इस शहर के निवासी, साफ सफाई का विशेष ख्याल रखते थे जो सही मायने में उनकी बुद्धि को दर्शाता है। विशेषज्ञों की

मानें तो मोहनजोदड़ो काफी समृद्ध क्षेत्र था जहां हाथी के दांत, पत्थर की विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ मौजूद थीं।

हड़प्पा पाकिस्तान

सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर विकसित सभ्यता है।

सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर विकसित सभ्यता है और 2023 में हरियाणा में आया बाढ़ का पानी सिरसा औटू हैड से होते हुए राजस्थान के हनुमानगढ़, गंगा नगर व अनूपगढ़ से होते हुए पाकिस्तान के इसी पैलियों चैनल तक सरस्वती नदी का पानी पहुँचा।

हड़प्पा सिन्धु घाटी सभ्यता के सबसे महत्त्वपूर्ण शहरों में से एक था। सिन्धु सभ्यता का प्रभाव काल 3300–1300 ई.सा. माना जाता हैं। यह सभ्यता 2600–1300 ईसा पूर्व अपने चरम शिखर पर थी। सिन्धु सभ्यता का मुख्य प्रभाव उत्तर पश्चिम एशिया में दिखाई देता हैं जो कि अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान के अंतर्गत आता हैं।

हड़प्पा नगर की खोज

हड़प्पा नगर के अवशेष पंजाब के मांटेगोमेरी जिले (पाकिस्तान) में प्राप्त हुए थे। यह साहिवाल शहर से 20 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। इस स्थल का नाम हड़प्पा होने के कारण इसे हड़प्पा सभ्यता नाम से

पुकारा जाने लगा। उस काल में सिन्धु सभ्यता के इस शहर का असल नाम क्या था यह आज तक रहस्य हैं।

इस नगर की खोज 1921 में दयाराम साहनी ने की थी। दयाराम साहनी के अलावा माधव स्वरूप और मार्तिमर विहलर ने इस जगह खुदाई का काम पुरातत्व विभाग की ओर से शुरू करवाया था। हड़प्पा सभ्यता को सरस्वती संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह सभ्यता जिस घग्गर–हकरा नदी के सबसे नजदीक हैं, उसे पुरातन साहित्य में सरस्वती नदी भी माना जाता हैं।

नगरीय प्रणाली

इस नगर की नगरीय प्रणाली हर इतिहासकार को इस नगर के बारे में और जानने के लिए आकर्षित करती है। हड़प्पा में लोगों का जीवन काफी शांतिपूर्ण और सुखद था। अवशेष को देखकर यही लगता हैं कि इस नगर के

लोग ईंटों से बने मकानों में रहा करते थे। जिसकी चौड़ाई 15 फुट और लम्बाई 90 के आस-पास हुआ करती थी। इस नगर को काफी सुनियोजित तरह से बनाया गया था। सड़क के दोनों ओर घर हुआ करते थे। अनाज का भण्डार रखने से एक अलग भवन तैयार किया जाता था।

गढ़ (Citadel)

हड़प्पा नगर की नगरीय प्रणाली से जुड़ी एक खास बात यह हैं कि इस नगर में मकान बनाने के लिए भट्टों में बनी ईंटों का इस्तेमाल होता हैं। नगर की मुख्य इमारतों जैसे भण्डारण, मुख्य किला (जहाँ सभी प्रशासनिक कार्य किये जाते थे) को गढ़ के रूप

में नगर से अलग और बेहद ही सुरक्षित जगह पर बनाया जाता था. जिससे गढ़ में आक्रमण के समय या सिन्धु नदी में बाढ़ आने के समय अनाज और दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जा सके। यह पूरी संरचना का आकार 1400 फीट लम्बा, 600 फीट चौड़ा और 40 फीट की ऊँचाई का था और यह गढ़ 45 फीट मोटी दीवारों से सुरक्षित बनाया जाता था।

हड़प्पा नगर की आर्थिक स्थिति

हड़प्पा सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण शहर

था। यह आर्थिक दृष्टि से काफी संपन्न था। यहाँ पर आसपास के लोग ही नहीं अपितु दूर दूर से व्यापारी अपना सामान बेचने और खरीदने आया करते थे। उस काल में मुद्रा की खोज नहीं हुई थी इसीलिए व्यापार के लिए लोग वस्तु विनिमय का सहारा लिया करते थे

हड़प्पा सभ्यता सामाजिक रूप से तेजी से बढ़ रही सभ्यता थी। व्यापार और अर्थव्यवस्था की सफलता ही वजह थी जिसके कारण यहाँ व्यापार में स्टाम्प सील का इस्तेमाल किया जाता था. इसका आकार 1-2 वर्ग इंच का होता था। इस पर हाथी, हिरण का निशान बना होता था

व्यापार के लिए बैल गाड़ियों और नावों का इस्तेमाल किया जाता था। यही उस समय परिवहन का मुख्य स्त्रोत था।

हड़प्पा नगर में पहनावा

यहाँ लोग सूती और ऊनी कपडे पहनना पसंद करते थे। महिलाओं में आभूषणों की काफी लोकप्रियता थी।

हड़प्पा की खुदाई में ऐसे कई आभूषण मिले हैं जो इस बात का इशारा करते हैं कि इस सभ्यता में सोने और चांदी से बने आभूषण चलन में थे। मोहनजोदरो में जो स्त्री **dancing Lady** की मूर्ति मिली हैं उस पर भी गहनों की झलक देखी जा सकती हैं। आमतौर पर लोग पहनावे में दो वस्त्रों का प्रयोग करते थे. जोकि शरीर के ऊपरी और निचले हिस्से को ढ़कने में मदद करता था।

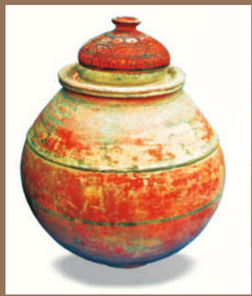

लोथल
गुजरात

सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर विकसित सभ्यता है।

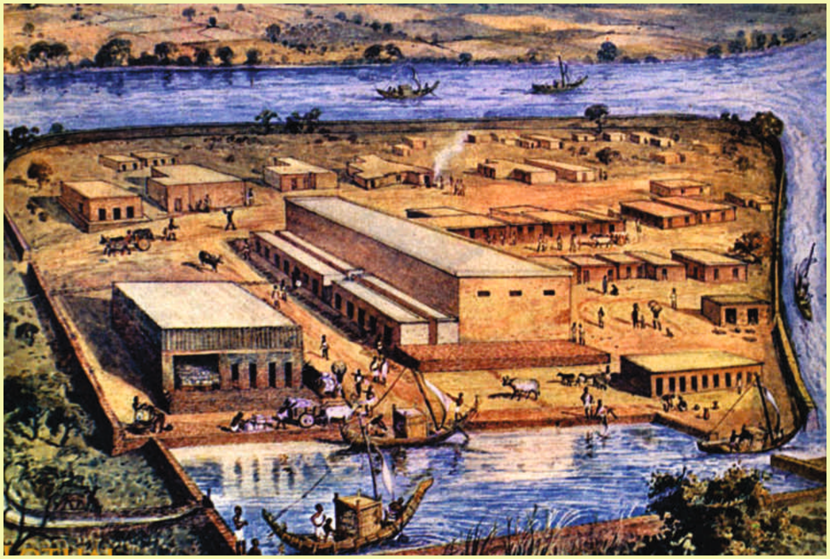

लोथल (गुजरात), प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में से एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बंदरगाह शहर है। लगभग 2400 ईसा पूर्व पुराना यह शहर भारत के राज्य गुजरात के भाल क्षेत्र में स्थित है और इसकी खोज सन् 1954 में हुई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस शहर की खुदाई 13 फरवरी 1955 से लेकर 19 मई 1956 के मध्य की थी। लोथल, अहमदाबाद जिले के धोलका तालुका के गाँव सरागवाला के निकट स्थित है। अहमदाबाद-भावनगर रेलवे लाइन के स्टेशन लोथल भुरखी से यह दक्षिण पूर्व दिशा में 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लोथल अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर और धोलका शहरों से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा है जिनमें से सबसे करीबी शहर धोलका और बड़ोदरा हैं। लोथल को मिनी हड़प्पा के नाम से भी जाना जाता है।

लोथल गोदी जो कि विश्व की प्राचीनतम ज्ञात गोदी है, सिंध में स्थित हड़प्पा के शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच बहने वाली साबरमती नदी की प्राचीन धारा के द्वारा शहर से जुड़ी थी, जो इन स्थानों के मध्य एक व्यापार मार्ग था। उस समय इसके आसपास का कच्छ का मरुस्थल, अरब सागर का एक हिस्सा था। प्राचीन समय में यह एक महत्त्वपूर्ण और संपन्न व्यापार केंद्र था जहाँ से मोती, जवाहरात और कीमती गहने पश्चिम एशिया और अफ्रीका के सुदूर कोनों तक भेजे जाते थे। मनकों को बनाने की तकनीक और उपकरणों का समुचित विकास हो चुका था और यहाँ का धातु विज्ञान पिछले 4000 साल से भी अधिक से समय की कसौटी पर खरा उतरा था।

1961 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने खुदाई का कार्य फिर से शुरू किया और टीले के पूर्वी और पश्चिमी पक्षों की खुदाई के दौरान उन वाहिकाओं और नालों को खोद निकाला जो नदी के द्वारा गोदी से जुड़े थे। प्रमुख खोजों में एक टीला, एक नगर, एक बाजार स्थल और एक गोदी शामिल है। उत्खनन स्थल के पास ही एक पुरातत्व संग्रहालय स्थित है जिसमें सिंधु घाटी से प्राप्त वस्तुएं प्रदर्शित की गयी हैं। यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह थी।

गुजरात धोलावीरा

सरस्वती नदी के पैलियों चैनल पर विकसित प्राचीनतम सभ्यता है।

धोलावीरा – सरस्वती नदी प्रोजेक्ट को विश्व में उस समय पहचान मिली जब मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से हड़प्पा कालीन पुरातात्विक स्थल धोलावीरा को 2021 में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया, जो सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर स्थित है।

HARAPPAN SEALS,DHOLAVIRA,{GUJARAT}

धोलावीरा (गुजरात) भारत के गुजरात राज्य के कच्छ जिले की भचाऊ तालुका में स्थित एक पुरातत्व स्थल है। इसका नाम यहाँ से एक किमी दक्षिण में स्थित ग्राम पर पड़ा है, जो राधनपुर से 165 किमी दूर स्थित है। धोलावीरा में सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष और खण्डहर मिलते हैं और यह उस सभ्यता के सबसे बड़े ज्ञात नगरों में से एक था। इस पुरातत्व स्थल को धोलावीरा गांव के निवासी शंभूदान गढ़वी ने 1960 के दशक के प्रारम्भ में खोजा था, जिन्होंने इस स्थान

पर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए वर्षों तक प्रयास किये। भौगोलिक रूप से यह कच्छ के रण पर विस्तारित कच्छ मरुभूमि वन्य अभयारण्य के भीतर खादिरबेट द्वीप पर स्थित है। यह नगर 47 हेक्टर (120 एकड़) के चतुर्भुजीय क्षेत्रफल पर फैला हुआ था। बस्ती से उत्तर में मनसर जलधारा और दक्षिण में मनहर जलधारा है, जो दोनों वर्ष के कुछ महीनों में ही बहती हैं। यहाँ पर आबादी लगभग 2650 ईसापूर्व में आरम्भ हुई और 2100 ईपू के बाद कम होने लगी। कुछ समय इसमें कोई नहीं रहा लेकिन 1450 ईपू से फिर यहाँ लोग बस गए। नए अनुसंधान से संकेत मिलें हैं कि यहाँ अनुमान से भी पहले, 3500 ईपू से लोग बसना आरम्भ हो गए थे और फिर लगातार 1800 ईपू तक आबादी बनी रही। धोलावीरा पांच हजार साल पहले विश्व के सबसे व्यस्त महानगरों में गिना जाता था। इस हड़प्पा कालीन शहर धोलावीरा को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में (2021 चीन में संपन्न यूनेस्को की ऑनलाइन बैठक में) शामिल किया गया है। यह भारत का 40वां विश्व धरोहर स्थल है।

General view of the excavated trenches, the house complexes belonging to the late Harappan period, Castle, (c. 1900-1500 BC) Dholavira

उत्खनन करने से यहाँ शहरी विकास भी हुआ और उत्खनन के दौरान हीरे, मोती, जानवरों की हड्डियों, मिट्टी और पीतल के बर्तन और कई बहुमूल्य रत्न और चीजे भी मिले। आर्कियोलोजिकल सर्वे के अनुसार दक्षिण गुजरात, सिंध, पंजाब और पश्चिम एशिया का मुख्य व्यापार स्थान धोलावीरा ही था।

A pushkarini (stepped tank) in the Castle, Harappan period, Dholavira

वास्तुकला और संस्कृति

माना जाता है की हड़प्पा व लोथल से भी पुरानी जगह धोलावीरा है, यह शहर आयताकार आकार में बसा हुआ

है और तकरीबन 54 एकड़ में फैला हुआ है। कहा जाता है की यहाँ बसने वाले लोग अपने साथ पूरी संस्कृति लेकर ही आये थे। जब धोलावीरा शहर नया-नया बसा ही था तब यहाँ के लोग मिट्टी के बर्तन बनाते थे, पत्थर तोड़ते थे और शंख आदि के मनके बनाते थे।

इस समय के लोगो ने अपने घरो को बनाने के लिये भी मिट्टी से बनी ईंटो का उपयोग किया था। धौलावीरा एक किले, मध्य शहर और निचले शहर से मिलकर बना हुआ है। आज के आधुनिक महानगरों जैसी पक्की गटर व्यवस्था पांच हजार साल पहले धोलावीरा में थी। पूरे

A burial during excavation, Harappan period, Dholavira

नगर में धार्मिक स्थलों के कोई अवशेष नहीं पाये गए थे।

हड़प्पा, मोहन जोदडो, गनेरीवाला, राखीगढी, धोलावीरा तथा लोथल ये छः पुराने महानगर पुरातन संस्कृति के नगर है। जिसमें धोलावीरा और लोथल भारत में स्थित है। इस जगह का खनन पुरातत्त्व विभाग के डॉ. आर. एस. बिस्ट ने किया था। धोलावीरा का 100 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तार था। प्रांतीय अधिकारियों के लिये तथा सामान्य जन के लिये अलग-अलग विभाग थे, जिसमें प्रांत के अधिकारियों का विभाग मजबूत पत्थर की सुरक्षित दीवार से बना था, जो आज भी

दिखाई देता है। अन्य नगरों का निर्माण कच्ची पक्की ईंटों से हुआ है। धोलावीरा का निर्माण चौकोर एवं आयताकार पत्थरों से हुआ है, जो समीप स्थित खदानों से मिलता था। ऐसा लगता है कि धोलावीरा में सभी व्यापारी थे और यह व्यापार का मुख्य केन्द्र था। यह कुबेरपतियों का महानगर था। ऐसा लगता है कि सिन्धु नदी समुद्र से यहाँ मिलती थी। भूकंप के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र ऊँचा-नीचा हो गया। आज के आधुनिक महानगरों जैसी पक्की गटर व्यवस्था पांच हजार साल पहले धोलावीरा में थी। पूरे नगर में धार्मिक स्थलों के कोई अवशेष नहीं पायें गए हैं। इस प्राचीन महानगर में पानी की जो व्यवस्था की गई थी वह अद्‌भुत है। आज के समय में बारिस मुश्किल से होती है। बंजर जमीन के चारो ओर समुद्र का पानी फैला हुआ है। इस महानगर में अंतिम संस्कार की अलग-अलग व्यवस्थाएँ थी।

इस पुस्तक में उपरोक्त सभी पुरातात्विक स्थलों की जानकारी पुरातात्विक विभाग व विभाग की निदेशक डॉ. बनानी भट्टाचार्य जी से प्राप्त की गई।

सरस्वती बोर्ड के अधिकारियों द्वारा राजस्थान और गुजरात दौरे पर ली गई कुछ छायाचित्र

रानी का वाव गुजरात में जिसकी मान्यता है कि इसमें सरस्वती नदी का पानी आता था

धौलावीरा

सरस्वती बोर्ड की टीम द्वारा गुजरात के धौलावीरा का दौरा।

धौलावीरा

धौलावीरा संग्रहालय

बिन्दु सरोवर, सिद्धपुर

धौलावीरा

हरियाणा प्रदेश प्रभारी व राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ सतीश पुनिया जी को अपने निवास स्थान पर शिष्टाचार भेंट प्रेषित की।

पूर्व पुस्तकालय प्रो. डॉ. कार्ल हेंट्ज़े

भारत के पहले पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक

अलेक्जेंडर कनिंघम, सी. एस. आई.

द्वारा

सरस्वती नदी के बारे में दी गई रिपोर्ट

पुरातत्व सर्वेक्षण ऑफ इंडिया

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

चार रिपोर्ट

वर्षों के दौरान बनाया गया

1862-63-64-65

द्वारा

अलेक्जेंडर कनिंघम, सी. एस. आई.

मेजर-जनरल, रॉयल इंजीनियर्स (बंगाल सेवानिवृत्त) :
भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक :
सदस्य, रॉयल एशियाई सोसायटी : माननीय। सदस्य, बंगाल एशियाई समाज :
सदस्य, मानव विज्ञान संस्थान :
सदस्य, संख्यात्मक समाज

~~~~~~~~~~~~~~

वॉल्यूम

~~~~~~~~~~~~~~

''जिसका उद्देश्य योजनाओं, मापों, चित्रों या तस्वीरों और शिलालेखों की प्रतियों द्वारा सचित्र एक सटीक विवरण है, ऐसे अवशेषों का सबसे अधिक सूचना के रूप में, उनके इतिहास के साथ जहां तक यह पता लगाने योग्य हो सकता है, और एक रिकॉर्ड उन परंपराओं के बारे में जो उनके बारे में संरक्षित हैं।''

-लॉर्ड कैनिंग

''भारत में विद्वान दुनिया हमसे जो मांग करती है, वह हमारे बारे में पूरी तरह से निश्चित होना है डेटा, स्मारकीय रिकार्ड को उनके सामने ठीक उसी रूप में रखने के लिए जैसा वह अभी मौजूद है, और करने के लिए इसे ईमानदारी से और शाब्दिक रूप से व्याख्या करें।''

-जेम्स प्रिंसेप

बंगाल एशियाटिक सोसाइटीज जर्नल, 1838, पृष्ठ 227

शिमला :
सरकारी सेंट्रल प्रेस में मुद्रित, 1871
~~~~~~~~~~~~~~

अलैक्जेंडर कनिंघम पुरातत्व सर्वेक्षण ऑफ इण्डिया के प्रथम निदेशक थे। उन्होंने लिखा है कि सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच थानेसर के आसपास का सारा क्षेत्र, कुरुक्षेत्र के नाम से जाना जाता है, जो कि 'कुरु का क्षेत्र या भूमि' है। जैसा कि हमारे ग्रन्थों में भी वर्णित है और कनिंघम ने अपने सर्वे में ऐसे दर्शाया है उनके द्वारा अपनी पुस्तक के कुछ अंश।

कुरुक्षेत्र के चक्र या जिले को धर्म–क्षेत्र या 'पवित्र भूमि' भी कहा जाता है, जो स्पष्ट रूप से ह्वेन सांग के 'ले चंप डू बोन्हूर' का मूल है। उनके समय में तीर्थयात्रा का चक्र 200 ली तक सीमित था, जो कि उनके 10 ली के मूल्यांकन पर 4 कोस की भारतीय योजना 20 कोस के बराबर है। हालाँकि, अकबर के समय में, इसको पहले ही 40 कोस तक बढ़ा दिया गया था और मेरी यात्रा के समय इसे बढ़ाकर 48 कोस कर दिया गया था, हालाँकि 40 कोस सर्किट भी अच्छी तरह से जाना जाता था, और वास्तव में, श्री बॉरिंग द्वारा नोट किया गया है। चीनी तीर्थयात्री द्वारा बताया गया सर्किट 35 या 40 मील से अधिक नहीं हो सकता था, 7 या 8 मील की दूरी पर, योजना के लिए, लेकिन अबुल फजल द्वारा उल्लेखित चक्र 53 मील से कम नहीं हो सकता था, पदशाही के सामान्य मूल्यांकन पर कोस 13 मील की दूरी पर, और सर एच. इलियट के अकबर के कोस के मूल्यांकन पर 2 मील से अधिक की दूरी पर, 100 मील के ऊपर तक बढ़ाया जा सकता है। यह संभव है, वास्तव में तीर्थयात्रियों की संख्या को 400 ली, या 10 योजन, जो 40 कोस, या 80 मील के बराबर है को

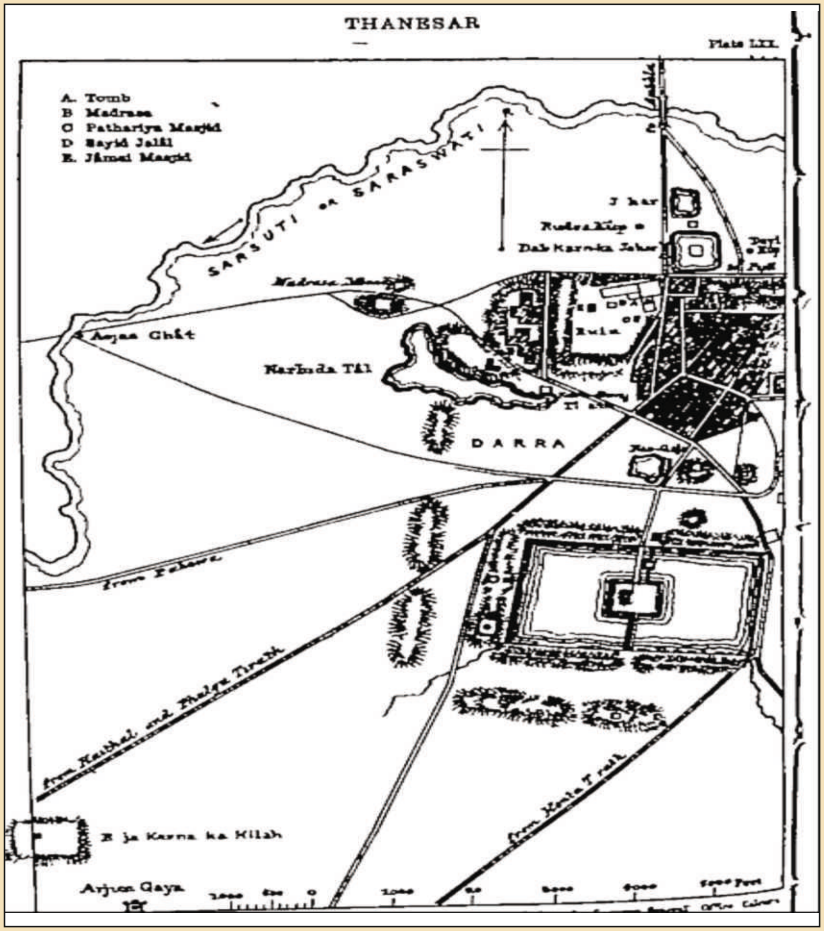

बदलकर और सामान्य भारतीय में अबुल फजल के 40 कोस का अनुमान लगाकर बहुत बारीकी से सहमत होना संभव है। प्रत्येक के बारे में 2 मील की दूरी से मैं स्वयं तीर्थ यात्रियों की संख्या में इस सुधार की आवश्यकता से काफी संतुष्ट हूँ, क्योंकि उनके घेरे की संकीर्ण सीमा न केवल पृथुदक, या सरस्वती पर पिहोवा, साथ ही कौशिकी–संगम में समान रूप से प्रसिद्ध मंदिरों को बंद कर देगी।

या कौशिकी और दृश्यावती नदियों का संगम, लेकिन वास्तव में दृषद्वती को ही बाहर कर देगा, जिसका वामन पुराण में विशेष रूप से पवित्र भूमि की सीमा के भीतर होने का उल्लेख किया गया है।

दिर्घ–क्षेत्रे कुरुक्षेत्र दिर्घा सतंतत्र येरे
नुदयास्त्रे द्रिशद्रत्यः पुण्ययः रुचिरोधाः

''वे कुरुक्षेत्र के विस्तृत क्षेत्र में दृषद्वती के तट पर अपने गुणों के कारण पवित्रा के महान यज्ञ कर रहे थे।'' पवित्र भूमि की दक्षिणी सीमा होने के कारण महाभारत में भी इस नदी का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है।

दक्षिणेण सरस्वतीः दृशदेत्युत्तरेना–चा
ये वसंती कुरुक्षेत्रे ले वसंती त्रिविष्टपे।

''सरस्वती से दक्षिण और दृषद्वती से उत्तर कुरुक्षेत्र में रहने वाले जन्नत में रहते हैं।'' इन ग्रंथों से यह निश्चित है कि कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि ह्वेन सांग के समय में दृषद्वती तक फैली होगी, और इसलिए उसके सर्किट की सीमा 200 ली, या 20 कोस तक गलत होनी चाहिए। महाभारत के एक अन्य अंश में, पवित्र भूमि की सीमाएँ और भी स्पष्ट रूप से विस्तृत हैं।

सरस्वती दृषद्वात्योर्डेरा नुद्योर यदंतरम।
तांडेव निर्मितं–देसन ब्रह्मवर्तन प्रचक्षते।

''वह क्षेत्र, जो देवताओं द्वारा बनाया गया है, जो सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच है, ब्रह्मवर्त कहलाता है।''

हमारे सामने इन ग्रंथों के स्पष्ट बयानों के साथ, थानेसर के पड़ौस में धर्म–क्षेत्र, या पवित्र भूमि की सटीक सीमाओं का पता लगाने में बहुत कम या कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए थी। हमने दो नदियों के नाम दिए हैं जो इसकी उत्तरी और दक्षिणी सीमा बनाती हैं, और पवित्र सर्किट के चारों कोनों पर तीर्थयात्रा के चार स्थानों के नाम हैं। रत्नुका की स्थिति, वास्तव में रतन जक्ष या रत्न यक्ष के रूप में जानी जाती है, जो सर्किट के उत्तर–पूर्व कोने में और थानेसर के पूर्व में चार मील की दूरी पर है। लेकिन अन्य तीन स्थानों की स्थिति को मैं ठीक से सत्यापित करने में असमर्थ रहा हूं,

जैसा कि मुझे मिल सकता है, लेकिन बहुत कम लोग हैं जो उनके बारे में सहमत हैं। कुछ लोगों के अनुसार, अरन्तुक यक्ष, या उत्तर पश्चिम कोना, पश्चिम में केवल 4 मील की दूरी पर, सरसुती पर था।

कुछ ने सफीदन के पड़ौस की ओर इशारा किया, जो कि रक्षसी, या दृषद्वती नदी के दक्षिण में कई मील की दूरी पर है। दूसरों ने कहा कि यह निसंग से केवल 4 कोस था, जिस स्थिति में बजरे नामक एक गाँव है, और कचिका की झील नाराना के खूनी युद्ध–क्षेत्र के करीब है, और रतन जक्ष के दक्षिण में 18 से 20 मील की दूरी पर है और वही पुंडरी के पूर्व में दूरी। जैसा कि किसी को भी जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं लग रहा था, मैं इसकी सही स्थिति की पहचान करने में असमर्थ हूं। जब रतनयक्ष के पास डेरा डाला गया था, तो मेरा गठन था कि दक्षिण–पूर्व कोना दक्षिण में त्रिक जक्ष 40 कोस में था, कि रामहरड़ा त्रिक के पश्चिम में 40 कोस था, और बहार दक्ष रामहरदा के उत्तर में 40 कोस था। चूंकि इससे परिपथ प्रत्येक तरफ 40 कोस के वर्ग में हो जाएगा, और पानीपत से आगे की सीमा को जींद के रामहरदा तक ले जाएगा, मैं संतुष्ट हूं कि यह जींद के राजा को खुश करने के आविष्कार हैं। मैं आगामी ठंड के मौसम में इस विषय पर अपनी पूछताछ पूरी करने का प्रस्ताव करता हूं, लेकिन अब मैं अपने विश्वास को बता सकता हूं कि कुरुक्षेत्र के पवित्र सर्किट की सीमा उस सीमा के भीतर पाई जाएगी जो मैंने यहां इंगित की है।

इसका नाम सरस से लिया गया है, एक ''झील या पूल,'' और रति जिसका अर्थ है ''झीलों या तालों की नदी'', एक ऐसा चरित्र जो अभी भी सहन करता है, क्योंकि यह आंशिक रूप से वर्ष की शुरुआत में सूख जाता है और बन जाता है बिना किसी दृश्य धारा के पूलों का मात्र उत्तराधिकार ब्राह्मणों ने बड़ी चतुराई से इन तालों का लाभ उठाया है, जिनमें से प्रत्येक के साथ उन्होंने एक पौराणिक कथा को इसके साथ जुड़े हुए मंदिर के साथ जोड़ा है। इस प्रकार, सरसुती के तट पर थानेसर के उत्तर में, पूर्व में रतन जकाह से लेकर पश्चिम में अंजस घाट तक, केवल 5 मील की दूरी पर, एक मील में कम से कम 34 तीर्थ, या 7 तीर्थ हैं, यहाँ हर 250 गज की दूरी पर हैं।

किंवदंती के अनुसार, कुष्ठ राजा बेन, जिसका नाम मैंने व्यापक रूप से पांडु के रूप में पाया है, एक दुली में यात्रा करते समय, सरस्वती के तट पर वाहकों द्वारा स्थापित किया गया था। एक कुत्ता नदी पार कर गया और खुद को हिलाने के लिए दुली के पास रुक गया, जब राजा पर कुछ पानी छिड़का गया, जो यह देखकर चकित रह गया कि इस प्रकार गीला टेड तुरंत ठीक हो गया था। वह तुरन्त नदी में गिर गया और अपने कोढ़ से पूरी तरह से शुद्ध हो गया। सरस्वती के जल की शुद्धिकरण गुणवत्ता में लोगों की गहरी आस्था व्यक्त करने के लिए ये दो किंवदंतियाँ अकेले ही पर्याप्त हैं।

राजस्व रिकॉर्ड में सरस्वती नदी (राजस्व रिकॉर्ड में सरस्वती नदी का जो वर्णन किया गया है उसे कानून विधान की नजर में राजस्व रिकॉर्ड किसी भी भूमि का पुख्ता सबूत माना जाता है।)

गांव दर गांव सरस्वती के किनारे और सरस्वती नदी का रिवेन्यू रिकॉर्ड मिला है, जिसमें आज भी सरस्वती की गिरदावरी पाई जाती है, चाहे वह मौजूदा जमाबंदी हो, वह 1888 का कनिंघम के द्वारा दर्शया गया रिवेन्यू रिकॉर्ड हो या जो रिवेन्यू रिकॉर्ड टोडरमल ने इस्तेमाल किया। सभी को जोड़ करके देखा तो पाया कि सरस्वती इस क्षेत्र से बहती रही है। इस क्षेत्र के आदिबद्री से लेकर कैथल तक 75 मंदिर बने हुए हैं। जो मंदिर हैं उनमें करीब-करीब भगवान शिव शंकर के मंदिर, माता सरस्वती के मंदिर, भगवान विष्णु के मंदिर, बाबा केदारनाथ जी और बद्री विशाल जी, आदि बद्री माता सरस्वती का सरस्वती का उद्‌गम स्थल आदिबद्री तथा स्थानेश्वर जी महादेव, थानेश्वर माता भद्रकाली हैं। संगमेश्वर जी महादेव अरुण जिनका नाम संगमेश्वर है इसके पीछे भी एक कहानी है। अरुणा के पास ही जब ऋषि विश्वामित्र व गुरु वशिष्ठ के बीच में झगड़ा हुआ तब झगड़े के कारण सरस्वती नदी का जल लाल हो गया और

(1)

बन्दोबस्त (1917–18) की मुसावी गाँव कोटरखाना ह0ब0 तहसील जिला

नदी का ट्रैक जिन नम्बरान खसरा में है, की सूचि मय विवरण

खसरा नम्बर	खेवट नम्बर	खतौनी नम्बर	कुल रकबा	किसम ज़मीन				मलकीयत की किसम	काश्त की किसम	विवरण
				गै0 मु0 सरस्वती नदी	गै0 मु0 नदी सरस्वती	गै0 मु0 दरड़	मजरुआ या अन्य किसम			
1	131	409	7–10	0–2			7–8	निजि	खुदकाश्त	
2	138	403	6–9	0–9			6–0	निजि	खुदकाश्त	
11	142	437	8–17	0–9			8–8	"	"	
35	138	403	2–1	1–13			0–8	"	"	
39	146	444	0–7	0–5			0–2	शामलात		
52	141	421	2–8	2–8				निजि	मय मुज़ारियान मालकान	
53	143	438	3–16	2–18			0–18	"	"	
54	139	405	3–18	2–0			1–18	"	"	
55	138	403	2–6	2–6				"	"	
75	141	421	2–1	1–9			0–12	"	"	

सभी गांवों का राजस्व रिकॉर्ड सरस्वती बोर्ड के पास उपलब्ध है

विश्वामित्र और वशिष्ट की कथा लिखती है इस लाल रंग को ठीक करने के लिए भगवान शिव ने खुद यहाँ पर सरस्वती, अरुणा, वरुणा व मारकंडे का संगम करवाया, जो आज भी मौका पर अरणाय से पहले धनी रामपुरा गांव में स्थित है। जिसके जीर्णोद्धार को लेकर डिप्टी चेयरमैन धुमन सिंह किरमच मौके पर गए और उस तीर्थ के जीर्णोद्धार की योजना बनाई। इस तीर्थ को बोर्ड तीर्थ यात्रा के रूप में शामिल कर रहा है ताकि दूर-दूर से श्रद्धालु यहाँ आएं और इस तीर्थ में स्नान करके पुण्य के भागी बने। इस तीर्थ का जब रिवेन्यू रिकॉर्ड निकाला गया तो यह रिवेन्यू रिपोर्ट जमाबंदी 1917 थाना से आज भी संगम तीर्थ दर्ज है। इस तीर्थ को लेकर क्षेत्र में भी कई किंवदंती प्रसिद्ध हैं कि यह तीर्थ स्वयं भगवान शिव ने स्थापित किया था इसीलिए भगवान शिव का नाम अरणाय में विराजमान संगमेश्वर पड़ा क्योंकि उन्होंने उपरोक्त नदियों का संगम करवाया था इस संगम के कारण ही उनका नाम संगमेश्वर हुआ। यह सरस्वती नदी की पवित्रता की बहुत बड़ी पुख्ता जानकारी है ।

बन्दोबस्त (1917–18) की मुसावी गाँव बिलासपुर ह0ब0 तहसील जिला

नदी का ट्रैक जिन नम्बरान खसरा में है, की सूचि मय विवरण

खसरा नम्बर	खेवट नम्बर	खतौनी नम्बर	कुल रकबा	किसम ज़मीन				मलकीयत की किसम	काश्त की किसम	विवरण
				गै0 मु0 सरस्वती नदी	गै0 मु0 नदी	गै0 मु0 दरड़	मजरुआ या अन्य किसम			
1333	292	926	0-13	0-3			0-10	[illegible]	[illegible]	
1334	300	957	1-0	0-4			0-16	〃	गैर मौरूसी	
1339	168	558	1-13	0-3			1-10	[illegible]	गैर मौरूसी	
1340	114	424	1-9			0-3	1-9	〃	[illegible] गैर मौरूसी	
1341	121	443	2-1	0-10			1-11	〃	गैर मौरूसी	
1342	127	458	2-2		0-15		1-7	〃	〃	
1343	89	303	1-6				1-6	〃	〃	
1494	71	247	0-16				0-16	〃	〃	
1504	324	1012	8-17	8-17				[illegible]	[illegible]	
1505	328	1019	3-11	3-0			0-11	〃	[illegible]	

Annexure - 2

मौजा - श्री केदारनाथ (ग्रूप) पट्टी ... परगना - नागपुर तहसील - ... जिला - चमोली (गढ़वाल)

CANCELLED

FOR COPYING FEES ONLY

CANCELLED

FOR COPYING FEES ONLY

CANCELLED

FOR COPYING FEES ONLY

CANCELLED

FOR COPYING FEES ONLY

R/1-214/2021-2...

05/09/22

05/09/22

05/09/22

राजस्व अभिलेखपाल

मौजा - श्री केदारनाथ (ग्रूप) पट्टी ... परगना - नागपुर तहसील - ... जिला - चमोली (गढ़वाल)

FOR COPYING FEES ONLY

FOR COPYING FEES ONLY

FOR COPYING FEES ONLY

FOR COPYING FEES ONLY

R/1-214/2021-2

05/09/22

05/09/22

05/09/22

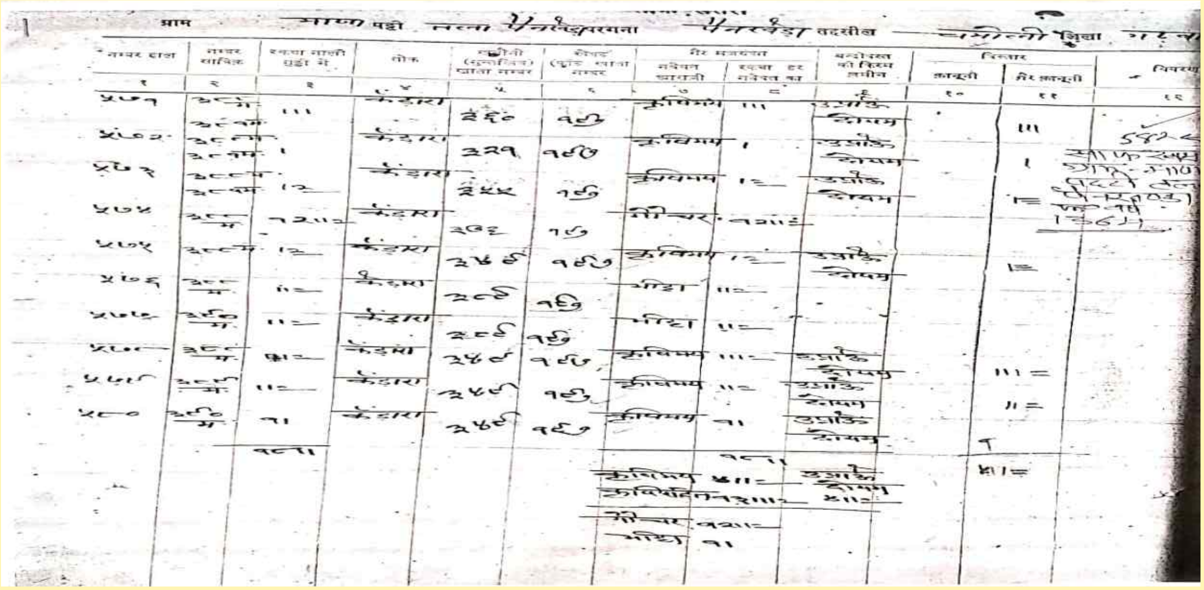

ग्राम माणा पट्टी नन्दा पैनखण्डा परगना पैनखण्डा तहसील चमोली ज़िला गढ़वाल

नम्बर हाल	नम्बर साबिक	रकबा नाली मुट्ठी में	तोक	खतौनी (मुन्तखिब) खाता नम्बर	खेवट (मूल खाता) नम्बर	गैर मजरुवा नवैयत खातारी	रकबा हद नवैयत का	बन्दोबस्त की किस्म ज़मीन	किस्म कानूनी	गैर कानूनी	विवरण
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५८०१	३८०/मे	।।।	केदारा	३६०	१६७	कृषिमय	।।।	उपांऊ दोयम		।।।	582
५८०२	३८०/मा	।	केदारा	३२१	१६७	कृषिमय	।	उपांऊ दोयम		।	साफ खसरा ग्राम माणा पट्टी नन्दा पैनखण्डा (फसली 1361)
५८०३	३८०/मा	।‒	केदारा	३५५	१६७	कृषिमय	।‒	उपांऊ दोयम		।‒	
५८०४	३८०/म	१३।।‒	केदारा	३०६	१६७	मीन्चर	१३।।‒				
५८०५	३८०/म	।‒	केदारा	३४६	१६७	कृषिमय	।‒	उपांऊ दोयम		।‒	
५८०६	३८०/म	।।‒	केदारा	३०८	१६७	भीड़ा	।।‒				
५८०७	३८०/म	।।‒	केदारा	३०८	१६७	भीड़ा	।।‒				
५८०८	३८०/म	७।‒	केदारा	३४९	१६७	कृषिमय	।।।‒	उपांऊ दोयम		।।।‒	
५८०९	३८०/म	।।‒	केदारा	३४९	१६७	कृषिमय	।।‒	उपांऊ दोयम		।।‒	
५८१०	३८०/म	७।	केदारा	३४९	१६७	कृषिमय	७।	उपांऊ दोयम			
		३८७।					३८७।			४।।‒	

कृषिमय ४।।‒ उपांऊ दोयम
कृषिविहीन १३।।।‒ ४।।‒
मीन्चर १३।।‒
भीड़ा ७।

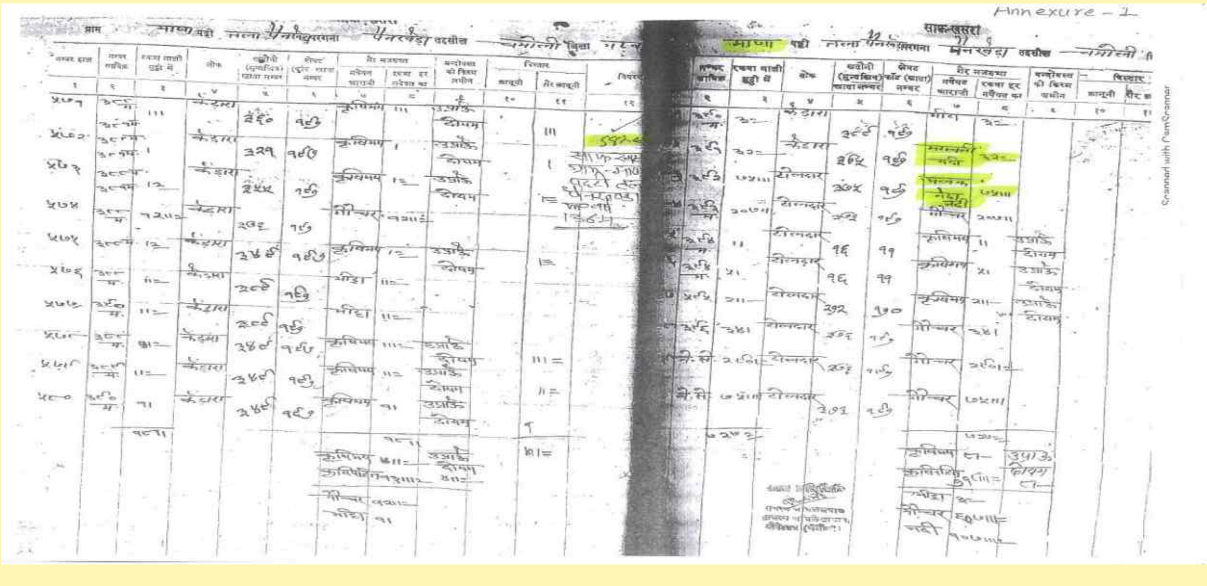

Annexure - 1

साफ खसरा

ग्राम माणा पट्टी नन्दा पैनखण्डा परगना पैनखण्डा तहसील चमोली ज़िला गढ़वाल

नम्बर साबिक	रकबा नाली मुट्ठी में	तोक	खतौनी (मुन्तखिब) खाता नम्बर	खेवट (मूल खाता) नम्बर	गैर मजरुवा नवैयत खातारी	रकबा हद नवैयत का	बन्दोबस्त की किस्म ज़मीन
३८०/म	३८	केदारा	३०८	१६७	मीन्चर	३८	
३८१	३०‒	केदारा	३६५	१६७	मरघट/नदी	३०‒	
३८१	७५।।	टीलनदार	३७५	१६७	मरघट/नदी	७५।।	
३८१	२०७।।	टीलनदार	३०६	१६७	मीन्चर	२०७।।	
३८१	।।	टीलनदार	१६	११	कृषिमय	।।	उपांऊ दोयम
३८१/म	५।	टीलनदार	१६	११	कृषिमय	५।	उपांऊ दोयम
३८२	३।।‒	टीलनदार	३९२	१७०	कृषिमय	३।।‒	उपांऊ दोयम
३८३	३५।	टीलनदार	३०६	१६७	मीन्चर	३५।	
नै.सि.	२०६।।‒	टीलनदार	३०६	१६७	मीन्चर	२०६।।‒	
नै.सि.	७०७।।	टीलनदार	३०१	१६७	मीन्चर	७०७।।	

कृषिमय ८‒ उपांऊ दोयम
कृषिविहीन ४।।।‒ ८‒
भीड़ा ३०
मीन्चर ६५०।।।‒
नदी १०७।।।

सरस्वती नदी के पेलियों चैनल पर आदिबद्री से कच्छ गुजरात का सरस्वती नदी के पानी को चैक करने के लिए ONGC के साथ पूरे Creek पर टय्बवैल लगाकर नीचे रह रहे पानी की गुणवता व संस्थान के फटाफट के लिए बहने के प्रमाण के लिए MOU दिल्ली में किया गया।

मानानीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी, केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान एवं सरस्वती बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष श्री प्रशान्त भारद्वाज सरस्वती के लिए MOU पर हस्ताक्षर के समय

ओ.एन.जी.सी. द्वारा सरस्वती नदी के पैलियो चैनल पर आदिबद्री से धौलावीरा तक 11 बोरवैल लगाए गए, जिनमें सभी का जल एक जैसा पाया गया। माना जाता है कि ये सभी सरस्वती नदी के मार्ग पर ही हैं।

I. तेल और प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी):

ओएनजीसी ने वर्ष 2018 के दौरान ओएनजीसी की सीएसआर पहल (20.07.2017) के तहत सरस्वती नदी के पैलियो-चैनलों के साथ 10 खोजी बोरवेलों की खुदाई की थी। बोरवेल की तकनीकी रिपोर्ट ओएनजीसी से प्राप्त हुई है।

प्राथमिक परिणाम इस प्रकार हैं:-

कार्बन डेटिंग और कुओं से पानी के नमूनों का जल उत्पादन

Well Name	Location	Age (Yrs.)	Flow Rate (LPH)	Remarks
HR-SRS-1	Adi Badri	-	12,000	It belongs to Holocene period
HR-SRS-4	Bhirdana	6400	42,480	"
HR-SRS-5	UnchaChandna	10230	1,12,400	It belongs to Pleiswcene also knows as ice age
HR-SRS-14	Mangna	5770	1,09,920	It belongs to Holocene period
HR-SRS-9	Pabni Kalan	6850	91,320	It belongs to Holocene period
HR-SRS-13	Ishargarh	14000	92,940	It belongs to Ice age/ Aeislocene
HR-SRS-12	Mugalwali	-	44,760	It belongs to Holocene period
HR-SRS-7	Kaikyor	5340	1,12,400	It belongs to Holocene period
HR-SRS-15	Farwai	6450	40,440	It belongs to Holocene period
HR-SRS-11	Bihta	8630	1,05,600	It belongs to Holocene period
Cumulative Water Production (LPH)			~ 7,60,000	

विभिन्न विद्वान जिन्होंने सरस्वती नदी पर शोध किया और उनका वर्णन

B. K. Bhadra

"Geochronological Evolution of Sarasvati Palaeochannels in Haryana and Punjab in Northwest India"

B. K. Bhadra
Regional Remote Sensing Centre, NRSC/ISRO, Antariksh Bhavan, Sadiq Nagar, New Delhi-110049

Saraswati Palaeochannels in NW India

A number of studies suggest that the ancient *Vedic Saraswati River* in northwest India was flowing from the Higher Himalayas to the Arabian sea through Punjab, Haryana, Rajasthan and northern Gujarat states during 6000-3000 BC (Radhakrishna 1999; Valdiya 2013). Remote Sensing technique with different optical satellite images have shown the efficacy of palaeochannel mapping in different parts of the world. In the past few decades, the course of the Saraswati palaeochannels in northwest India have been

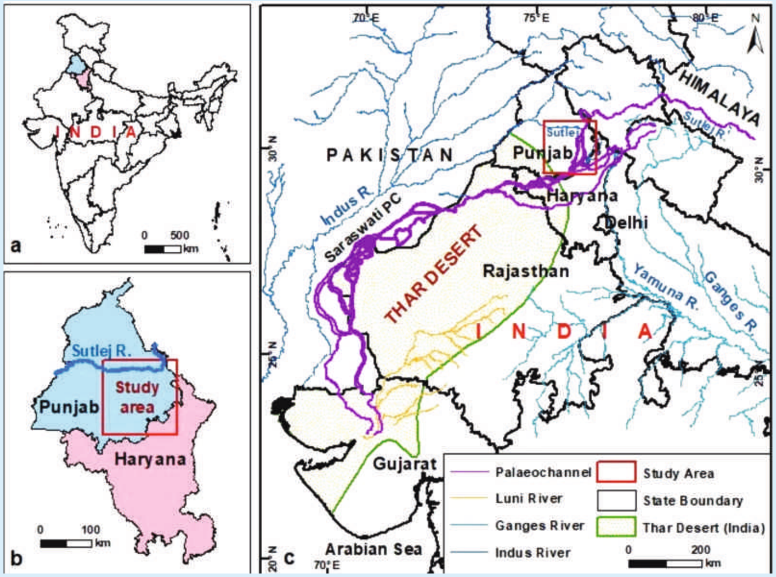

delineated (Fig.1) using coarse-resolution optical satellite images (Yashpal et al. 1980; Sahai 1999; Gupta et al. 2004; Bhadra et al. 2009; Gupta et al. 2011; Orengo and Petrie 2017). Medium to coarse resolution satellite images have been used in mapping palaeochannels (5 to 10 km wide) on Sutlej-Yamuna plain in northwest India with highest rates of groundwater extraction in the area (Van Dijk et al. 2016). However, synergistic utilization of both optical (multi-spectral) and microwave data (C, S, and L bands) with different fusion techniques is rare in delineation of paleochannels.

Hydrogeological studies of these palaeochannels proved to be good groundwater potential zones in Thar Desert area (**Gupta et al. 2004; Bhadra et al. 2009; Gupta et al. 2011; Kshetrimayum and Bajpai 2011; Sharma et al. 2014; Kumar and Rajawat 2017**). Recently, palaeochannels have been harnessed for an alternate source of ground water in water scarcity regions of Rann of Kachchh (**Bhadra et al. 2021**). Occurrence of different sites of Harappan civilization has been linked with the Sarasvati palaeochannels as well as dry lakes in the region (**Thakkar et al. 2012; Tyagi et al. 2012; Sinha et al. 2013; Orengo and Petrie 2017; Chatterjee 2017; Singh et al. 2017; Chatterjee et al. 2019**). Sedimentological and isotopic analysis suggest that a large Himalayan Saraswati river system might have been discharged into the Arabian Sea until 10,000 years ago (**Khonde et al. 2017**). It is believed that *Vedic Sarasvati River* was fed by the two perennial sources from the Higher Himalaya viz. Sutlej River in the northwest and Yamuna/Tons River in the southeast. Due to sporadic and scattered datasets, evolution of the Sarasvati River is not yet understood properly. Hence, an attempt has been made to integrate different radiometric datasets to frame out a geochronological evolution of the *Vedic Sarasvati River*.

Chronological Evolution of Sarasvati Palaeochannels

Previous study suggests that the `Lost Vedic Saraswati River' in northwest India had been flowing from the Himalaya to Arabian Sea during Holocene period. However, establishing the chronological evolution of Saraswati palaeochannels in the region is a difficult task due to lack of systematic scientific database. For this purpose, sedimentological and chronological data have been collected all along the delineated palaeochannels between Rupnagar (Punjab) and Kalibangan (Rajasthan) to understand the evolution and demise of the Saraswati river. The plains on the banks of Saraswati River were inhabited by Harappan civilization during 1200 to 7000 BC. However, this river had been diminished in the region around 4000 to 3000 BC (**Radhakrishna 1099; Sahai 1999; Valdiya 2013).** These dates were debatable in establishing a relation between the collapse of civilization and drying up of the Saraswati river. In the past two decades, a large number of new datasets have been generated on subsurface chronological analysis of the Holocene deposits along the path of the lost Saraswati River **(Table-1)**.

Linkage of Sutlej Palaeochannels with Vedic Sarasvati

Integrated palaeochannels map of eastern Punjab shows a splay of palaeochannels with diverse orientation viz. N-S, NE-SW and E-W. The N-S oriented SPC is connecting the present-day Sutlej River near Ropar and the Ghaggar River in the south of Patiala. Sutlej River originates from the Mann Sarovar Lake in Higher Himalaya (Tibet) and enters the plains near Ropar (Punjab). Ghaggar River and SPC in Haryana-Punjab region is considered to be a part of Vedic Sarasvati River during 8000 to 3000 BC (**Radhakrishna 1999**). Occurrence of a large number of Harappan sites all along the SPC indicates the existence of Vedic Sarasvati River in the past. Thus, the SPC possibly acted as a major link between the

Himalayan glacier and the Sarasvati River in the past **(Fig.2)**. To be a vibrant mighty river, the Sarasvati River in Vedic Period must have been contributed by the Sutlej River system of the Himalaya with larger glaciated area. Other palaeochannels in Punjab are younger than SPC which have evolved gradually during upliftment of Yamuna-Sutlej interfluve region (**Srivastava et al. 2013; Tewari et al. 2021**). However, recent geochronological studies shifted the age of this active river course to 18,000-12,000 years (**Singh et al. 2017; Saini et al. 2020; Tewari et al. 2021**).

Conclusions

Different fusion products of optical and microwave satellite data have been used for delineating large-scale palaeochannels in Punjab-Haryana plains. Integrated study of remote sensing and other colleterial data confirm the presence of the palaeochannels in the region. Sudden change of the course of Sutlej River from N S to E-W (90°) is attributed to shifting or migration of an old river system due to Sutlej Tear faulting near Rupnagar. Geochronological evolution with the available datasets shows that the Sutlej River in Punjab and Sarasvati River in Haryana was flowing in full majesty towards Ghaggar River during 11,600 to 15,000 years ago. Along the lower reaches, Ghaggar River started disappearing during 5,000-10,000 years and finally dried up during 3,400 to 4,300 years due to due to neo-tectonic disturbance in the Lower Himalaya.

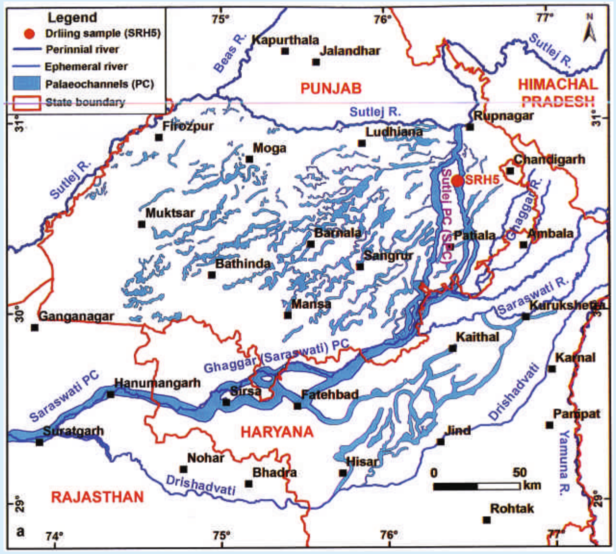

Fig.2: Linkages of Sutlej palaeochannels with Ghaggar (Sarasvati) paleochannels in northwest India. Location of drill hole sample (SRH5) on SPC used for dating.

स्वदेशी व विदेशी विचारकों, लेखकों एवं इसरो की नजर में सरस्वती

एचएच विल्सन (1840)

विष्णु पुराण का अनुवाद करने वाले एचएच विल्सन (1840) ने उल्लेख किया कि मनु और पुराणों की पवित्र भूमि दृषद्वती और सरस्वती नदियों के बीच थी और इसके आसपास के क्षेत्र में पहले राजकुमारों और सबसे प्रसिद्ध संतों के विभिन्न साहसिक कार्य हुए।

मारियस फोंटेन (1881)

मारियस फोंटेन (1881) ने फ्रांसीसी भाषा की एक पुस्तक इंडो वैदिक (वैदिक भारत) में उस समय के विद्वानों के विचारों के विवरण के साथ सात नदियों की भूमि का एक नक्शा शामिल किया था, जहां सरस्वती की स्पष्ट रूप से घग्गर के साथ पहचान की गई थी।

आरडी ओल्डम (1886)

ओल्डम ने भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के उप अधीक्षक के रूप में बहावलपुर क्षेत्र से हिसार जिले तक के क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। अपने पेपर में सप्त सिंधु, जैसा कि मारियस फोंटेन (1881) द्वारा फ्रांसीसी भाषा की एक पुस्तक इंडो वैदिक (वैदिक भारत) में दर्शाया गया है। उल्लेखनीय है कि सरस्वती को यमुना और सतलुज के बीच बहते हुए दिखाया गया है और इसकी पहचान घग्गर से की जाती है। जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, उन्होंने उन दिनों के सिद्धांतों को खारिज कर दिया, जो सरस्वती के नुकसान को कम वर्षा के लिए जिम्मेदार ठहराते थे, यह इंगित करते हुए कि इससे सभी नदियों को समान रूप से प्रभावित किया जाएगा। बजाय उन्होंने प्रस्तावित किया कि 'भारतीय रेगिस्तान की खोई हुई नदी कोई और नहीं बल्कि सतलुज थी, और जब नदी मुड़ी तो वह 'खो गई' थी पश्चिम की ओर ब्यास में शामिल होने के लिए। ओल्डम ने यह भी सुझाव दिया कि पहाड़ियों को छोड़ने के बाद यमुना ने अपने जल को विभाजित किया और जो हिस्सा पंजाब में बहता था उसे सरस्वती के रूप में जाना जाता था जबकि गंगा में शामिल होने वाले हिस्से को यमुना कहा जाता था।

एच जी रावर्टी (1892)

रावर्टी ने अपने पत्र में सरस्वती से संबंधित कुछ निष्कर्ष दिए हैं, अर्थात् :

1. सुरसुती एक प्राचीन सरस्वती नदी का नाम है।
2. सतलुज हाकरा की एक सहायक नदी थी और जो पूर्वी नारा के माध्यम से कच्छ के रण तक बहती थी।

   एच.जी. रावर्टी के अनुसार चौदहवीं शताब्दी ई. में हाकरा का सुखना ऐसा हो गया जैसे एक फलते–फूलते देश का विकास एक हद तक कम हो गया और कई समृद्ध शहर अपने निवासियों द्वारा बर्बाद या निर्जन हो गए।

सी एफ ओल्डम (1893)

सी एफ ओल्डम ने अपने पेपर **'द सरस्वती एंड द लॉस्ट रिवर ऑफ द इण्डियन डिजर्ट'** शीर्षक मे उल्लेख किया है कि ऋग्वेद के सुक्तो में से यह नदी जो सरस्वती नदी को स्पष्ट रूप से यमुना और सतलुज के बीच मे रखता है। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि खोई हुई ऋग्वैदिक नदी जो आज के घग्गर की तलहटी में बहती है।

ए ए मैकडोनेल और ए बी कीथ (1912)

ए ए मैकडोनेल और ए बी कीथ (1912) ने वैदिक नामों के अपने आधिकारिक सूचकांक में उल्लेख किया है कि सरस्वती जमुना और सतलुज के बीच आती है।

एफ ई पारगिटर (1922)

एफ ई पारगिटर (1922) ने प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक परंपरा नामक अपनी पुस्तक में, जो महाभारत और पुराणों में सूचीबद्ध राजवंशों से प्राप्त भारतीय प्राचीन इतिहास का एक ऐतिहासिक अध्ययन दर्ज करता है, सरस्वती नदी का पुनर्निर्माण प्रदान करता है।

एचएच गोवेन (1931)

एचएच गोवेन (1931) ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर में भी सरस्वती का उल्लेख किया है और यह एक नदी थी जो गायब हो गई थी।

लुई रेनौ (1947)

लुई रेनौ (1947) ने क्लासिक इंडिया पर अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि सरस्वती वैदिक भूगोल की वास्तविक जीवन रेखा के रूप में थी और यह माना जाता है कि यह सतलुज और जमुना के बीच स्थित सरसुती में पाई जाती है। रेनौ कई मानचित्र प्रदान करता है। उनमें से एक जैसा कि डैनिनो, 2012 से पुनरुत्पादित किया गया है।

थॉमस बुरो (1963)

जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री में प्रकाशित 'ऑन द महत्त्व ऑफ टर्म अरमा–, अरमाका– इन अर्ली संस्कृत लिटरेचर' शीर्षक से एक पेपर में उल्लेख किया गया है कि घग्गर प्राचीन सरस्वती है।

आर्थर एल बाशम (1966)

आर्थर एल बाशम (1966) ने अपनी पुस्तक 'वंडर दैट वाज इंडिया' में बताया है कि ऋग्वैदिक काल के दौरान आर्य संस्कृति का ध्यान सरस्वती के ऊपरी मार्ग पर था। बाशम द्वारा वर्णित सरस्वती अब राजस्थान के रेगिस्तान में खो गई है, लेकिन तब (वैदिक काल में) यह व्यापक और मजबूत रूप में बहती थी।

जन गोंडा (1975)

जन गोंडा (1975), वैदिक काल के एक विशेषज्ञ साहित्य में उल्लेख है कि अधिकांश भजन सरस्वती नदी के आसपास देश में रचे गए प्रतीत होते हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि पूर्व में आर्यों का विस्तार यमुना से आगे नहीं हुआ था।

घोष (1979, 1980)

घोष एट अल (1979, 1980) : हवाई फोटोग्राफी और लैंडसैट इमेजरी के अध्ययन के आधार पर, उन्होंने सुझाव दिया है कि सरस्वती नदी राजस्थान के रेगिस्तान के मध्य में **NE & SW** के साथ बहती है और लूनी इसकी सहायक नदियों में से एक थी। पचपदरा और कच्छ के रण के बीच लूनी के वर्तमान घाटी खंड की व्याख्या करने के लिए लेखक इस परिकल्पना का आह्वान करते हैं। नदी बाद में पश्चिम की ओर स्थानांतरित हो गई, लूनी के साथ अपना संबंध तोड़ दिया और जैसलमेर जिले में रेगिस्तानी इलाकों के माध्यम से चैनलों के माध्यम से बहती रही। बाद में नदी ने

हकरा–नारा–वाहिंद–रैनी प्रवाह पर कब्जा कर लिया। लेखकों का मानना है कि सरस्वती को पश्चिम की ओर प्रवाहित होने के लिए अपने मार्ग को पश्चिम की ओर कम से कम चार बार स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया गया था। ये कोर्स हैं–

1. सबसे पुराना मार्ग था नोहर–सुरजनसर–समरौ–पचपदरा
2. दूसरा कोर्स सिरसा–लुनकर्णनसर–बीकानेर–समरौ–पचपदरा था
3. तीसरा कोर्स था नोहर–रंगमहल–सूरतगढ़–अनूपगढ़–स्की–हकरा–नारा
4. चौथा कोर्स था जाखल–सिरसा–हनुमानगढ़–पीलीबंगा–सूरतगढ़–अनूपगढ़–सखी–हकरा–नारा
5. पांचवां कोर्स अनूपगढ़–फोर्ट अब्बास में कच्छ के रण में स्वतंत्र रूप से नाली के बजाय सिंधु जल निकासी बेसिन में शामिल होने के लिए बदलाव था।

यशपाल एट अल (1980)

यशपाल एट अल (1980) ने सतलुज, यमुना, घग्गर, दृषद्वती, चौतांग और अन्य नदी प्रणालियों के पुरापाषाण चैनलों का विस्तृत स्केच प्रदान किया, जो हिमालय की तलहटी की पहाड़ियों से निकलती हैं और कच्छ के रण में मिलने के लिए राजस्थान से होकर बहती हैं। लेखकों का मत था कि सतलुज अतीत में सरस्वती नदी प्रणाली का हिस्सा था, जैसा कि रोपड़ के पास सतलुज के एक पुरा चैनल की उपस्थिति से प्रमाणित होता है जो कि शतराना के निकट लगभग समकोण पर घग्गर में शामिल हो गया। उन्होंने पुरा यमुना (दृषद्वती) के तीन पुराने चैनल्स, ल्2, ल्3 का भी पता लगाया। पहले दो चैनल शतराना और सूरतगढ़ में घग्गर में शामिल हो गए, और तीसरा भरतपुर के पास चंबल में शामिल हो गया। उनका मत था कि चंबल के रास्ते गंगा में शामिल होने से पहले यमुना शायद सरस्वती में शामिल हो गई थी।

कर और घोष (1984)

कर और घोष (1984) उन्होंने सरस्वती की एक प्रमुख सहायक नदी दृषद्वती के पूर्व प्रवाह का पता लगाया। शिवालिक से शुरू होकर मारकण्डा से होते हुए गडौली तक और जगधौली के आसपास के इलाकों में इसका पता लगाया गया और फिर यह चौतांग के रास्ते जींद और नारनौंद तक चला।

वी एस वाकणकर (1987)

वी एस वाकणकर (1987) दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली द्वारा राधाकृष्ण बीपी और मेहर एस एस (संस्करण) वैदिक सरस्वती–इवोल्यूशनरी हिस्ट्री ऑफ ए लॉस्ट रिवर ऑफ नॉर्थ–वेस्टर्न इंडिया द्वारा प्रकाशित मंथन (मार्च 1987) के अंश। यह एक गलत धारणा है कि वैदिक आर्य मध्य एशिया से आए और पंजाब में प्रवेश किया और वहां कब्जा कर लिया और फिर पूरे प्रायद्वीप में फैल गए। मनुष्यों की विभिन्न प्रजातियों के संबंध में हाल के निष्कर्षों के आधार पर, उनका मानना है कि ऊपरी सरस्वती क्षेत्र मानव विकास का केंद्र है। उनके विश्लेषण के अन्य प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं :

1. हड़प्पा और पूर्व–हड़प्पा सभ्यताओं का विकास सरस्वती के साथ हुआ और इसलिए इसे सिंधु या हड़प्पा कहने के बजाय इसे वैदिक सिंधु–सरस्वती संस्कृति कहा जाना चाहिए।
2. परंपरागत रूप से महाभारत के माध्यम से हमें ज्ञात अधिकांश ऋषि आश्रम, सरस्वती के साथ पंक्तिबद्ध थे और इन जुड़े स्थलों की पुरातनता हड़प्पा और पूर्व–हड़प्पा काल की है।
3. शतचिद्र कुम्बी (छिद्रित मिट्टी के बर्तनों का जार) वैदिक देवता सुनीवाली और वैदिक देवता रुद्र की पूजा करने के लिए वैदिक अनुष्ठान से जुड़ा है। वे सरस्वती के साथ सभी स्थलों पर पाए जाते हैं।
4. कालीबंगा, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, सुरकोट्दा और अन्य हड़प्पा स्थलों में पाई जाने वाली अग्नि वेदियां या यज्ञ कुंड, वैदिक कर्मकांड के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध का संकेत देते हैं।
5. सरस्वती के तट पर प्राचीन टीलों से अस्थियों और टेराकोटा के रूप में घोड़े के अवशेष मिले हैं।
6. वैदिक संस्कृति की शुरुआत मध्यपाषाणकालीन बस्तियों के समय से शिकार संग्रह अर्थव्यवस्था के साथ हुई, जो आगे चलकर वैदिक काल के ग्रामीण ऋषि समुदायों के रूप में विकसित हुई।
7. उपजाऊ मिट्टी और सिंचाई चैनलों के कारण ये ग्रामीण बस्तियां हड़प्पा काल के शहरी केंद्रों में विकसित हुईं।
8. बीकानेर तक एक संकरा समुद्र था, जो वैदिक काल में लुप्त हो गया था।
9. हड़प्पा का स्थल दस राजाओं के युद्ध से जुड़ा हुआ है और हड़प्पा काल के दौरान चयमानों के वैदिक वंश का शासन था।
10. जौ उगाने वाली सबसे पहली ऋषि गतिविधि वैदिक सरस्वती क्षेत्र में शुरू हुई; कालीबंगा (बीकानेर)

ये प्राप्त पूर्व–हड़प्पा में खेती के प्राप्त अवशेष यह साबित करते हैं।

11. ऊपरी यमुना नदी में पूर्व–हड़प्पा कालीन बस्तियों से पता चलता है कि इसका सरस्वती क्षेत्र के साथ घनिष्ठ संबंध था और हड़प्पा की बस्तियों में गिरावट देखी गई क्योंकि इस समय तक सरस्वती ने अपनी शक्तिशाली जल आपूर्ति खो दी थी।

रामासामी (1991)

रामासामी एट अल (1991) लैंडसैट एमएसएस और टीएम डेटा का इस्तेमाल किया और देखा कि सरस्वती नदी अरावली पहाड़ी श्रृंखला के करीब बहती है व कच्छ के रण में अरब सागर से मिलती है। यह धीरे–धीरे उत्तर–पश्चिम की ओर बढ़ती गयी और अंत में अनूपगढ़ के मैदानों में खो गयी। लेखकों ने सुझाव दिया कि अरावली पहाड़ियों के निशान के साथ हिमालय की तलहटी तक की उथल–पुथल ने सरस्वती को उत्तर–पश्चिम की ओर अपने शुरुआती प्रवाह से अरावली के साथ बहाव बना दिया गया होगा। बाद में लूनी–सुकरी सिमेटोजेनिक आर्किंग ने उत्तर–पश्चिमी बहाव को तेज कर दिया होगा। यदि सरस्वती हाकरा–नारा तल में प्रवाहित हो रही थी, तो सिंधु के पश्चिम की ओर खिसकने से भी सरस्वती प्रणाली का विघटन हो सकता था। अनूपगढ़ के मैदानों में इसका अंतिम दफन हो सकता था। लेखकों द्वारा की गई अन्य टिप्पणियों में शामिल हैं–आगरा और देहरादून क्षेत्र में यमुना के किनारे लूनी–सुकरी–हड़प्पा के साथ मेल खाते हैं, जो नदी प्रवास पर प्लेइस्टोसिन टेक्टोनिस्म द्वारा नियंत्रण का सुझाव देते हैं। ऐसा लगता है कि यमुना अरावली पहाड़ियों में वृद्धि के कारण पूर्व की ओर 40 से 100 किमी तक चली गई है।

एस कल्याणरमन (1997)

'सरस्वती नदी (लगभग 3000 से 1500 ईसा पूर्व)', सरस्वती सिंधु अनुसंधान केंद्र, चेन्नई (1997)। यह पुस्तक वैदिक नदी सरस्वती के मुख्य पहलुओं को दर्शाती है जो इलाहाबाद में सरस्वती के विश्वास का वर्णन करने वाली दुर्लभ पुस्तकों में से एक है। जैसा कि पुस्तक में उल्लेख किया गया है ''यमुना ने पांवटा साहेब में सरस्वती को पकड़ लिया और उसे गंगा में शामिल होने के लिए प्रयाग, इलाहाबाद ले गई इसलिए तीन नदियों सरस्वती, यमुना और गंगा के संगम का मिथक ठीक प्रतीत होता है।

राधाकृष्ण बीपी और मेहर एस एस (1999)

राधाकृष्ण बीपी और मेहर एस एस (1999) 'वैदिक सरस्वती–इवोल्यूशनरी हिस्ट्री ऑफ ए लॉस्ट रिवर ऑफ नॉर्थवेस्टर्न इंडिया'। यह पुस्तक खोई हुई नदी सरस्वती के विशेष संदर्भ में उत्तर पश्चिमी भारत के जल निकासी विकास पर संगोष्ठी में प्रस्तुत पत्रों का संकलन है। संगोष्ठी में प्रस्तुत पत्र, समस्या से संबंधित प्रकाशित साहित्य की जानकारी के साथ, इस खंड में एक साथ इकट्ठे किए गए हैं और तीन प्रमुख खंडों में व्यवस्थित हैं :

1. वैदिक पूर्ववृत्त
2. जल निकासी विकास
3. नए दृष्टिकोण

प्रत्येक खंड पर संपादकीय टिप्पणियाँ प्रत्येक खण्ड के योगदान के महत्त्व को उजागर करती हैं। पत्रों का चयन इस प्रकार किया जाता है कि प्रचलित विचारों का एक अच्छा क्रॉस सेक्शन प्रदान किया जा सके।

नायर एआर, नवादा एसवी और आरएओ एसएम (1999)

राजस्थान के जैसलमेर और गंगानगर जिलों में पुरा चैनलों के साथ भूजल की उत्पत्ति और समय की जांच के लिए आइसोटोप अध्ययन किया गया। राधाकृष्ण बी पी और मेर एस एस (ईडी) द्वारा पुस्तक 'वैदिक सरस्वती : उत्तर पश्चिमी भारत में एक खोई नदी का विकासवादी इतिहास', भारतीय भूवैज्ञानिक सोसायटी, बैंगलोर के अध्ययन से पता चलता है कि जीवाश्म पानी की स्थिर समस्थानिक संरचना स्थानीय उल्कापिंड से अलग है!

मलिक जेएन, मेरह एस एस और श्रीधर वी. (1999)

वैदिक सरस्वती का पुरा डेल्टा परिसर और उत्तर–पश्चिमी भारत की अन्य प्राचीन नदियाँ। मेमॉयर जियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया उपरोक्त कागज के अनुसार, ग्रेट रण के उत्तरी भाग में न केवल एक नदी (सिंधु) का डेल्टा शामिल है, बल्कि तीन डेल्टा नदी के मुहाने का स्थल भी है। ग्रेट रण के तीन डेल्टा प्रोटो–शताद्रु (हकरा), सरस्वती और दृषद्वती नदियों से संबंधित हैं। वर्तमान में मूल डेल्टा परिसर का केवल एक हिस्सा बच गया है।

ए वी शंकरन (1999)

(सरस्वती–रेगिस्तान में खोई गई प्राचीन नदी, करंट साइंस व ल्यूम 77, नंबर 8. पीपी.1054–1060) पेपर

विभिन्न विषयों के विभिन्न लेखकों के विचारों की समीक्षा करता है। यह अध्ययन को इस प्रकार सारांशित करता है। सरस्वती एक शक्तिशाली नदी के रूप में उभरी, जो लगभग 10,000 साल पहले प्लीओस्टोस हिमनदों के बाद के गर्म जादू को दर्शाती है। लगभग 4000 वर्षों तक शानदार अस्तित्व के बाद, नदी का पतन हुआ और धीरे–धीरे लुप्त हो गई। हिमालय के उदय से जुड़ी आंतरिक विवर्तनिक गतिविधियों के मंत्र, कच्छ क्षेत्र में नवविवर्तनवाद, जलवायु परिवर्तन और पृथ्वी की कक्षा और झुकाव में बदलाव से प्रेरित मरुस्थलीकरण, नदी की समुद्री डकैती के कारण पानी की घटती आपूर्ति, सभी की महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं जिनसे सरस्वती नदी खो गई।

वी एम के पुरी (2000)

अखिल भारतीय इतिहास संकल्प योजना द्वारा प्रकाशित हिमालय में वैदिक सरस्वती के स्रोत की खोज नामक एक पुस्तक में निष्कर्ष निकाला गया है कि ‘ड्रेनेज विश्लेषण, बेसिन पहचान, हिमनद और छत अध्ययन से पता चलता है कि वैदिक सरस्वती की उत्पत्ति हुई है। गढ़वाल हिमालय के नैटवार में टोंस पांचवें क्रम के बेसिन में ग्लेयर्स का एक समूह प्रारंभिक अवस्था में, इसने पोंटा दून तक टोंस नदी के वर्तमान जल निकासी पर कब्जा कर लिया और अगलर, यमुना और गिरि से पोषण प्राप्त करने के बाद एक पश्चिमी झूला लिया। पांवटा के पश्चिम में, यह बाटा घाटी के साथ एक पश्चिमी और दक्षिण–पश्चिम मार्ग का अनुसरण करता है और आदि बद्री में मैदानी इलाकों में प्रवेश करता है। इसने लगभग दक्षिण–पश्चिम दिशा का अनुसरण करना जारी रखा और लगभग 1000 किलोमीटर तक हरियाणा, राजस्थान और गुजरात से होते हुए अरब सागर में शामिल हो गया।

बी बी लाल (2002)

द सरस्वती फ्लो ऑन–द कंटिन्युटी ऑफ इंडियन कल्चर–आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली। पुस्तक पुरातात्विक साक्ष्यों का विस्तृत विवरण प्रदान करती है जो वैदिक नदी सरस्वती के साथ एक महान सभ्यता के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं।

के एस वल्दिया (2002)

सरस्वती, नदी जो गायब हो गई, इसरो और यूनिवर्सिटी प्रेस (इंडिया) लिमिटेड ओरिएंट लॉन्गमैन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा वितरित। यह पुस्तक सरस्वती नदी का एक पूरा विवरण प्रदान करती है जिसमें विभिन्न प्रमाण शामिल हैं जो

इंगित करते हैं कि उत्तर पश्चिमी भारत में वैदिक सरस्वती के पुरा चैनल मौजूद हैं। इसमें सरस्वती नदी के लुप्त होने के संभावित कारणों को दर्शाने वाला विस्तृत मॉडल भी शामिल है। वल्दिया (2002) द्वारा वर्णित सरस्वती नदी के लुप्त होने के संभावित कारणों को 3.18 ए, बी और सी के साथ वर्णित किया गया है।

ए. के. गुप्ता (2004)

गुप्ता एट अल।, (2004) ने उत्तर पश्चिमी क्षेत्र की उपग्रह इमेजरी का अध्ययन किया और एक बहुत ही दिलचस्प निष्कर्ष पर पहुंचे कि सरस्वती नदी सिंधु नदी के समानांतर पूर्व की ओर बहती थी और 40 से कम के बहुत संकरे क्षेत्र के भीतर अपना प्रवाह स्थानांतरित कर देती थी। सरस्वती नदी का प्रमुख (सबसे पश्चिमी) चैनल कमोबेश स्थिर और अपरिवर्तित रहा और इसे वास्तविक ऋग्वेदिक सरस्वती नदी माना जाता है। उन्होंने आगे बताया कि सरस्वती नदी ने लूनी नदी में शामिल होने के लिए कभी कोई रास्ता नहीं अपनाया। लूनी समय–समय पर अन्य नदियों (सरस्वती की तुलना में बहुत कम महत्त्व की, उदाहरण के लिए दृषद्वती) से जुड़ती रही है जो अरावली पहाड़ियों के साथ बहती है। इसके अलावा, सरस्वती नदी ने कभी भी अपने प्रवाह को पूर्व से पश्चिम की ओर तेजी से और लगातार स्थानांतरित नहीं किया, जैसा कि पहले के कुछ कार्यकर्ताओं ने सुझाव दिया था। उनका अध्ययन सरस्वती नदी के निरंतर पश्चिम–वार्ड के अरावली पहाड़ियों के पास प्रारंभिक स्थिति से हकरा–नारा (उत्तर–पश्चिमी भारतीय सीमा के करीब) के साथ अंतिम स्थिति में स्थानांतरित होने के मौजूदा विवाद के लिए एक तार्किक समाधान प्रदान करने में सहायक होगा।

एस. कल्याणरमन (2008)

वैदिक नदी सरस्वती और हिंदू सभ्यता सरस्वती अनुसंधान और शिक्षा ट्रस्ट, चेन्नई, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली यह 'वैदिक नदी सरस्वती' और हिंदू पर 24 से 26 अक्टूबर 2008 को आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत बहु–विषयक पत्रों का संकलन है। पिछले 50 वर्षों के दौरान किए गए शोध और अध्ययनों पर आधारित सभ्यता, जो सभ्यता की उत्पत्ति पर एक नई रोशनी डालती है और भारत में उल्लेखनीय सांस्कृतिक निरंतरता का लेखा–जोखा रखती है, जिसका उदाहरण हिंदू सभ्यता एक भाषाई क्षेत्र के रूप में है। इन्होंने भी सरस्वती के बहने का वर्णन किया है।

ए. आर. चौधरी (2008)

सरस्वती नदी के किनारे सभ्यता– एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कल्याणरमन एस (संस्करण), वैदिक नदी सरस्वती और हिंदू सभ्यता, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल और सरस्वती रिसर्च एंड एजुकेशन ट्रस्ट में। लेखकों ने तलछट संबंधी जांच के आधार पर पूर्ववर्ती सरस्वती नदी के वैदिक पथ के साथ पुराचैनलों की उपस्थिति के तीन महत्त्वपूर्ण संकेतों की रिपोर्ट दी है। कपिल मुनि मंदिर सरोवर से बहता पानी जींद के कलायत में च्यवन गीति कुंड और पिहोवा जिले के भोर सैयदा में दफन नदी के तल की उपस्थिति का अनुमान लगाया। उन्होंने नदी की चौड़ाई लगभग 2 किमी होने का भी अनुमान लगाया (रिसर्च सैन्टर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र)

बी. के. भद्रा (2009)

अन्य साक्ष्यों के साथ उपग्रह डेटा और टॉपोमैप्स के अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हरियाणा की सरस्वती नदी वैदिक सरस्वती नदी की सहायक नदी है। जलवायु और विवर्तनिक परिवर्तन के साथ कम वर्षा और मानवजनित हस्तक्षेप व प्रवाह के अतिक्रमण हरियाणा की सरस्वती नदी के विलुप्त होने के प्रमुख कारण रहे हैं। कुछ अन्य कारक जैसे (ए) सरस्वती नदी की जल निकासी लाइनों को टॉपोमैप्स में सोम नदी तक, (बी) कम स्थलाकृति और उस क्षेत्र की थोड़ी ऊंचाई भिन्नता जहां आदिबद्री और रामपुर हेरियन गांव (सरस्वती नदी का मूल स्थान) स्थित हैं, (सी) सोम्ब नदी की सहायक नदियों का विन्यास, (डी) मजबूत एन–एस ट्रेंडिंग इमेज विसंगति, आदिबद्री क्षेत्र से रामपुर हेरियन तक दक्षिण की ओर फैलती है, सरस्वती नदी के साथ जुड़ने के लिए सोम नदी के अपस्ट्रीम जल निकासी की व्यवहार्यता की ओर संकेत करती है।

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा करवाए गए कार्यो व प्रयासों का वर्णन

यमुनानगर में सरस्वती नदी के बहते जल का एक सुन्दर दृश्य

पिहोवा के पास बीबीपुर गांव में सरस्वती नदी का सुन्दर दृश्य

Shiv Mandir, Village Kakrauni

Khera Baba Mandir, Village Talakaur

Ravidas Mandir, Village Uncha Chandna

Ravidas Mandir, Manka Road, Village Sarasvati Nagar

आदि बद्री से लेकर कैथल घग्गर और पारा नदी के मिलन तक करीब 122 गांव 78 मंदिर व 22 घाट सरस्वती की पवित्रता व प्रवाह को दर्शाते हैं। यह प्रवाह जो आज भी हरियाणा सरकार व सरस्वती हेरिटेज बोर्ड की बदौलत दिखाई देता है। इस 200 किलोमीटर के क्षेत्र में इन 122 गांव के लोगों की श्रद्धा/आचमन सरस्वती के प्रति देखते ही बनती है।

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा लाडवा में निर्मित घाटों का मनमोहक दृश्य

Bargat Ghat

Bhaini Ghat

Ishargarh Ghat

Tatki Ghat

Construction activities on the bank of Sarasvati River

Construction of Ghats and Reservoirs - The Sarasvati Board has constructed Ghats and Reservoirs for activities like bathing and religious ceremonies, highlighting the significance of River Sarasvati is the local culture and traditions. The details of the Ghats and Reservoirs are outlined as:

Ghats

- Village Gandhi Nagar of Thanesar City
- Village Mercheri
- Village AmargarhMajra
- Mohan Nagar
- Village Dabkheri
- Village KheriMarkanda
- Village Jhansa Road
- Village Sanghor, Block-Babain

Jhansa Road Ghat

Paras Enclave

Amargarh Majra Ghat

Dabkheri Ghat

Triveni Ghat

Gandhi Nagar Ghat

Bint Ghat

Bodla Ghat

Bodla Ghat

Bargat Ghat

Bhaini Ghat

Babain Ghat, Mandir

राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक जी.एस.आई. की निदेशक डॉ दीपाली कपूर ने अपनी टीम के साथ सरस्वती नदी की विभिन्न जगहों पर जाकर निरीक्षण किया और सरस्वती बोर्ड के कार्यो को सराहा

पिहोवा में सरस्वती रिवर फ्रंट की नींव रखी जिसके माध्यम से 152 डी पुल से लेकर चीका पुल तक के बीच में यह रिवर फ्रंट बनाया जा रहा है जिस से पिहोवा तीर्थ पर श्रद्धालुओं को बोटिंग व अन्य पर्यटक सुविधायें मिलेंगी तथा इस क्षेत्र में सरस्वती नदी की सुन्दरता बनेगी।

यमुनानगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर थाना छप्पर के पास सरस्वती मिल्क माजरा रिवर फ्रंट प्रोजेक्ट का माननीय राजू जी के साथ निरीक्षण व शुभारम्भ किया और अब कार्य प्रगति पर है

निरीक्षण

शुभारम्भ

कार्य

सरस्वती सेवा समिति पिहोवा द्वारा समय-2 पर सरस्वती बोर्ड द्वारा बनाई गई सेवा समितियों व रामधारी शर्मा जी के नेतृत्व में सभी संस्थाओं व आम नागरिकों के सहयोग से सरस्वती स्वच्छता अभियान किया, सभी का बहुत बहुत आभार, यह अभी भी समय-2 पर चल रहा है।

गुरु ग्रंथ साहब में सरस्वती नदी का वर्णन

ਸਾਰਸੁਤਿ ਤੀਰ ਜੇ ਕੀਨ ਚੇਲ ॥
ਜੋ ਸਰਸਵਤੀ ਦੇ ਕੰਢੇ ਦੇ ਚੇਲੇ ਕੀਤੇ ਸਨ,

ਕਿਲਵਿਖ ਮੈਲੁ ਭਰੇ ਪਰੇ ਹਮਰੈ ਵਿਚਿ ਹਮਰੀ ਮੈਲੁ
ਸਾਧੂ ਕੀ ਧੂਰਿ ਗਵਾਈ ॥੧॥
(ਇਹ ਨਦੀਆਂ ਆਖਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ)
(ਅਨੇਕਾਂ) ਵਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਮੈਲ ਨਾਲ ਲਿਬੜੇ ਹੋਏ (ਜੀਵ) (ਸਾਡੇ ਵਿੱਚ (ਆ ਕੇ)
ਚੁੱਭੀਆਂ ਲਾਂਦੇ ਹਨ (ਉਹ ਆਪਣੀ ਮੈਲ ਸਾਨੂੰ ਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ)
ਸਾਡੀ ਉਹ ਮੈਲ ਸੰਤ^ਜਨਾਂ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਦੀ ਧੂੜ ਦੂਰ ਕਰਦੀ ਹੈ ॥੧॥
ਕਿਲਵਿਖ = ਪਾਪ ॥ ਕਿਲਵਖਿ
ਮੈਲੁ ਭਰੇ = ਪਾਪਾਂ ਦੀ ਮੈਲ ਨਾਲ ਲਿਬੜੇ ਹੋਏ (ਜੀਵ) ॥੧॥

ਕਿ ਸਾਰਸ੍ਵਤੀ ਹੈ ॥
Ki saarasvatee hai ||

ਜਾਂ ਸਰਸਵਤੀ ਹੈ,

She was looking beautiful like the rivers, Ganges, Yamuna and Sarasvati or the city of Dwarka
310

ਰੁਦ੍ਰ ਅਵਤਾਰ - ੩੧੦/੨

ਮਲਾਰੁ ਮਹਲਾ ੪ ॥
ਗੰਗਾ ਜਮੁਨਾ ਗੋਦਾਵਰੀ ਸਰਸੁਤੀ ਤੇ ਕਰਹਿ ਉਦਮੁ ਧੂਰਿ ਸਾਧੂ ਕੀ ਤਾਈ ॥
ਗੰਗਾ, ਜਮਨਾ, ਗੋਦਾਵਰੀ, ਸਰਸ੍ਵਤੀ (ਆਦਿਕ ਪਵਿੱਤਰ ਨਦੀਆਂ)
ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਸੰਤ ਜਨਾਂ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਦੀ ਧੂੜ ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਲਈ
ਜਤਨ ਕਰਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ ॥

ਗਇਆ ਪਿਰਾਗ ਸਰਸੁਤੀ;
ਗੋਮਤੀ ਦੁਆਰੇ।
ਗਯਾ, ਪ੍ਰਯਾਗ, ਸੁਰਸਵਤੀ, ਗੋਮਤੀ ਨਦੀ ਦੇ
ਦੁਆਰੇ (ਪਰਸੇ)।

ਕਹੇ ਬੈਨ ਸਾਰਸ੍ਵਤੀ ਪੇਖਿ ਬਾਲਾ ॥
Kahe bain saarasvatee pekhi baalaa ||
ਸਰਸਵਤੀ ਨੇ ਬਚਨ ਕੀਤਾ, ਹੇ ਰਾਜ ਕੁਮਾਰੀ।

Sarasvati, seeing the damsel said to her again, "O princess ! See these superb kings; O my beloved ! Obey my saying; wed him, whom you consider worthy in your mind
51

ਬ੍ਰਹਮਾ ਅਵਤਾਰ ਅਜ - ੫੧/੧

ਲੈ ਸੰਗ ਤਾਸ ਸਾਰਸ੍ਵਤਿ ਆਪ॥
Lai sang taas saarasvati aap ||

ਜਿਸ ਸਰਸਵਤੀ ਨੂੰ ਸਾਰਾ ਜਗਤ ਜਪਦਾ ਹੈ,

Sarasvati, the goddess worshipped by the world, said to the princess, "O princess ! Look at these princes, who even excel Indra
"40

ਬ੍ਰਹਮਾ ਅਵਤਾਰ ਅਜ - ੪੦/੧

ਸਾਰਸ੍ਵਤੀ ਨ ਸਕੈ ਕਹਿ ਰੂਪ
ਸਿੰਗਾਰ ਕਹੈ ਮਤਿ ਕਉਨ ਬਿਚਾਰੀ ॥

Saarasvatee na sakai kahi roop singaar kahai mati kaun bichaaree ||

ਸਰਸਵਤੀ (ਉਸ ਦੇ) ਰੂਪ ਨੂੰ ਕਹਿ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ, ਉਸ ਦੇ ਰੂਪ ਅਤੇ ਸ਼ਿੰਗਾਰ ਨੂੰ ਕਹਿਣ ਦੇ ਸਮਰਥ ਮੇਰੀ ਬੁੱਧੀ ਕਿਥੇ ਹੈ ।

The king with the arrows of his eyes, wounded all the townfolk; even Sarasvati is uncable to describe the charm of his beauty;

ਬ੍ਰਹਮਾ ਅਵਤਾਰ ਅਜ - ੮੨/੨

ਪੁਨਿ ਕਹੈ ਤਾਸ ਸਾਰਸ੍ਵਤੀ ਬੈਨ ॥

Puni kahai taas saarasvatee bain ||

ਫਿਰ ਸਰਸਵਤੀ ਨੇ ਉਸ ਨੂੰ ਬਚਨ ਕੀਤਾ

Sarasvati said to her again, "Here is a king of the West, you may see him; the princess saw his natural features, but she did not like him also
42

ਬ੍ਰਹਮਾ ਅਵਤਾਰ ਅਜ - ੪੨/੧

ਮੁਖ ਭਈ ਆਨਿ ਸਰਸ੍ਵਤੀ ਆਪੁ ॥

Mukh bhee aani sarasvatee aapu ||

(ਸਾਰਿਆਂ) ਦੇ ਮੁਖ ਵਿੱਚ ਸਰਸਵਤੀ ਆਪ ਆਦ ਬਿਰਾਜੀ

The king invited the kings of all the countries, who came to the kingdom of Subahu with their armies; the adorable goddess Sarasvati came to reside in the mouths of all them and all of them with the desire of marrying that girl, offered prayers alongwith their people
7

सरस्वती बोर्ड व सरस्वती पाठ्यक्रम समिति की Recommendation पर हरियाणा सरकार व SCRT द्वारा अपने पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी से जुड़े अध्याय को शामिल किया है जो अब कक्षा 6वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को सरस्वती नदी के बारे में विस्तृत जानकारी देगा।

पाठ्यक्रम में सरस्वती-सिन्धु सभ्यता :

पहले किसी भी पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी का वर्णन नहीं आता था। अब बोर्ड के प्रयासों से व डॉ. प्रीतम सिंह, सहायक निदेशक, डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्टडी सैन्टर, कुरुक्षेत्र की अध्यक्षता में एक पाठ्यक्रम समिति का गठन करके कक्षा 7वीं से कक्षा 12वीं तक के पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है। सरस्वती सिन्धु नदियों के उपजाऊ मैदान में भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता का उदय हुआ। इस सभ्यता के पुरास्थल बड़ी संख्या में सरस्वती व सिन्धु नदियों के किनारे पर होने के कारण इस सभ्यता को सरस्वती-सिन्धु सभ्यता कहा जाता है। हालांकि इस सभ्यता को 'सिन्धु सभ्यता' और 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से भी जाना जाता है।

सर्वप्रथम 1921 ई. में दयाराम साहनी ने पंजाब प्रांत में हड़प्पा और 1922 ई. में राखल दास बनर्जी ने सिंधु प्रांत में मोहनजोदड़ो नामक पुरास्थलों का उत्खनन किया। जिसके फलस्वरूप इस अज्ञात भारतीय नगरीय सभ्यता के महत्त्व की ओर लोगों का विशेष रूप से पुरातत्त्वविदों का आकर्षण बढ़ा।

इसके पुरास्थल भारत में पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तरी राजस्थान, गुजरात और पाकिस्तान में बलूचिस्तान, सिंध आदि प्रान्तों में मिलते हैं। राखीगढ़ी, बनवाली (हरियाणा), मोहनजोदड़ो (सिंध), हड़प्पा (पंजाब), धौलावीरा (गुजरात) और कालीबंगा (राजस्थान) इस सभ्यता के प्रमुख नगर थे। रेडियो कार्बन तिथियों से पता चलता है कि 7500-7000 ई. पूर्व सरस्वती नदी घाटी को प्रथम कृषि संस्कृतियों के लोगों ने अपना निवास स्थान बनाना शुरू कर दिया था।

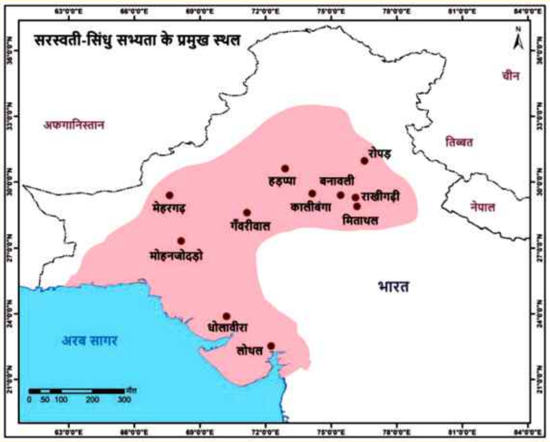

चित्र 1 : सरस्वती-सिंधु सभ्यता के पुरास्थल

चित्र 7: मुहरें

चित्र 8: मिट्टी की कलाकृतियाँ

चित्र 4 : लोथल बंदरगाह

चित्र 3 : स्नानागार मोहनजोदड़ो

सरस्वती–सिन्धु सभ्यता की नगर योजना में सड़कों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। मुख्य सड़कें नगर को पांच–छः खण्डों में विभाजित करती थीं। मोहनजोदड़ो में मुख्य सड़कें 9.15 मीटर तथा गलियाँ औसतन 3.0 मीटर चौड़ी थीं। कालीबंगा, राखीगढ़ी व मिताथल की सड़कें भी चौड़ी थीं। सड़कें कच्ची होती थीं। साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता था। कूड़े–कचरे के लिए सड़कों के किनारे कूड़ेदान रखे जाते थे।

सरस्वती–सिन्धु सभ्यता की कला के अंतर्गत प्रत्थर, धातु और मिट्टी की मूर्तियों का उल्लेख किया जाता है। इसके अतिरिक्त मुहरें, मनके और मिट्टी के बर्तन इसके सौन्दर्यबोध को इंगित करते हैं। पत्थर मूर्तियों में सबसे उल्लेखनीय 19 सेंटीमीटर लम्बी खण्डित पुरुष की मूर्ति मोहनजोदड़ो से मिली है, मोहनजोदड़ो से विश्वविख्यात धातु की नर्तकी की मूर्ति मिली है। पुरुषों, स्त्रियों व पशु–पक्षियों की भी मिट्टी की मूर्तियाँ मिली हैं। मानव की मिट्टी की मूर्तियाँ, आभूषण और वेशभूषा के साथ मिलती हैं। सरस्वती–सिन्धु सभ्यता की कला में मुहरों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मुहरें मुख्यतः चौकोर या आयताकार हैं।

चित्र 5 : पुरुष की मूर्ति

चित्र 6 : मिट्टी की मूर्तियाँ

विद्वानों का मानना है कि, 'सरस्वती–सिन्धु सभ्यता के प्रशासन का संचालन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नामक दो राजधानियों से होता था।' लेकिन राखीगढ़ी और धौलावीरा के आकार को देखकर उनके महत्त्व को भी नकारा नहीं जा सकता। ये पुरास्थल भी सरस्वती–सिन्धु सभ्यता के महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक नगरों के रूप में रहे होंगे। धौलावीरा में इस वर्ग के लोग भी दो अलग–अलग आवासीय क्षेत्रों में रहते थे। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में आवासीय क्षेत्र रक्षा–प्राचीर से घिरे हुए नहीं थे किंतु कालीबंगा,

लोथल, बनावली और धौलावीरा में किलेबंदी के साक्ष्य मिले हैं। सरस्वती–सिन्धु सभ्यता के समाज में कृषक, कुम्भकार, बढ़ई, नाविक, श्रमिक, आभूषण बनाने वाले शिल्पी और जुलाहे आदि अन्य महत्त्वपूर्ण वर्ग थे।

सरस्वती–सिन्धु सभ्यता के निवासी वस्त्र और आभूषण के विशेष शौकीन थे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त पत्थर की मूर्ति तिपतिया अलंकृत शाल ओढे हुए हैं। कालीबंगा से प्राप्त जुते हुए खेत और बनावली से प्राप्त हल का नमूना भी उच्च स्तरीय कृषि को प्रमाणित करते हैं।

राखीगढ़ी और भिरडाना से कार्नेलियन की कार्यशाला के प्रमाण मिले हैं। मिट्टी के बर्तन, ईंट उद्योग, उत्कीर्ण शिल्प और वस्त्र उद्योग भी अत्यन्त विकसित एवं प्रचलित थे। समुद्री मार्ग के प्रमाण मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर पर अंकित नाव के चित्र और लोथल से मिले मिट्टी की नाव के खिलौने से मिलता है। मेसोपोटामिया के अभिलेख से पता चलता है कि उनके मेलुहा (सरस्वती–सिन्धु सभ्यता) से व्यापारिक सम्बन्ध थे। लोथल से बंदरगाह के साक्ष्य भी मिले हैं। उत्खनन में बड़ी मात्रा में बाट और तराजू के पलड़े मिले हैं। तोल की इकाई 16 के अनुपात में थी। मोहनजोदड़ो से सीप और लोथल से हाथीदांत के बने पैमाने भी मिले हैं। मोहनजोदड़ा से प्राप्त एक मुहर पर सींग वाले त्रिमुखी पुरुष को सिंहासन पर योग मुद्रा में बैठे दिखाया गया है।

चित्र 10 : मृदभांड

चित्र 11 : आभूषण

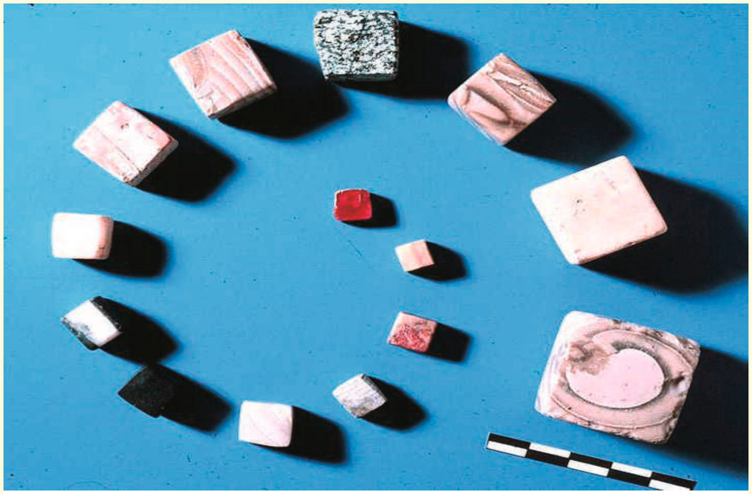

चित्र 19 : बाट

सरस्वती पाठ्यक्रम की रूपरेखा

जब सरस्वती नदी के इतिहास के बारे में किताबों में देखा तो सरस्वती नदी के बारे में बच्चों को पढ़ाने वाले पाठ्यक्रम में यह विषय बिल्कुल भी नहीं था। तब ध्यान में आया कि एक सरस्वती पाठ्यक्रम समिति का गठन किया जाए ताकि स्कूलों एवं यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी के इतिहास को बताया जा सके। इस संदर्भ में डॉ. प्रीतम सिंह, डिप्टी डायरेक्टर, अंबेडकर चेयर, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के नेतृत्व में एक पाठ्यक्रम समिति का गठन किया गया एवं सरस्वती नदी के इतिहास को लेकर समिति की कई बार बैठकें आयोजित हुईं और समिति के प्रयासों से सातवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के पाठ्यक्रम में सरस्वती नदी पाठ्यक्रम को जोड़ा गया और अब वर्तमान में सरस्वती नदी के इतिहास के बारे में बच्चे अपने पाठ्यक्रम में पढ़ रहे हैं और उनकी जानकारी भी दे रहे हैं। इस कार्य हेतु पूरी पाठ्यक्रम समिति व माननीय शिक्षा मंत्री श्री कुंवर पाल गुर्जर, माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

पाठ्यक्रम समिति के सदस्य

1. डॉ. प्रीतम सिंह, सहायक निदेशक, भीमराव अंबेडकर स्टडी सेंटर, कुरुक्षेत्र
2. प्रोफेसर ए. आर. चौधरी, डायरेक्टर, सी. आर. एस. आर., कुरुक्षेत्र
3. डॉ. रामेन्द्र, निदेशक, विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र
4. डॉ. दिनेश यादव, इतिहास प्रवक्ता, राजकीय आदर्श संस्कृति विद्यालय, इस्माईलाबाद
5. श्री रामपाल, पूर्व प्रधानाचार्य
6. प्रोफेसर तनु मलिक, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
7. डॉ. राजेश कुमार, इतिहास प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अंजंथली
8. डॉ. मनोज कुमार, इतिहास प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग
9. डॉ. प्रवीण कुमार, इतिहास प्रवक्ता, डाइट पलवल
10. डॉ. रमेश कुमार धारीवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय अग्रवाल, बिलासपुर
11. डॉ. गोपाल प्रसाद, एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र
12. प्रोफेसर प्रियातोश शर्मा, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
13. प्रोफेसर आशीष कुमार
14. डॉ. लक्ष्मी नारायण, इतिहास प्रवक्ता
15. डॉ. लोकेश कुमार, भूगोल प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दबारकी कलां
16. श्रीमती केतकी राणा, भूगोल प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कनिपला
17. डॉ. प्रीतिका, भूगोल प्रवक्ता, राजकीय उच्चतर विद्यालय, जलबेड़ा
18. डॉ. सुनील कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, डी.ए.वी. कॉलेज, करनाल
19. डॉ. संदीप कुमार, भूगोल प्रवक्ता, डाइट पलवल
20. डॉ. दीपा नथालिया, अनुसंधान अधिकारी, सरस्वती बोर्ड, पंचकूला
21. डॉ. नरेन्द्र सिंह डबास, एससीईआरटी, गुरुग्राम
22. डॉ. सुमन चौहान, असिस्टेंट प्रोफेसर, कुरुक्षेत्र
23. डॉ. अंजू गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, कुरुक्षेत्र
24. प्रोफेसर एस.डी. कौशिक, कुरुक्षेत्र

सरस्वती पाठ्यक्रम समिति के सदस्यगण

सरस्वती सिन्धु घाटी सभ्यता का अध्याय एन.सी.ई.आर.टी. छठी कक्षा में सम्मिलित किया गया है।

The Beginnings of Indian Civilisation

CHAPTER 6

The most ancient civilisation of India, known variously as the Harappan, Indus or Indus-Sarasvatī Civilisation, was indeed remarkable in many ways. ... [It showed how] a well-balanced community lives — in which the differences between the rich and the poor are not glaring. ... In essence, the Harappan societal scenario was not that of 'exploitation', but of mutual 'accommodation'.

— *B.B. Lal*

The Big Questions ?

1. *What is a civilisation?*
2. *What was the earliest civilisation of the Indian Subcontinent?*
3. *What were its major achievements?*

0681CH06

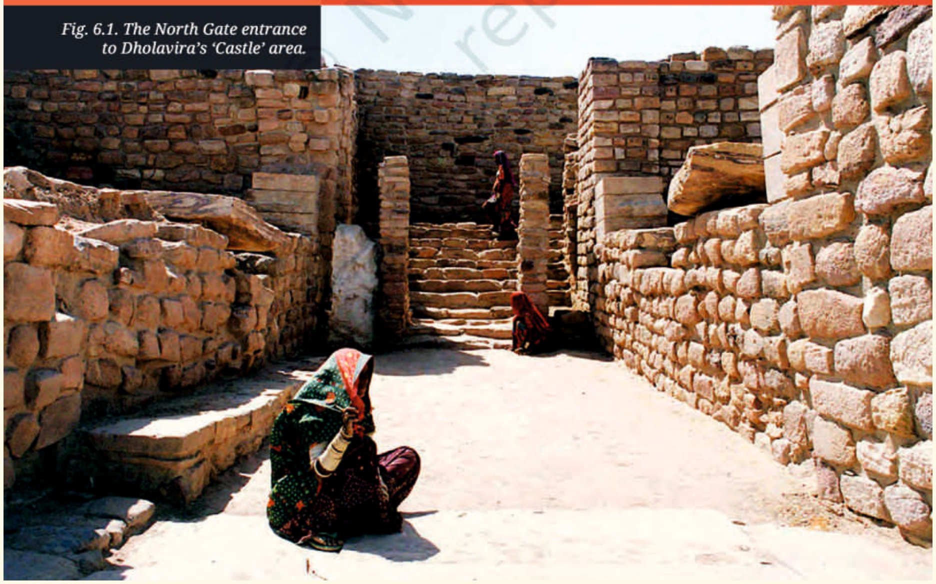

Fig. 6.1. The North Gate entrance to Dholavira's 'Castle' area.

What Is a Civilisation?

Metallurgy: Includes the techniques of extracting metals from nature, purifying or combining them, as well as the scientific study of metals and their properties.

At the end of Chapter 4, we saw the first human groups settling down, practising agriculture, developing some technologies (such as construction, **metallurgy**, transport) and moving towards 'civilisation'.

What, then, is civilisation? In general, the term is used for an advanced stage of human societies. To be precise, we will consider here that a 'civilisation' should have at least the following characteristics:

- some form of **government and administration** — to manage a more complex society and its many activities
- **urbanism** — town-planning, the growth of cities and their management, which generally includes water management and a drainage system
- a variety of **crafts** — including the management of raw materials (such as stone or metal) and the production of finished goods (such as ornaments and tools)
- **trade** both internal (within a city or a region) and external (with distant regions or other parts of the world) — to exchange all sorts of goods
- some form of **writing** — needed to keep records and to communicate
- **cultural ideas** about life and the world, expressed through art, architecture, literature, oral traditions or social customs
- a productive **agriculture** — enough to feed not just the villages, but also the cities.

THINK ABOUT IT

Which of the above characteristics do you think is the most fundamental — that is, a characteristic essential to the development of all others?

© NCERT not to be republished

LET'S EXPLORE

For each characteristic in the list above, can you make a list of professions or occupations that might exist in such a society?

It is easy enough to see that all these characteristics are present in most societies in the world today. But when did civilisation begin, in the sense we have now defined?

Civilisation began at different times in different parts of the world. In the region known as Mesopotamia (modern Iraq and Syria), that happened about 6,000 years ago, and the civilisation in ancient Egypt followed a few centuries later. You will learn about these and a few more civilisations in a later grade. In many ways, humanity would not have reached its present stage without the enormous contributions and advances of those ancient civilisations.

For now, however, we will only look at the Indian Subcontinent, and its northwest region is where our story begins.

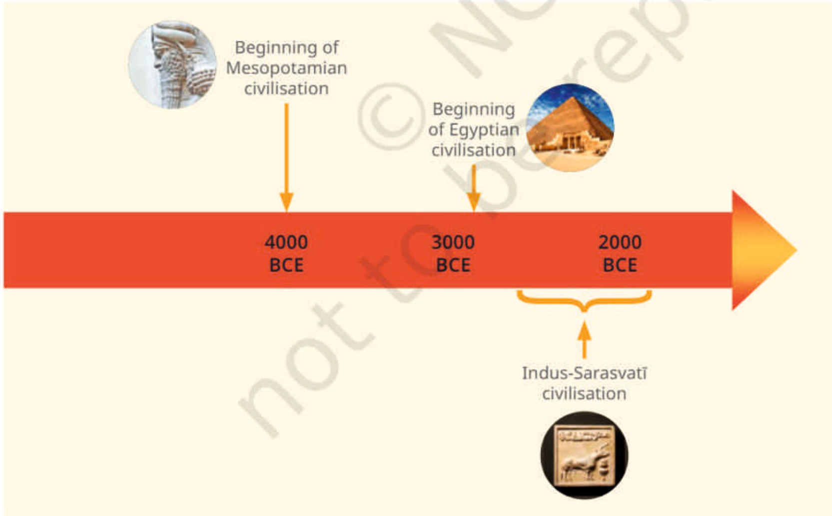

Fig. 6.2. Timeline showing the period of the Indus-Sarasvatī civilisation, from about 2600 to 1900 BCE.

© NCERT not to be republished

From Village to City

Tributary: A river that flows into a larger river (or lake). For instance, the Yamuna is a tributary of the Ganga.

The vast plains of the Punjab (today divided between India and Pakistan) and Sindh (now in Pakistan) are watered by the Indus River and its **tributaries**. This made those plains fertile and, therefore, favourable to agriculture. A little further east, a few millenniums ago, another river, the Sarasvatī, used to flow from the foothills of the Himalayas through Haryana, Punjab, parts of Rajasthan and Gujarat (see Fig. 6.3). In this whole region, from about 3500 BCE, villages grew into towns, and with increasing trade and other exchanges, those towns further grew into cities. This transition happened around 2600 BCE.

Archaeologists gave this civilisation several names — 'Indus', 'Harappan', 'Indus-Sarasvatī' or 'Sindhu-Sarasvatī' civilisation. We will use all these terms. Its inhabitants are called 'Harappans'. It is one of the oldest civilisations in the world.

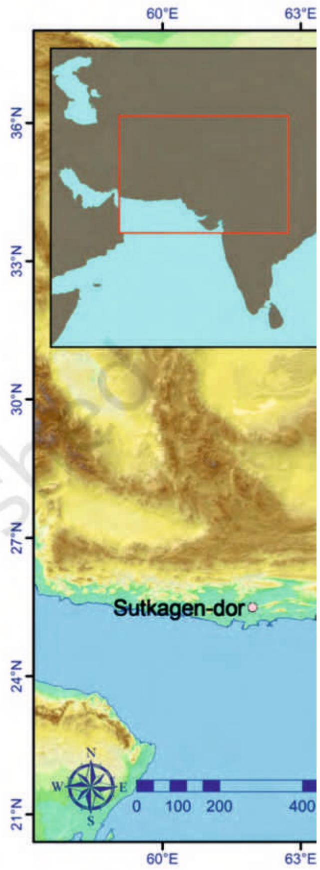

DON'T MISS OUT

Why are the inhabitants of this civilisation called 'Harappans' today? That is simply because the city of Harappa (today in Pakistan's Punjab) was the first of this civilisation to be excavated, way back in 1920–21, over a century ago.

This development is also called the 'First Urbanisation of India'.

© NCERT not to be republished

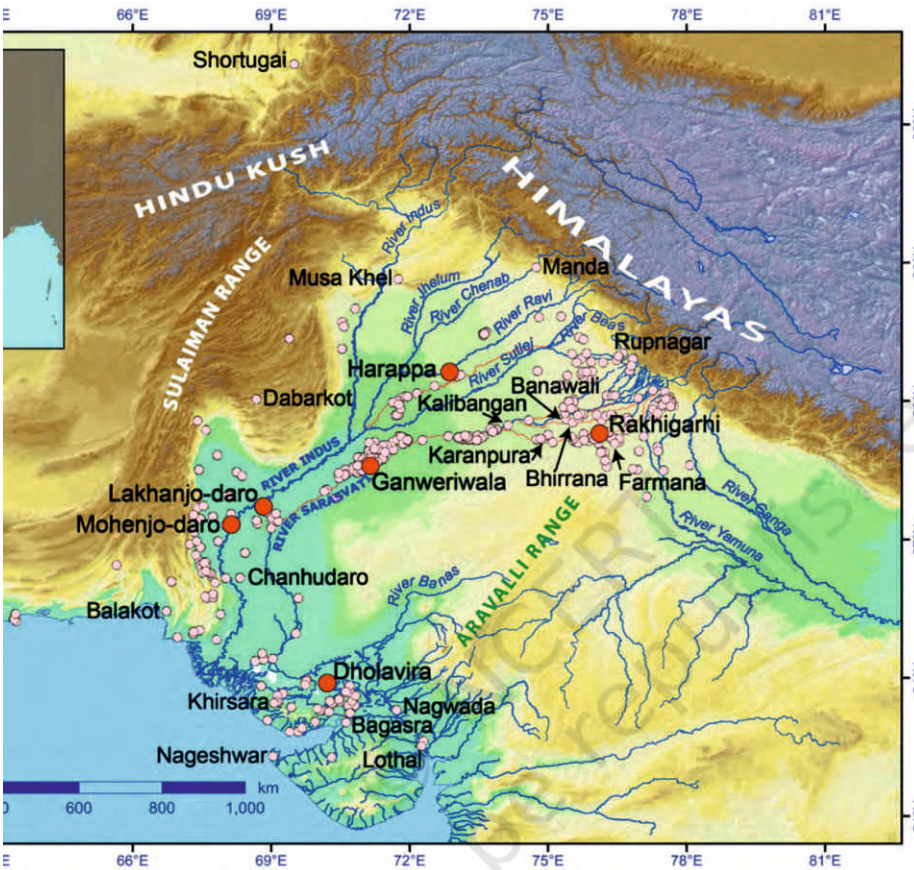

Fig. 6.3. Map of some of the main settlements of the Indus-Sarasvatī civilisation. Notice the natural boundaries formed by the mountain ranges (in brown colour).

LET'S EXPLORE

Some of the important cities of this civilisation are marked in the map (Fig. 6.3). As a class activity, can you try to match these cities with the modern states or regions in the table on the next page?

Harappan city	Modern state / region
Dholavira	Punjab
Harappa	Gujarat
Kalibangan	Sindh
Mohenjo-daro	Haryana
Rakhigarhi	Rajasthan

The Sarasvatī River

The map (Fig. 6.3 on page 89) shows the Indus (or Sindhu) and its five main tributaries; important cities grew along those rivers, such as Mohenjo-daro and Harappa. But there are also many sites along the Sarasvatī River, which today goes by the name of 'Ghaggar' in India and 'Hakra' in Pakistan (hence the name 'Ghaggar-Hakra River'). This river is now seasonal, because it flows only during the rainy season.

The Sarasvatī River is first mentioned in the Ṛig Veda, an ancient collection of prayers which we will read about in Chapter 7. In this text, Sarasvatī is worshipped both as a goddess and as a river flowing 'from the mountain to the sea'. Later texts describe the river as drying up and eventually disappearing.

© NCERT not to be republished

Town-Planning

Harappa and Mohenjo-daro, now in Pakistan, were the first two cities of this civilisation to be discovered; their identification goes back to 1924, a century ago. Several sites followed in the Indus plains, which is why the civilisation was initially called 'Indus Valley civilisation'.

Later on, other major cities, such as Dholavira (in Gujarat), Rakhigarhi (in Haryana), Ganweriwala (in the Cholistan desert of Pakistan), and hundreds of smaller sites (such

THINK ABOUT IT

You may have come across the term 'Indus Valley civilisation' and noticed that we have not used it. A look at the map (Fig. 6.3 on page 89) explains why the term 'Valley' is obsolete, as we now know that the civilisation extended much beyond the Indus region.

as Lothal in Gujarat), were discovered, some of them excavated. Such discoveries continue even today! It is interesting to note that the Sarasvatī basin includes not only two major cities — Rakhigarhi and Ganweriwala — but also several smaller ones (Farmana in Haryana, Kalibangan in Rajasthan) and a few towns (Bhirrana and Banawali, both in Haryana); indeed, the map (Fig. 6.3 on page 89) makes clear the high density of sites in that region.

The larger Harappan cities were built according to precise plans. They had wide streets (Fig. 6.4 and 6.5 on page 92), which were often oriented to the cardinal directions. Most cities seem to have been surrounded by **fortifications** and had two distinct parts — the 'upper town', where the local **elite** probably lived, and the 'lower town', where common people lived.

Some large buildings seem to have been used for collective purposes — for instance, warehouses where goods to be transported were stored. Individual houses of various sizes lined the streets and smaller lanes. Interestingly, the quality of construction was the same for small and big houses. All those buildings were generally made of bricks.

The purpose of some of the structures remains a matter of debate. This is the case of the famous 'Great Bath' in Mohenjo-daro (Fig. 6.6 on page 93), a small but elaborate tank which measured about 12 x 7 metres and had waterproofing materials (such as natural bitumen, a form of tar) applied on top of carefully laid-out bricks. The tank

Fortification: A massive wall surrounding a settlement or city, generally for protective purposes.

Elite: Here, the word refers to the higher layers of the society, such as rulers, officials, administrators, and often priests.

© NCERT not to be republished

(Top) Fig. 6.4. A wide street at Kalibangan (Rajasthan), in the lower town area.

(Right) Fig. 6.5. Housing area in Dholavira, with perpendicular streets, in the middle town (Dholavira had three distinct zones, not two as in other cities). Also, in this city, the foundations of most buildings were made with stones.

© NCERT not to be republished

The End or a New Beginning?

Around 1900 BCE, this Sindhu-Sarasvatī civilisation, despite all its achievements, began to fall apart. The cities were abandoned one by one. If any inhabitants remained, they adopted a rural lifestyle in the changed environment — it appears that the earlier government or administration no longer existed. Gradually the Harappans scattered over hundreds, if not thousands, of small rural settlements.

वेदों, पुराणों व महाभारत में सरस्वती नदी का वर्णन

दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च।

ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे।।   महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:4)

जो सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती के उत्तर कुरुक्षेत्र में वास करते हैं, वे मानो स्वर्गलोक में ही रहते हैं।

तत्र मासं वसेद् धीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर।

यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः।।

गन्धर्वाप्सरसो यक्षाः पन्नगाश्च महीपते।

ब्रह्मक्षेत्रं महापुण्यमभिगच्छन्ति भारत।।   महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:5)

नारदजी कहते हैं – युधिष्ठिर! वहाँ सरस्वती के तट पर धीर पुरुष एक मास तक निवास करें क्योंकि महाराज! ब्रह्मा आदि देवता, ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष और नाग भी उस परम पुण्यमय ब्रह्मक्षेत्र को जाते हैं।

ततो गच्छेत राजेन्द्र द्वारपालमरन्तुकम्।

तच्च तीर्थं सरस्वत्यां यक्षेन्द्रस्य महात्मनः।।

तत्र स्नात्वा नरो राजन्नग्निष्टोमफलं लभेत्। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:52)

राजेन्द्र! तदनन्तर अरन्तुक नामक द्वारपाल के पास जाय। महात्मा यक्षराज कुबेर का वह तीर्थ सरस्वती नदी में है। राजन्! वहाँ स्नान करने से मनुष्य को अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र ब्रह्मावर्तं नरोत्तमः।

ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:53)

राजेन्द्र! तदनन्तर श्रेष्ठ मानव ब्रह्मावर्त तीर्थ को जाय। ब्रह्मावर्त में स्नान करके मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त कर लेता है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।

पृथदकमिति ख्यातं कार्तिकेयस्य वै नृप।

तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:141–142)

राजेन्द्र! तदनन्तर कार्तिकेय के त्रिभुवन विख्यात पृथूदक तीर्थ की यात्रा करे और वहाँ स्नान करके देवताओं तथा पितरों की पूजा में संलग्न रहे।

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि स्त्रिया वा पुरुषेण वा।
यत् किंचिदशुभं कर्म कृतं मानुषबुद्धिना।।
तत् सर्व नश्यते तत्र स्नातमात्रस्य भारत।
अश्वमेधफलं चास्य स्वर्गलोकं च गच्छति।।

महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:143-144)

भरत! स्त्री हो या पुरुष, उसने मानव-बुद्धि से अनजाने में या जान-बूझकर जो कुछ भी पाप कर्म किया है, वह सब पृथूदक तीर्थ में स्नान करने मात्र से नष्ट हो जाता है और तीर्थ सेवी पुरुष को अश्वमेध यज्ञ के फल एवं स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात् सरस्वती।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम्।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:145)

कुरुक्षेत्र तीर्थ को सबसे पवित्र कहते हैं, कुरुक्षेत्र से भी पवित्र है सरस्वती नदी, सरस्वती से भी पवित्र हैं उसके तीर्थ और उन तीर्थों से भी पवित्र हैं पृथूदक।

उत्तमं सर्वतीर्थानां यस्त्यजेदात्मनस्तनुम्।
पृथूदके जप्यपरो नैव श्वो मरणं तपेत्।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:146)

वह सब तीर्थों में उत्तम है, जो पृथूदक तीर्थ में जपपरायण होकर अपने शरीर का त्याग करता है, उसे पुनर्मृत्यु का भय नहीं होता।

गीतं सनत्कुमारेण व्यासेन च महात्मना।
एवं स नियतं राजन्नभिगच्छेत् पृथूदकम्।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:147)

यह बात भगवान् सनत्कुमार तथा महात्मा व्यास ने कही है। राजन्! इस प्रकार तीर्थ यात्री नियमपूर्वक पृथूदक तीर्थ की यात्रा करें।

पृथूदकात् तीर्थतमं नान्यत् तीर्थ कुरूद्वह।
तन्मेध्यं तत् पवित्रं च पावनं च न संशयः।।

महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:148)

कुरुश्रेष्ठ! पृथूदक से श्रेष्ठतम तीर्थ दूसरा कोई नहीं है। वही मेध्य, पवित्र और पावन है, इसमें संशय नहीं है।

तत्र स्नात्वा दिवं यान्ति येऽपि पापकृतो नराः।

पृथूदके नरश्रेष्ठ एवमाहुर्मनीषिणः।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:149)

नरश्रेष्ठ! पापी मनुष्य भी पृथूदक तीर्थ में स्नान करने से स्वर्ग लोक में चले जाते हैं, ऐसा मनीषी पुरुष कहते हैं।

मधुस्त्रवं च तत्रैव तीर्थं भरतसत्तम।

तत्र स्नात्वा नरो राजन् गोसहस्त्रफलं लभेत्।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:150)

भरतश्रेष्ठ! वहीं मधुश्रव तीर्थ है। राजन! इसमें स्नान करने से मनुष्य को सहस्त्र गोदान फल मिलता है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र तीर्थं मेध्यं यथाक्रमम्।

सरस्वत्यरूणायाश्च संगमं लोकविश्रुतम्।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:151)

राजेंद्र! तदनन्तर क्रमशः लोकविख्यात सरस्वती–अरूणा संगम नामक पवित्र तीर्थ की यात्रा करे।

त्रिरात्रोपोषितः स्नात्वा मुच्यते ब्रह्महत्यया।

अग्निष्टोमातिरात्राभ्यां फलं विन्दति मानव।।

आसप्तमं कुलं चैव पुनाति भरतर्षभ। महाभारत, द्वितीय खण्ड (83:152)

वहाँ स्नान करके तीन रात उपवास करने से ब्रह्म हत्या से छुटकारा मिल जाता है। इतना ही नहीं, वह मनुष्य अग्निष्टोमको और अतिरात्र यज्ञों से मिलने वाले फल को भी पा लेता है। भरतश्रेष्ठ! वह अपने कुल की सात पीढ़ियों को पवित्र कर देता है।

गंगायाश्च नरश्रेष्ठ सरस्वत्याश्च संगमे।

स्नात्वाश्वमेधं प्राप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति।। महाभारत, द्वितीय खण्ड (84:38)

नरश्रेष्ठ! गंगा और सरस्वती के संगम में स्नान करने से मनुष्य अश्वमेध यज्ञ का फल पाता और स्वर्ग–लोक में जाता है।

एवमाशीः प्रयुक्ता हि दक्षेण यजता पुरा।

इह ये वै मरिष्यन्ति ते वै स्वर्गजितो नराः।। (130:2)

एषा सरस्वती रम्या दिव्या चौघवती नदी।

एतद् विनशनं नाम सरस्वत्या विशाम्पते।। (130:3)

प्राचीनकाल में प्रजापति दक्ष ने यज्ञ करते समय यह आशीर्वाद दिया था कि जो मनुष्य यहाँ मृत्यु को प्राप्त होंगे वे

स्वर्गलोक पर अधिकार प्राप्त कर लेंगे। यह रमणीय, दिव्य और तीव्र प्रवाह वाली सरस्वती नदी है और यह सरस्वती का विनशन नामक तीर्थ है।

द्वारं निषादराष्ट्रस्य येषां दोषात् सरस्वती।

प्रविष्टा पृथिवीं वीर मा निषादा हि मां विदुः।।

एष वै चमसोद्भदेदो यत्र दृश्या सरस्वती।

यत्रैनामभ्यवर्तन्त सर्वाः पुण्याः समुद्रगाः।। **महाभारत (130:4)**

यह निषाद राज का द्वार है। वीर युधिष्ठिर! उन निषादों के ही संसर्ग दोष से सरस्वती नदी यहाँ इसलिए पृथ्वी के भीतर प्रविष्ट हो गयी कि निषाद मुझे जान न सकें। यह चमसोद्भेद तीर्थ है। जहाँ सरस्वती पुनः प्रकट हो गयी है। यहाँ समुद्र में मिलने वाली सम्पूर्ण पवित्र नदियाँ इसके सम्मुख आयी हैं।

तत्र चोर्मिमती राजन्नुत्पपात सरस्वती।।

तयोत्क्षिप्तः समूत्तस्थौ पूजयंस्त्रिधिवौकसः।। **महाभारत, चतुर्थ खण्ड (36:47)**

राजन! मुनि के इतना कहते ही कुएँ में तरंग मालाओं से सुशोभित सरस्वती लहरा उठी। उसने अपने जल के वेग से मुनि को ऊपर उठा दिया और वे बाहर निकल आये। फिर उन्होंने देवताओं का पूजन किया।

उदपानं च तं वीक्ष्य प्रशस्य च पुनः पुनः।। **महाभारत, चतुर्थ खण्ड (36:44)**

नदीगतमदीनात्मा प्राप्तो विनशनं तदा।। **महाभारत, चतुर्थ खण्ड (36:45)**

उदार चित्त वाले बलराम जी सरस्वती नदी के अन्तर्गत उदपान तीर्थ का दर्शन करके उसकी बारंबार स्तुति प्रशंसा करते हुए वहाँ से विनशन तीर्थ में चले गये।

ब्रह्मा जगत सृजति पालयतीन्दिरेशः,
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः । **(सरस्वती स्तोत्र)**

ऐसी सरस्वती के मार्ग की चर्चा किन शब्दों में करें जब उस वाग्देवी का शब्दों पर एकाधिपत्य है। किन्तु यह भी सत्य है कि बुद्ध से पूर्व भारत का इतिहास सरस्वती से जुड़ा है। जो सरस्वती को जाने वह ही इस इतिहास को जाने। अन्यथा सिन्धु सभ्यता रह जाएगी एक अपरिचित, वहीं समाप्त अध्याय और बुद्ध से कुछ ही पहले उत्तर–पश्चिम से उतरे असभ्य कबीले ही वैदिक सभ्यता के जनक। मानो इस क्षेत्र में प्रवेश करते ही उन्हें वह दार्शनिक ज्ञान प्राप्त हो गया जिससे उनके पूर्व–निवास क्षेत्र में रहे बन्धु–बान्धव अभी तक वंचित हैं। जर्मन इतिहासकारों द्वारा रचित इस रोचक कहानी के अनुसार इन कबीलों का ज्ञान शीघ्र ही उस शिखर पर जा पहुंचा जहां से उन्होंने ब्रह्मांड–रचयिता को ललकार कर व्यंग्य कसा।

ऋग्वेद में सरस्वती

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः ।। **ऋग्वेद, संहिता भाग 1 (1:13:9)**

इळा, सरस्वती और मही ये तीनों देवियाँ सुखकारी और क्षयरहित हैं। ये तीनों बिछे हुए दीप्तिमान् कुश के आसनों पर विराजमान हों।

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्किा मनुष्वदिहचेतयन्ती ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सयोनं सरस्वतीस्वपसः सदन्तु ।। **ऋग्वेद, संहिता भाग 4 (10:110:8)**

अल बरुनी बुतशिकन महमूद गजनी के साथ भारत आया। उसने देखा कि कोई सरस्वती नाम की नदी सोमनाथ के समीप सागर में विलय होती है। पर सरस्वती तो वडवानल को सागर पहुंचाती विलुप्त हो गई थी। हरियाणा के पृथुदक (पेहवा) में सरस्वती तीर्थ का उल्लेख महाभारत, वामनपुराण, स्कंदपुराण आदि में उपलब्ध है । कुरुक्षेत्र की 48 कोस की परिक्रमा के पुराणों में वर्णित सैंकड़ो तीर्थ, जिनमे से 134 की पहचान कुरुक्षेत्र विकास मण्डल कर चुका है, सरस्वती और इसकी सहायक नदियों से जुड़े हैं। वामनपुराण के अनुसार मार्कण्डेय ऋषि की याचना पर सरस्वती ने इस क्षेत्र को अनुग्रहित कियाः

तस्मिन् प्लक्षे स्थितां षट्वा मार्कण्डेयो महामुनिः।
प्रणिपत्य तदा मूर्ध्ना तुष्टावाथ सरस्वीतीम्।।
त्वं देवी सर्वलोकाना माता देवारणिः शुभा।
सदसद् देवी यत्किंचिन्मोक्षदाय्यर्थवत् पदम्।। **श्रीवामनपुराण (11:5,6)**

तो एक ओर वैदिक सरस्वती, विशाल और सर्वोत्तम नदी, जिसका उद्गम हिमालय से, कदाचित् तिब्बत में मानसरोवर से, और दूसरी ओर हजारों वर्ष बाद एक पौराणिक सरस्वती, जो निकलती है।

शिवालिक की मिट्टी की पहाड़ियों से पंचकूला के समीप गहरे नलकूपों की खुदाई में निकले मिट्टी, रेत और पत्थरों का अध्ययन कर एक शोध–लेख लिखा जिसका निष्कर्ष था कि 300 फीट नीचे एक नदी दबी है जिसमें प्रचुर मात्रा में निर्मल जल अभी भी प्रवाहित है। ऐसा ही निष्कर्ष जोधपुर के ऐरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट ने उस क्षेत्र के नलकूपों के अध्ययन से निकाला और वहाँ दबी हुई नदी की गहराई 2000 फीट से अधिक पाई गई ।

ऐसा माना गया कि सरस्वती, जो पौराणिक कथाओं के अनुसार वडवानल ले जाती पाताल में चली गई थी, उसका मार्ग भारी भूकंप, ज्वालामुखी गतिविधि और उसके बाद वर्षो तक जलमग्न रहने के कारण (जिसे प्रलय की संज्ञा दी गई) विलुप्त हो गया। शिवालिक पहाड़ियों की उत्पत्ति हुई और वैदिक सरस्वती भूमिगत हो गई, जैसा स्कंदपुराण में वर्णित हैः

भूमिं विदार्य तस्याधः प्रविष्टा गजगामिनी।
तदन्तर्धानमार्गेण प्रवृत्ता पश्चिमामुखी ।। **स्कंदपुराण (1:35:26)**

हिमालय से आता निर्मल जल कुछ पश्चिम की ओर सतलुज में मिल गया तो कुछ पूर्व की ओर टौंस नदी के माध्यम से छोटी सी यमुना को महिमावती बना गया। शिवालिक की पहाड़ियां अनेकों बरसाती नदियों का उद्‌गम बनी। प्रशंसक पुराण–रचयिता अम्बितमे, नदीतमे, देवितमे, सरस्वती को भुला न पाए और जो नदी लगभग उसी मार्ग पर चल निकली थी उन्होंने उसे ही सरस्वती की संज्ञा दे दी।

पुराण विशुद्ध इतिहास नहीं हैं। तथ्य, धार्मिक श्रद्धा और लेखक की कल्पना के समावेश से बनी इन वृहद् रचनाओं से निकाले तथ्यों का व्यक्तिगत मत से परे होना कठिन है। जहां मत है वहां मतभेद होना स्वाभाविक है। पौराणिक सरस्वती का मार्ग एक मत है और मतभेद से घिरा है। सौ वर्ष से अधिक समय से यूरोप (जैसे सी. एफ. ओल्डहैम, 1893) और भारत के विद्वान् इसे वर्त्तमान घग्गर नदी का मार्ग मानते रहे। अब कुछ इसे शद्धति का मार्ग मानते हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार जिसकी भुजाएं है, विद्वान उसके वश में रहते हुए उसे ढूंढने की क्रीड़ा में रत अपना मत प्रकट करते रहेंगे।

किन्तु श्रद्धा तो तर्करहित विश्वास पर आधारित है। सरस्वती लुप्त हो गई तो श्रद्धालु को थोड़ा पूर्व में जाकर गंगा मिल गई और उसकी श्रद्धा से सरस्वती भी प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर प्रगट हो गई। अब तर्क में लिप्त विद्वान् भले ही कहें कि हरियाणा की सरस्वती प्रयाग कैसे पहुंची परन्तु वैदिक सरस्वती का पावन जल टौंस के माध्यम से यमुना के साथ प्रयाग तो पहुंच ही रहा है। एक और त्रिवेणी–संगम सोमनाथ के समीप प्रभास पाटन में है जहां हिरण्या और कपिला अदृश्य सरस्वती से मिलती हैं। कहानी है कि सोम (चन्द्रमा) अपनी कान्ति खो बैठा तो सरस्वती में स्नान से उसकी कान्ति लैट आई और वहाँ सोमनाथ का मंदिर बना। अल बरुनी और एरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट ठीक ही कहते प्रतीत होते हैं। महान विचारक श्री अरविंद ने कहा है कि तर्क सत्य का सबसे बड़ा शत्रु है। ज्ञान और तर्क के साथ शुद्ध बुद्धि और विवेक चाहिए। सरस्वती का वाहन, श्वेत हंस, उस शुद्धता और विवेक का प्रतीक है जिसमें दृष्टांत–रूप में दूध और पानी को अलग करने की क्षमता है।

अब पूर्वी भारत के निवासी, विशेष रूप से बंगाल और ओडिशा के, जिन्हे गर्व है कि वे सरस्वती के विशेष कृपापात्र हैं, भला कैसे स्वीकार करते कि देवी सरस्वती उनके क्षेत्र में आई ही नहीं। 1902 में प्रकाशित 'हुगली जिले का संक्षिप्त इतिहास' पुस्तक में लै. कर्नल डी. जी. क्रॉफर्ड लिखते हैं कि प्रोगेतिहासिक काल में सरस्वती उड़ीसा और बंगाल राज्यों के बीच सीमा थी। वर्तमान काल में भी वह एक छोटी, सरस्वती नामक नदी का उल्लेख करते हैं। ठीक ही ऋग्वेद में सरस्वती को आपप्रुषी (सर्वव्यापी) संज्ञा दी हैः

आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम ।
सरस्वती निदस्पातु ।। **ऋग्वेद संहिता, भाग 2 (6:61:11)**

पौराणिक सरस्वती के संबंध में जो भी मतभेद हों, वैदिक सरस्वती यह तो इंगित करती है कि वेदों का उद्‌गम भारत की भूमि पर ही हुआ और वेद किन्ही विदेशी कबीलों की देन नहीं हैं। वैदिक सरस्वती और इसलिए वैदिक काल प्रलय से पूर्व होने के स्पष्ट संकेत होने के दृष्टिगत यह मान सकते हैं कि वेद हमारी सबसे प्राचीन धरोहर हैं। भारत में 5000 वर्ष से भी अधिक पुरानी जिस सभ्यता के व्यापक अवशेष उत्खनन में मिल रहे हैं, अनुचित न होगा यदि उसे सरस्वती सभ्यता की संज्ञा दी जाए।

सरस्वती प्राजैक्ट पर बड़े-बड़े रिजर्वायर बनाकर बरसात के पानी को रोककर करोड़ों लि. पानी रिचार्ज किया व चार जिलों को बाढ़ से बचाया इसी हेतु सरस्वती बोर्ड के वाईस चेयरमैन श्री धूमन सिंह किरमच जी को जल प्रहरी अवोर्ड से सम्मानित किया गया।

जल प्रहरी
JAL PRAHARI
Supported by :
NITI Aayog
sarkaritel.com
we connect...
Knowledge Partners
Country Partner
Supporting Partners
EMBASSY OF DENMARK
CEEW
UNOPS

जल प्रहरी सम्मान

जल संरक्षण के प्रति
समर्पण भाव के लिए आपका आभार
Shri Dhumman Singh Kirmach
Deputy Chairman, Haryana Saravati Heritage Development Board
Date: 13" December, 2023 | New Maharastra Sadan, K.G. Marg, New Delhi-110001

Ameya Sathaye
Editor-in-Chief

Justice SS Chouhan
Jury Chairman

Anil Singh
Convenor

25 जून 2024 को हरियाणा साहित्य और संस्कृति अकादमी, पंचकुला, सरस्वती नदी पर अनुसंधान उत्कृष्टता केंद्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र और हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में कुरुक्षेत्र में 'एक थी नदी सरस्वती' नामक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी मे उपस्थित प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार साझा किए।

इस अवसर पर श्री भारत भूषण भारती जी, राजनीतिक सलाहकार, मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार भी उपस्थित थे, उन्होंने बताया कि तकनीकी जांच एजेंसियों ने सरस्वती कायाकल्प परियोजना के तहत डी.ए.एम., बैराज और जलाशय के निर्माण के लिए तकनीकी जांच कर ली है और यह परियोजना जल्द ही शुरु होगी। संगोष्ठी में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने सरस्वती बोर्ड द्वारा किए गए विकास कार्यो जैसे घाटों, तालाबों के निर्माण और विरासत स्थलों के विकास कार्यो पर भी प्रकाश डाला। वहाँ पर उपस्थित बुद्धिजीवियों को सरस्वती बोर्ड द्वारा खोजे गए अरुणाए, वरुणाए संगम का महत्व समझाया गया। इस अवसर पर जी.एस.आई. , ओ.एन.जी.सी. और इसरो जैसे संगठनों द्वारा किए गए शोध से सरस्वती नदी के अस्तित्व के संबंध में कई तथ्य सामने आए हैं।

सेमिनार के दौरान सरस्वती बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री धुमन सिंह किरमच जी ने कहा कि सरस्वती बोर्ड के प्रयासों की बदौलत 10वीं कक्षा के एस.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम में सरस्वती अध्याय को सफलतापूर्वक शामिल कर दिया गया हैं।

6 दिवसीय
अन्तर्राष्ट्रीय
सरस्वती
महोत्सव 2025
का शुभारम्भ
मुख्यमंत्री
श्री नायब सिंह
सैनी जी के द्वारा
आदि बद्री से
किया गया व
समापन
केन्द्रीय मंत्री श्री
मनोहर लाल जी
के द्वारा पिहोवा
में सरस्वती तीर्थ
पर किया

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा आयोजित कुछ सांस्कृतिक गतिविधियाँ

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा प्रति वर्ष वसन्त पंचमी के पावन अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव का आयोजन किया जाता है। जिसकी कुछ यादें निम्न प्रकार से हैं

1st International Sarasvati Mahotsav (2016) | 3rd International Sarasvati Mahotsav (2018) | 5th International Sarasvati Mahotsav (2020)

2nd International Sarasvati Mahotsav (2017) | 4th International Sarasvati Mahotsav (2019) | 6th International Sarasvati Mahotsav (2021)

7th International Sarasvati Mahotsav (2022)

8th Sarasvati Mahotsav (2023)

9th Sarasvati Mahotsav (2024)

8th International Sarasvati Mahotsav (2023)

9th Sarasvati Mahotsav (2024)

10th Sarasvati Mahotsav (2025)

सरस्वती नदी पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती सम्मेलन

हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड द्वारा वर्ष 2017 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सरस्वती सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिसके कुछ छायाचित्र निम्न हैं

1st International Conference (ICSR- 2017)

3rd International Conference (ICSR-2019)

5th International Conference (ICSR-2021)

2nd International Conference (ICSR-2018)

4th International Seminar on Sarasvati River (ISSR-2020)

6th International Conference (ICSR-2022)

7th Sarasvati Mahotsav Seminar - 2024

A International Conference was organized at Kurukshetra University, Kurukshetra on 30th to 1st February, 2025.

Exhibition in Gita Mahotsav and other important events

The Sarasvati Board plays an important role in raising awareness about Sarasvati's culture and related projects through events like Sarasvati Mahotsav. In addition this festival, the board actively takes part in the Gita Mahotsav exhibition every year and their events. Through its participation, the board aims to aware visitors about the Sarasvati River project. The board highlights its efforts to revive Sarasavti River and emphasizing its historical and cultural significance. By engaging in these events, the Sarasvati Board seeks to raise awareness and encourage community support for the restoration of the Sarasvati River, helping to preserve its legacy for future generations.

Year 2016:

- ❖ Kavi Sangam on the theme of Sarasvati River and its Heritages was organized on 22.10.2016 in Chandigarh.
- ❖ Exhibition - Sarasvati Heritage Yatra with Moving Exhibition from Pipli, KU, Jyotisar, Murtjapur, Pehowa, Gumthala Garu, Kayodaki to Kaithal from 11.2.2016 to 12.2.2016.
- ❖ International Gita Jayanti Mahotsav-2016 at Kurukshetra from 6th to 10th December, 2016 at Purshotampura Bagh at Brahamsaraovar, Kuruksheta

Year 2017:

- ❖ Exhibition- Sarasvati Heritage Yatra with Moving Exhibition commencing on 28.1.2017 from Adi Badri Yamuna Nagar, Panchkula, Ambala, Kurukshetra, Kaithal, Jind, Hisar, Fatehabad & concluded on 1.2.2017 at Sirsa The exhibition organized by Granth Akedmi at Inderdhanush Auditorium Sector- 5, Panchkula during the month of March- 2017.
- ❖ Haryana International Trade Expo 2017 from 24th-28th March, 2017 at Faridabad.
- ❖ India International Trade Fair-2017 in the month of October, 2017.
- ❖ International Gita Jayanti Mahotsav-2017 at Kurukshetra from 25th to 30th November, 2017 at PurshotampuraBagh at Brahamsaraovar, Kurukshetra.

Year 2018:

- ❖ Exhibition- Sarasvati Heritage Yatra with Moving Exhibition commencing on 18.1.2018 from Adi Badri, Yamuna Nagar, Panchkula, Ambala, Kurukshetra & concluded on 22.1.2018 at Pehowa and another Sarasvati Yatra commencing on 19.1.2018 from Sirsa, Fatehabad, Hisar, Jind, Kaithal and concluded on 22.1.2018 at Pehowa.
- ❖ Permanent road side Exhibition at Adi Badri.
- ❖ International Gita Jayanti Mahotsav-2018 at Kurukshetra from 13th to 17th December, 2018 at Purshotampura Bagh at Brahamsarovar, Kurukshetra.

Year 2019:

- ❖ Parvasi Bharatiya Divas-2019 at Banaras, India.
- ❖ International Sarasvati Mahotsav (ISM)-2019 at Pehowa.
- ❖ International Gita Jayanti Mahotsav-2019 at Kurukshetra from 23rd November to 10th December, 2019 at Purshotampura Bagh at Brahamsarovar, Kurukshetra.

Year 2020:

- ❖ International Gita Mahotsav (IGM)-2020 at Pehowa.

Year 2021:

- ❖ International Gita Mahotsav (IGM)-2021 at Pehowa.

Year 2022:

- ❖ International Gita Mahotsav (IGM)-2022 at Pehowa.

Year 2023:

- ❖ International Gita Mahotsav (IGM)-2023 at Pehowa.

सरस्वती बोर्ड की प्रदर्शनी के अवसर पर कुरुक्षेत्र में महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू जी व
मानानीय राज्यपाल श्री बण्डारू दत्तात्रेय जी अवलोकन करते हुए

सरस्वती बोर्ड की प्रदर्शनी के अवसर पर कुरुक्षेत्र में महामहिम
उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी व माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी
अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ अवलोकन करते हुए

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी
को जब उपाध्यक्ष धुमन सिंह किरमच जी
ने सरस्वती नदी का जल भेंट किया तो
उन्होंने उसे मस्तिष्क पर लगाया

सूरजकुण्ड मेला

Rejuvenation of Sarasvati River
Development of Sarasvati Heritage
Ground Water Recharge
Development of Pond
जनभागीदारी 'सरस्वती तीर्थ' पिहोवा की सफाई

सरस्वती बोर्ड के विकास कार्य
RESEARCH ACTIVITIES
Geological Survey of India (GSI)
Oil & Natural Gas Corporation (ONGC)

Development of Sarasvati Heritage
Ground Water Recharge
Benefits
Controling Pollution along the Sarasvati River
Development of Pond
Village Marchehri
4.8 Acre
Capacity
2.45 Crore Lt.
RESEARCH ACTIVITIES
Oil & Natural Gas Corporation (ONGC)

वैदिक सरस्वती नदी ‘‘जलाशय’’ (Sarasvati Conclave)

पंचायत भवन के सभागार में हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड की तरफ से जल प्रबंधन को लेकर सेमिनार आयोजित किया। इसमें सरस्वती नदी के किनारे बड़े-बड़े जलाशय बनाकर जल का प्रबंधन करने को लेकर विशेषज्ञों ने अपनी राय रखी।

उन्होंने कहा कि इससे कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, कैथल और अन्य जिलों में भूजल स्तर की स्थिति में सुधार होगा और डार्क जोन जैसी भयंकर समस्या से निजात भी मिलेगी। जमीन देने का प्रस्ताव बोर्ड को सौंपने वाली पंचायतों को बार्ड की तरफ से जलाशय का निर्माण करवाकर दिया जाएगा।

विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष धुमन सिंह किरमच, अधीक्षक अभियंता अरविंद कौशिक, अधिशासी अभियंता मनीश बब्बर, पूर्व सांसद कैलाशी सैनी, प्रोफेसर एम. एम. गोयल ने विधिक्त रूप से वैदिक सरस्वती नदी जलाशय के विषय पर आयोजित सेमिनार का विधिक्त रूप से शुभारंभ किया। इसमें सभी विषय विशेषज्ञों ने सरस्वती नदी के बहाव, जल प्रबंधन और जलाशयों का निर्माण करके डार्क जोन जैसी समस्या से निजात पाने के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए और आमंत्रित किए गए पंचों, सरपंचों, गांवों की समितियों के प्रतिनिधियों से सुझाव भी लिए।

उपाध्यक्ष ने कहा कि सरस्वती नदी के साथ सोम नदी, धनौरा नदी, राक्षी नदी, लिन्डा नाला, खंड नाला, चौतंग नाला, दाबा नदी, अजीजपुर, पिंजोरा ड्रेन, बैंटन नाला को सरस्वती नदी के साथ जोड़ने का प्रयास बोर्ड की तरफ से किया जा रहा है। इन नदियों और नालों को खुलवाने के लिए बोर्ड की तरफ से कार्य किया जा रहा है। इस समय बोर्ड की तरफ से पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी द्वारा जल बचाने और जल नीति के सपने को साकार करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों को अमलीजामा पहनाने के लिए बड़े-बड़े जलाशय बनाने की योजना पर काम किया जा रहा है। बोर्ड की तरफ से गांव बिहोली, रामपुरा, मरचेहड़ी और अन्य गांवों में जलाशयों का निर्माण किया जा चुका है और कई और गांवों में जलाशय बनाने का कार्य प्रगति पर है।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी.एस.आई.) के द्वारा दिया गया सारांश

उत्तरपश्चिमी भारत के जलोढ़ मैदान और विशेष रूप से यमुना–सतलुज दोआब क्षेत्र ने ऋग्वैदिक सरस्वती नदी से सम्बद्ध कई पुराचैनलों और नदियों की उपस्थिति के कारण 18वीं शताब्दी से लेकर अब तक पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित किया हैं। भूविज्ञान, भूभौतिकी, सुदूर संवेदन, पुरातत्व, अनुवांशिकी एवं इतिहास जैसे कई विषयों से कई प्रमाण प्राप्त हुए हैं जो इस तथ्य का समर्थन करते है कि लेट प्लेइस्टोसिन से होलोसीन युग के दौरान इस क्षेत्र में सक्रीय पुरा–नदी प्रणाली मौजूद थी।

प्राचीन हिंदू साहित्य जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में सरस्वती नदी के कई संदर्भ मिलते है जहाँ सरस्वती नदी को एक महासागर की भाँति सबसे शक्तिशाली और सभी नदियों में सर्वश्रेष्ठ, पहाड से समुद्र तक गर्जन करते हुए बहने वाली नदी के रूप में दर्शाया गया है। इतने विशाल और शक्तिशाली नदी का आकस्मिक रूप से विलुप्त हो जाना, विश्व स्तर के वैज्ञानिक समुदाय के लिए कौतुहल का विषय बन गया, जिसके अनुक्रम में इस प्रसिद्ध नदी के लुप्त होने के रहस्य की जानकारी हेतु गहन अध्ययन शुरू किया गया।

उपरोक्त के सन्दर्भ में, हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड (एच.एस.एच.डी.बी.) ने प्राचीन सरस्वती नदी पर भूवैज्ञानिक अध्ययन के लिए भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी.एस.आई.) से सहयोग की मांग की, जिसका उद्देश्य सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करना और इसके विरासत को विकसित एवं संरक्षित कर इसका प्रचार प्रसार करना है। हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड (एच. एस.एच.डी.बी.) के साथ इसके समझौता ज्ञापन के तहत लिए गए परियोजना के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हिमालय की तलहटी के हिस्सों, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा के जलोढ़ मैदानों, राजस्थान के वायूढ़ मैदानों और गुजरात में कच्छ के प्राचीन तटीय मैदानों में एकीकृत अध्ययन कार्य किया जा रहा है जिससे सरस्वती नदी प्रणाली के पुरा–क्रम का पुनर्निर्माण किया जा सके और कालस्तरिकी सहित

इसके पुराचैनल के उद्भव को भी स्थापित किया जा सके।

विभिन्न शिक्षाविदों/संस्थाओं द्वारा लैण्डसैट TM, MSS, AWIFS और सेंटिनल जैसे बहु कालिक और बहु सेंसर उपग्रह की सहायता से सरस्वती नदी प्रणाली की पुराचैनलों का सीमित क्षेत्र कार्य द्वारा पर्यवेक्षित मानचित्र तैयार किया गया है। उपग्रहीय इमेजरी के व्यापक अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन सरस्वती नदी प्रणाली के निम्न तीन प्रमुख पुराचैनल है (पश्चिम से पूर्व दिशा के क्रम में) :

1. घग्गर हाकरा पुराचैनल (सतलुज शाखा/GHP)
2. यमुनानगर कुरुक्षेत्र शतराना पुराचैनल (YKSP)
3. दृष्द्वती पुराचैनल ।

क्षेत्र कार्य के दौरान इन पुराचैनलों की पुष्टि अपेक्षाकृत निचले क्षेत्रों, तरंगीकृत न्यूनता, घनी वनस्पतियाँ उथली गहराई में अवसादी संरचनाओं के साथ अथवा इसके बिना बालू के स्तरों एवं पेय जल के उच्च निर्वहन क्षमता के आधार पर की गई। हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के कुछ क्षेत्रों जैसे कालीबंगन, शुतराना, कुरुक्षेत्र और यमुनानगर में पुराचैनलों की उपस्थिति जांचने के लिए भूभौतिकी अध्ययन किये जिन्होंने गहराई में चैनलों और रेतीली स्तरों की उपस्थिति की ओर इंगित किया। उपग्रहीय छायाचित्रों/DEM की सहायता से बनाये गए स्थलाकृति प्रोफाइलों में भी स्थलाकृति न्यूनता की ओर इंगित किय जोकि मानव नेत्री द्वारा दृष्टिगत होना संभव नहीं था।

चिन्हित किये गये पुराचैनलों के आसपास क्षेत्रकार्य के दौरान 173 शैल खण्डों का अध्ययन किया गया जिन्होंने भी पुराचैनलों की पुष्टि की है। कालानुक्रमिक अध्ययन हेतु चुनिंदा स्थानों (64 ओएसएल) से नमूने एकत्र किये गए जिससे सरस्वती पुरा नदी तंत्र निक्षेपित तलछटो के जमाव के समय का पता लगाया जा सके। स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) द्वारा क्वार्ट्ज़ कणों एवं भारी खनिजों का अध्ययन उद्भव के लिए किया गया एवं XRF एवं ग्रेन साइज का अध्ययन तलछटीय लक्षणों के निर्धारण हेतु किया गया।

उग्रहीय छायाचित्रों की विस्तृत व्याख्या और ओएसएल डेटा सहित सरस्वती नदी प्रणाली के

सभी प्रमुख पुराचैनलों से एकत्रित तलछट के शैल–खनिज–रसायनिक आंकडों के विश्लेषणात्मक परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि एक काल में सरस्वती नदी प्रणाली सक्रिय थी और इसमें सतलुज के साथ–साथ यमुना नदी से कम से कम 45 ka BP से 10 ka BP तक का हिमनदीय जल और श्रेष्ठ हिमालयी तलछट प्राप्त हो रही थी। यमुना–सतलुज दोआब मे पीडमोंट क्षेत्र और आउटर हिमालय से निकलने वाली कई वर्तमान अल्पकालिक नदियों में सरस्वती पुरा–नदीय प्रणाली की सहायक नदियाँ शामिल हैं, जिसमें वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण हैं घग्गर नदी, मार्कंडा नदी, बाटा नदी, सोम्ब नदी और उनकी सहायक नदियाँ। अल्पकालिक नदियों में उजागर शैल खण्डों के तलछटीय अध्ययनों से पता चलता है कि मानसून की प्रबल स्थिति के कारण अल्पकालिक नदियों में तलछट का भार और जल निर्वहन क्षमता वर्तमान की तुलना में पहले अधिक थी।

होलोसीन काल का शुरुआती दौर अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि उस दौरान सरस्वती के दोनों बारहमासी स्त्रोतों का स्थानांतरण हुआ था, अर्थात 13 ka BP के बाद यमुना नदी का पूर्व की और 10 ka BP के बाद सतलुज नदी का पश्चिम की ओर क्रमशः स्थानान्तरित होना। तत्पश्चात, वर्तमान में अल्पकालिक नदियों पुरा–घाटियों के एक विस्तृत भाग में बहने लगी और ये अब भी अनुपयुक्त धाराओं के रूप में बह रही हैं। सतलुज और यमुना नदियों के सरकने का कारण नव–विवर्तनिकी गतिविधियों और लेट प्लीइस्टोसिन एवं होलोसीन काल में हुए जलवायु परिवर्तन का समुचित प्रभाव है। एचएफटी के आधार भिति हिस्से के उत्तर दिशा की तरफ हुए धंसाव के कारण असंगत नति की रचना हुई जिससे रोपड़, पंजाब के पास सतलुज नदी के प्रवाह में परिवर्तन देखा गया। इसी भांति, हिमालय के तलहटी पर घटित नव–विवर्तनिक गतिविधियों और उप–सतह बेसमेंट रिज (दिल्ली–हरिद्वार रिज) और भ्रंशों (महेंद्रगढ़–देहरादून भ्रंशों) से संबंधित ढ़लान परिवर्तनों के समुचित प्रभाव के कारण यमुना नदी का प्रवाह क्रम भी पूर्व की ओर स्थानांतरित हुआ और यह गंगा नदी में जा मिली।

सरस्वती : प्राचीन कुरुक्षेत्र संक्षिप्त परिचय

प्राचीन समय की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी सरस्वती ने भारत की महान सभ्यता को परिभाषित किया है। यह वैदिक नदी हिमालय से निकल कर मैदानों क्षेत्रों में से होती हुई दक्षिण–पश्चिमी दिशा में वर्तमान में पंजाब, हरियाणा राजस्थान और गुजरात में से होते हुए अरब सागर में जो मिलती थी। इसे उस समय की नदियों में से सर्वोच्च माना जाता है।

शिवालिक में आदि बद्री से लेकर भटनेर रेगिस्तान तक सरस्वती और दृषद्वती नदियों के किनारों पर अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के पुरावात्विक स्थल है। जिसमें से सौ स्थल हड़प्पा सभ्यता से पूर्व, पचास से अधिक स्थल विकसित हड़प्पा काल और लगभग तीन विद्यमान स्थल उत्तर–हड़प्पा काल से सम्बन्धित है। अधिकतर स्थल सरस्वती और इसकी सहायक नदियों के किनारे स्थित है।

उपरोक्त पुरातात्विक स्थलों से अलग आदि बद्री से सिरसा तक सरस्वती नदी और इसकी सहायक नदियों पर कई अन्य तीर्थस्थल स्थित है जिनका उल्लेख महाभारत कालीन एवं अनेक पुराणों में मिलता है। कुरुक्षेत्र और पिहोवा में स्थित तीर्थों में अब भी प्रत्येक वर्ष हजारों तीर्थ यात्री आते है। पिहोवा में सरस्वती तीर्थ को पंजाब और उत्तर पश्चिमी भारत के तीर्थ यात्रियों द्वारा गया (बिहार) के समकक्ष माना जाता है। पुरातन काल से सरस्वती के तट पर स्थित कुरुक्षेत्र के तीर्थस्थल की यात्रा ने कुरुक्षेत्र को विश्व में प्राचीनतम स्थल बनाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। इसी कारण कुरुक्षेत्र को महाभारत में सर्वोच्च तीर्थ भी कहा गया है।

महाभारत युद्ध के समय श्रीकृष्ण के बड़े भ्राता बलराम ने सरस्वती नदी पर स्थित तीर्थस्थलों की यात्रा की। महाभारत के अनुसार कुरु वंश का आधिपत्य सरस्वती नदी घाटी के ऊपरी भाग और यादवों का निचले व तटीय क्षेत्र में था। सरस्वती और दृषद्वती के मध्य क्षेत्र को महाभारत और मनुस्मृति में ब्रह्मावर्त भी कहा गया है।

सरस्वती तट पर पिहोवा में स्थित पृथदक तीर्थ श्राद्धकर्म के लिए विख्यात है। पाण्डवों के वंशज असीम कृष्ण ने सरस्वती तट पर एक दीर्घकालीन सत्र–यज्ञ भी किया था।

सरस्वती तीर्थ, पिहोवा (कुरुक्षेत्र) के समीप गरीबनाथ डेरा में स्थापित
प्रतिहार राजा मिहिर भोज (८३६–८९० ई०) के समय का शिलालेख (८८२ ई०)

सरस्वती बोर्ड द्वारा तैयार कॉफी टेबल बुक **"सरस्वती सिन्धु सभ्यता"** का
माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा विमोचन किया गया।

जब त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री व राज्यसभा सदस्य श्री विप्लब देव जी को सरस्वती नदी के बारे में पता चला तो वह खुद देखने यमुनानगर पहुँचे।

त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सदस्य प्रदेश प्रभारी हरियाणा श्री विप्लब देव जी ने पंचकूला-यमुनानगर हाईवे पर सरस्वती नदी क्षेत्र का दौरा किया। विप्लब देव जी ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए पूर्ण प्रयासरत हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने वर्ष 2015 में ''**हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड**'' का गठन किया, जो देश के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए एक अनुठी मिशाल है। सरस्वती नदी करोड़ो लोगों की आस्था का केंद्र है। इस श्रद्धा एवम् भावना को समझते हुए पूर्व मुख्यमंत्री जी ने इस बोर्ड का गठन किया है। श्री धुमन सिंह किरमच, डिप्टी चेयरमैन को बोर्ड की कमान सौपी गई है। हमारे शास्त्रों के अनुसार यमुना, गंगा और सरस्वती नदी आदिकाल से ही तीन बड़ी नदियों में गिनी जाती है एवम् ऋग्वेद में सरस्वती नदी का 77 बार वर्णन किया गया है जोकि सरस्वती नदी के महान नदी होने का प्रमाण है। जिससे लोगों के मन में इस नदी के प्रति और भी गहरी श्रद्धा व आस्था है।

सूर्य ग्रहण के अवसर पर सरस्वती नदी, पिहोवा में प्राची तीर्थ पर स्नान करते श्रद्धालु

पिपली ब्लॉक के कौलापुर गाँव में सरस्वती नदी के किनारे बना थ्री पौंड सिस्टम जिससे गाँव का पानी गुजरता है और साफ होने के बाद तीन एकड़ में बने सरोवर में जाता है। सरोवर से यह पानी साफ होकर सरस्वती नदी में जाता है जिससे करोड़ों लीटर पानी रिचार्ज होगा। इस साईट पर सिंचाई मंत्री श्री अभय सिंह यादव जी ने भी दौरा किया और सरस्वती बोर्ड के इस कार्य की प्रसंशा की।

लाड़वा ब्लॉक के 75 गांव के सरपंचों ने इस सिस्टम को देख कर अपने गाँव में लगाने का वायदा किया। गाँव के सरपंच बलजींद्र सिंह के साथ मिलकर तैयार किया।